व्याकरण वृक्ष ४

शिक्षक-दर्शिका

Harbour Press®
INTERNATIONAL

भाषा, बोली, लिपि तथा व्याकरण

पाठ योजनाः 1

आज की अवधारणा

छात्रों को भाषा के बारे में बताना-भाषा की उपयोगिता, भाषा का लिखित रूप और मौखिक रूप। हिंदी भाषा की विशेषताओं, बोलियों एवं उपभाषाओं तथा लिपि के बारे में बताना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

इससे पहले बच्चों को भाषा के बारे में व्यावहारिक जानकारी के साथ व्याकरण का भी प्रारंभिक परिचय कराया जा चुका है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में भाषा संबंधी नियमों के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे-

- मौखिक एवं लिखित भाषा के बारे में अवगत होने में,
- हिंदी भाषा की विशेषताओं, उसकी बोलियों और उसकी लिपि के बारे में आधारभूत ज्ञान प्राप्त करने में,
- देवनागरी लिपि के मानक स्वरूप के बारे में अवगत होने में,
- भारतीय संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन–पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि भाषा की जीवन में कितनी उपयोगिता है,
- छात्रों को लिखित और मौखिक भाषा की अलग-अलग उपयोगिताओं को समझाना,
- छात्रों को हिंदी की विशेषताओं और उसके महत्व के बारे में अवगत कराना।
- छात्रों को भारतीय संविधान में मान्यता प्राप्त भाषाओं के बारे में जानकारी देना,
- भाषा के मानक रूप के बारे में जानकारी प्रदान करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना और उनमें हिंदी को राष्ट्रीय स्वाभिमान के साथ जोड़ने का भाव उत्पन्न करना।

गतिविधियाँ

- छात्रों को दो भागों में विभक्त करके शब्द अंत्याक्षरी जैसी गतिविधियाँ करवाएँ।
- छात्रों को अपने आस-पास होने वाली बातचीत को सजगता के साथ सुनने के लिए कहें। उन्हें अशिक्षित और अल्प-शिक्षित व्यक्तियों की भाषा और शिक्षित व्यक्तियों की भाषा और उच्चारण के अंतर पर ध्यान देने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध बाल-साहित्य संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर उपलब्ध हिंदी भाषा-शिक्षण संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाएँ।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः** पाँच मिनट	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ हमारी राजभाषा के बारे में महत्वपूर्ण सैद्धांतिक जानकारी के साथ होगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को भाषा के संबंध में बताना। उनमें विभिन्न भाषाओं को जानने की उत्सुकता जागृत करते हुए शुद्ध लेखन व वाचन के लिए प्रेरित करना।	• छात्रों को भाषा के बारे में बताते हुए उसके लिखित व मौखिक रूपों के बारे में जानकारी दें। • वैश्विक संदर्भ में भारत के बहुभाषी स्वरूप को बताते हुए हिंदी के महत्व और उसके राजभाषा होने की स्थिति के बारे में बताएँ। भाषा के विभिन्न अंगों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दें। • भारतीय संविधान में मान्यता प्राप्त भाषाओं की जानकारी देते हुए हिंदी भाषा के मानक स्वरूप को स्पष्ट करें। • हिंदी भाषा की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बोलियों, उपभाषाओं के बारे में छात्रों को अवगत कराएँ। • लिपि के बारे में जानकारी देते हुए व्याकरण को परिभाषित करें और उसके मुख्य अंगों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. व्याकरण के तीन प्रमुख अंगों के अंतर्गत हमें किस चीज़ का ज्ञान होता है?

....

....

ख. पूर्वी हिंदी तथा राजस्थानी उपभाषाओं के अंतर्गत आने वाली बोलियाँ कौन-सी हैं? लिखिए।

....

....

....

ग. हिंदी भाषा की किन्हीं चार उपलब्धियों को बताइए।

....

....

घ. मौखिक तथा लिखित भाषा में कोई दो अंतर बताइए।

....

....

ङ. लिखित भाषा के महत्व को बताइए।

....

....

2. भारत तथा विश्व में बोली जाने वाली पाँच-पाँच भाषाओं को लिखिए।

	भारत की भाषाएँ	विश्व की भाषाएँ
क.	....	....
ख.	....	....
ग.	....	....
घ.	....	....
ङ.	....	....

3. भाषा के निम्नलिखित अमानक रूपों को मानक रूपों में परिवर्तित कीजिए-

क.	सिद्धांत –	______	ख.	विद्यार्थी –	______
ग.	जायेंगे –	______	घ.	अद्यतन –	______
ङ.	शुद्ध –	______	च.	विद्वान –	______

छ. ठण्ड – ____________

4. **दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

क. संपूर्ण विश्व में .... भाषा में सर्वाधिक फिल्में बनाई जाती हैं।

ख. भाषा के जिस रूप को शिक्षित जनों द्वारा प्रयुक्त व विद्वानों द्वारा स्वीकृत किया जाता है, उसे भाषा का रूप .... कहते हैं।

ग. ध्वनि के निर्धारित चिह्न .... कहलाते हैं।

घ. भाषा की व्युत्पत्ति .... धातु से हुई है।

ङ. .... भाषा में ध्वनि-चिह्नों द्वारा बात को लिखकर प्रकट किया जाता है।

च. तत्सम शब्दों के तद्भव होने पर .... का लोप हो जाता है।

5. **निम्नलिखित वाक्यों में सही (✓) या गलत (×) का चिह्न लगाइए-**

क. हिंदी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है। ☐

ख. कुमाऊँनी, राजस्थानी उपभाषा की बोली है। ☐

ग. भारत में सर्वाधिक पत्र-पत्रिकाएँ व पाठक अंग्रेज़ी भाषा के हैं। ☐

घ. बोली उपभाषा की अपेक्षा विस्तृत होती है। ☐

ङ. हिंदी चीन देश की राजभाषा है। ☐

च. लिखित भाषा सहज रूप से सीखी जाती है। ☐

छ. छत्तीसगढ़ी, पूर्वी हिंदी की बोली है। ☐

6. **निम्नलिखित भाषाओं की लिपि बताइए-**

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
क. उर्दू –	____________	2. अंग्रेज़ी –	____________
ख. बांग्ला –	____________	4. पंजाबी –	____________
ग. मलयालम –	____________	6. मराठी –	____________
घ. संस्कृत –	____________	8. तमिल –	____________

7. **दी गई उपभाषाओं के समक्ष उनकी दो-दो बोलियाँ लिखिए।**

उपभाषा	बोलियाँ	
क. राजस्थानी	....	....
ख. पहाड़ी	....	....
ग. बिहारी	....	....
घ. पश्चिमी हिंदी	....	....
ङ. पूर्वी हिंदी	....	....

वर्ण-विचार

पाठ योजना: 2

आज की अवधारणा

छात्रों को वर्ण व वर्णमाला के बारे में बताकर वर्ण-भेद के बारे में बताना। स्वरों की मात्राओं से परिचित कराकर स्वर व व्यंजन के भेदों से अवगत कराना तथा उच्चारण संबंधी अशद्धियों को समझाना। उन्हें वर्णों का उच्चारण स्थान तथा वर्ण-विच्छेद भी बताना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है, जिनके और खंड नहीं किए जा सकते लेकिन इन्हें जोड़कर शब्द ज़रूर बनाए जा सकते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- वर्ण तथा अक्षर में अंतर समझने में,
- हिंदी के मानक व अमानक रूपों को जानने में,
- स्वर, व्यंजन व अयोगवाह को जानने में,
- वर्णों का उच्चारण-स्थल बताने में,
- उच्चारण व लेखन संबंधी अशुद्धियों को पहचानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को वर्णमाला व वर्ण के भेदों को समझाना।
- स्वर व व्यंजन के भेदों से परिचित कराना।
- स्वरों की मात्राओं के बारे में बताना तथा वर्णों के उच्चारण स्थल को स्पष्ट करना।
- संयुक्त व्यंजन व द्वित्व व्यंजन के बीच अंतर समझाना।
- अनुस्वार, अनुनासिक व विसर्ग को समझाना।
- 'प्रयत्न' व 'बलाघात' के बारे में बताना तथा विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों को बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'वर्ण-विचार' विषय के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

कक्षा में जिन बच्चों के नाम संयुक्त व्यंजन से शुरू होते हैं या जिनके नाम में द्वित्व व्यंजन आता है, छात्रों को ऐसे नामों की सूची बनाकर लाने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में 'वर्ण–विचार' संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर वर्णों के उच्चारण–स्थान संबंधी जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में स्वर व व्यंजन के भेदों की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'वर्ण-विचार' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को वर्ण–विचार के संबंध में बताना तथा स्वर व व्यंजन, वर्णों के उच्चारण स्थान, वर्ण–विच्छेद व उच्चारण व लेखन संबंधी अशुद्धियों के बारे में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, मौखिक भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों को जिन लेखन–चिह्नों द्वारा प्रकट किया जाता है, उन्हें वर्ण कहते हैं। वहीं किसी भी भाषा में प्रयुक्त होने वाले वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। • उन्हें स्वर व व्यंजन के बारे में समझाकर हिंदी वर्णों के अमानक व मानक रूप से परिचित कराएँ। फिर वर्ण-भेद के बारे में बताएँ कि उच्चारण की दृष्टि से हिंदी वर्णमाला के वर्णों को तीन भागों में विभाजित किया गया है– स्वर, व्यंजन, अयोगवाह। • स्वर की परिभाषा समझाकर उन्हें बताएँ कि हिंदी में स्वरों की संख्या 11 है। इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप में होता है। इनके उच्चारण में श्वास–वायु मुख के किसी भी भाग से टकराए बिना सीधी बाहर निकलती है। स्वर के तीन भेद हैं– ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर, प्लुत स्वर। • तीनों भेदों को स्पष्ट करने के बाद छात्रों को स्वरों के प्रयोग के बारे में बताएँ, जो कि स्वतंत्र व मात्रा रूप में किया जाता है।

	• उन्हें बताएँ कि 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती है। यह सभी व्यंजनों में मिला होता है। यदि व्यंजन 'अ' रहित लिखना हो, तो उसके नीचे हल (तिरछी रेखा) खींची जाती है। 'र' के साथ 'उ' की मात्रा लगने पर 'रु' तथा ऊ की मात्रा लगने पर 'रू' बनता है। ध्यान रखें 'श' के साथ 'ऋ' की मात्रा जुड़ने पर 'शृ' बनता है जैसे–शृंगार। अब जानें 'अं' तथा 'अः' अयोगवाह हैं तथा 'ऑ' आगत ध्वनि है। मात्रा चिह्न होने के कारण इन्हें ऊपर रखा गया है। • अब व्यंजन को परिभाषित कर बताएँ कि इनका उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना नहीं हो सकता। क् से ह् तक इनकी संख्या 33 है। संयुक्त व्यंजन तथा आगत (ड़, ढ़) मिलाकर इनकी संख्या 39 हो जाती है। • व्यंजन के मुख्य रूप से तीन भेद हैं– स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन, ऊष्म व्यंजन। इन तीनों भेदों को विस्तारपूर्वक छात्रों को समझाएँ तथा संयुक्त व्यजं न, द्वित्व व्यंजन के बारे में बताएँ। • फिर अयोगवाह के बारे में बताएँ कि इन्हें न तो स्वर कहा जा सकता है और न ही व्यंजन। इसके बाद उन्हें चित्र द्वारा वर्णो के उच्चारण-स्थान का ज्ञान कराएँ। • किसी भी शब्द में आने वाले वर्णों को पृथक-पृथक करके लिखने की प्रकिया वर्ण-विच्छेद कहलाती है। इसे उदाहरण सहित स्पष्ट करके कुछ शब्दों का वर्ण-विच्छेद करके लाने को कहें। • अंततः उन्हें प्रयत्न और बलाघात के बारे में बताएँ कि ध्वनियों का उच्चारण करते समय श्वास और जिह्वा द्वारा जो यत्न किए जाते हैं, उसे 'प्रयत्न' कहते हैं। प्रयत्न को स्वर-तंत्रियों में कंपन के आधार पर तथा श्वास के आधार पर बाँटा जाता है। • सघोष और अघोष, स्वर-तंत्री में कंपन के आधार पर प्रयत्न के दो भेद हैं, तथा अल्पप्राण और महाप्राण, श्वास के आधार पर प्रयत्न के दो भेद हैं। • अब जानें किसी शब्द को बोलते समय उसका आशय स्पष्ट करने के लिए अक्षर के उच्चारण पर बल दिया जाता है, उसे 'बलघात कहते हैं। उन्हें बलाघात समझाकर उच्चारण संबंधी अशुद्धियों से अवगत कराएँ।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. अंत:स्थ व्यंजन किन्हें कहते हैं तथा कौन-से व्यंजन अंत:स्थ व्यंजन हैं?

....

....

....

ख. तालव्य वर्ण से आप क्या समझते हैं? किन्हीं पाँच तालव्य वर्णों को लिखिए।

....

....

....

ग. ओष्ठ्य तथा दंतोष्ठ्य वर्णों में क्या अंतर है?

....

....

....

घ. स्वरतंत्रियों में कंपन के आधार पर सघोष तथा अघोष ध्वनियों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

ङ. श्वास के आधार पर अल्पप्राण तथा महाप्राण वर्णों में अंतर बताइए।

....

....

....

च. बलाघात को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

2. **दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

क. जिनके उच्चारण में वायु नासिका तथा मुख, दोनों से निकलती है, उन्हें .... कहते हैं।

ख. 'कच्चा' तथा 'उन्नति' .... व्यंजन के उदाहरण हैं।

ग. ऊष्म का अर्थ .... होता है।

घ. विसर्ग ध्वनि का उच्चारण .... ध्वनि के समान होता है।

ङ. स्पर्श, अंत:स्थ तथा ऊष्म .... के प्रकार हैं।

च. क् से ह् तक के वर्णों की संख्या .... है।

छ. 'ऑ' .... ध्वनि है।

ज. 'शृंगार' शब्द में 'श' .... पर की मात्रा लगी है।

3. **निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए-**

क. वेशभूषा – ....

ख. आवश्यकता – ....

ग. अंकित – ....

घ. मानचित्र – ....

ङ. अधिकतर – ....

च. व्याकरण – ....

4. **निम्नलिखित वर्णों में से अल्पप्राण तथा महाप्राण वर्णों को छाँटकर लिखें-**

क्ष क त फ स न द भ च ज ञ ट ड ण त्र व थ क्ष म

अल्पप्राण – ....

महाप्राण – ....

5. **संयुक्त व्यंजनों से निर्मित कोई छह शब्द लिखिए।**

क. ____________ ख. ____________ ग. ____________

घ. ____________ ङ. ____________ च. ____________

6. **निम्नलिखित वर्णों को मिलाकर शब्द बनाइए-**

क. व् + इ + प् + अ + र् + ई + त + आ + र् + थ् + अ + क् + अ – ____________

ख. प् + अ + र् + इ + व् + अ + र् + त् + न् + अ – ____________

ग. ग् + अ + ज् + आ + न् + अ + न् + अ – ____________

घ. व् + इ + क् + आ + र् + अ – ____________

ङ. न् + आ + र् + ई + श् + व् + अ + र् + अ – ________________

7. निम्नलिखित वाक्यों में से सही कथन के सामने सही (✓) तथा गलत कथन के सामने गलत (×) का निशान लगाएँ–

क. प्राण से आशय श्वास वायु से है। ☐

ख. अघोष व्यंजनों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन उत्पन्न होता है। ☐

ग. य्, र्, ल्, व् व्यंजन स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। ☐

घ. व्यंजनों का उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना किया जाता है। ☐

ङ. दीर्घ स्वरों में ह्रस्व से दोगुना समय लगता है। ☐

च. 'ओ३म' शब्द प्लुत स्वर का उदाहरण है। ☐

संधि

पाठ योजनाः 3

आज की अवधारणा

छात्रों को संधि के बारे में बताना तथा संधि-विच्छेद समझाना। संधि के भेदों को बताकर उनके बीच अंतर स्पष्ट करना। स्वर संधि के भेदों से परिचित कराना तथा व्यंजन व विसर्ग संधि के नियमों को समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि दो शब्द या शब्दांश जब परस्पर मिलते हैं, तो उनके मिलने से स्वर तथा व्यंजन में जो परिवर्तन आता है, उसे संधि कहते हैं। वे संधि-विच्छेद तथा संधि के भेदों के नाम से भी परिचित हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- संधि के बारे में सोचने और विचार करने में,
- शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर संधि का भेद पहचानने में,
- संधि युक्त शब्दों का संधि-विच्छेद करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में संधि व संधि विच्छेद की उपयोगिता समझाना।
- संधि के भेदों से परिचित कराकर उनके बीच अंतर बताना।
- स्वर संधि के सभी भेदों को समझाना तथा व्यंजन व विसर्ग संधि के नियम समझना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'संधि' विषय के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

दिए गए वाक्यों में जिन-जिन शब्दों में संधि हो सकती है, छात्रों को अपनी कार्य-पुस्तिका में उनकी संधि करके यह अनुच्छेद दुबारा लिखकर लाने को कहिए–

गुरू जी सूर्य अस्त से पहले विद्या आलय के मैदान में आए और सभी छात्रों से बोले, "जल्दी से छात्र आवास में जाकर आराम कर लो। थोड़ी देर में वार्षिक उत्सव की तैयारी करनी है। प्रति एक को इस उत्सव में अहम भूमिका निभानी है।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में 'संधि' संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर संधि–विच्छेद संबंधी जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में संधि के भेदों की जानकारी देते चार्ट पेपर

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'संधि' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को संधि के संबंध में बताना तथा भेदों के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, संधि शब्द का अर्थ होता है– जोड़, मेल आदि। दो निकटस्थ ध्वनियों के परस्पर मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं। • उन्हें बताएँ संधि सदैव दो शब्दों के नहीं बल्कि दो वर्णों के बीच होती है। संधि करते समय ध्वनियों में परिवर्तन आता है। ध्यान रखें कि यह परिवर्तन पहली ध्वनि में भी हो सकता है और दूसरी ध्वनी में भी या दोनों में भी हो सकता है। • अब संधि–विच्छेद के बारे में जानें कि इसका अर्थ 'अलग करना' होता है। संधिस्थ वर्णों को पुनः पूर्वावस्था में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है। • संधि के तीन भेद होते हैं– स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि। दो स्वरों के परास्परिक मेल से उत्पन्न विकार स्वर संधि कहलाता है। इसके पाँच भेद हैं– दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि, अयादि संधि। • स्वर संधि के सभी भेदों को उदाहरण सहित परिभषित करने के बाद प्रत्येक भेद से संबंधित चार–चार उदाहरण परिभाषा सहित लिखकर लाने को कहें।

	• उसके बाद छात्रों को व्यंजन संधि व विसर्ग संधि के बारे में बताएँ कि व्यंजन का व्यंजन या किसी स्वर के समीप होने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं, तथा विसर्ग (:) का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर विसर्ग में जो परिवर्तन आता है, उसे विसर्ग संधि कहते है। उन्हें व्यंजन व विसर्ग संधि के सभी नियमों को श्यामपट्ट पर विस्तारपूर्वक समझाएँ। • अंततः उन्हें अलग–अलग संधि करके शब्द लिखवाएँ तथा उनके आगे उसका भेद लिखकर लाने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. स्वर संधि को परिभाषित करते हुए इसके भेदों के नाम बताइए।

....

....

ख. वृद्धि तथा अयादि संधियों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

....

....

ग. विसर्ग संधि को परिभाषित करते हुए इसके पाँच उदाहरण दीजिए।

....

....

घ. संधि–विच्छेद किसे कहते हैं?

....

....

2. निम्नलिखित शब्दों को स्वर संधि के भेदों के अनुसार अलग–अलग करके लिखिए-

नाविक	तथैव	सर्वोच्च	अत्यावश्यक	कवीश्वर	महौज
पुस्तकालय	वधूत्सव	महेश	स्वेच्छा	स्वागत	

क. दीर्घ संधि – ....

ख. गुण संधि – ....

ग. वृद्धि संधि – ....

घ. यण संधि – ....

ङ. अयादि संधि – ....

3. स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि के चार-चार उदाहरण लिखिए।

स्वर संधि	**व्यंजन संधि**	**विसर्ग संधि**
क.	क.	क. ....
ख.	ख.	ख. ....
ग.	ग.	ग. ....
घ.	घ.	घ. ....

4. निम्नलिखित संधि-विच्छेदों की संधि कीजिए-

क. धनु + टंकार – __________ ख. तत् + भव – __________

ग. भो + अन – __________ घ. मातृ + आदेश – __________

ङ. देवी + अर्पण – __________ च. सखी + आगमन – __________

छ. रमा + इंद्र – __________ ज. विद्या + उत्तमा – __________

झ. दंत + ओष्ठ – __________

5. संधि शब्दों का विच्छेद कीजिए।

1. निर्यात = ... + ... 2. दुश्चरित्र = ... + ...
3. उज्ज्वल = ... + ... 4. उच्छिष्ट = ... + ...
5. निष्कलंक = ... + ... 6. वाङ्मय = ... + ...
7. आच्छादन = ... + ... 8. वाग्जाल = ... + ...

6. निम्नलिखित शब्दों की संधि करके नए शब्द बनाइए-

1. ऋषि → राज ....
   ऋषि → महा ....
   ऋषि → देव ....
   ऋषि → सप्त ....

2. इंद्र → वीर ....
   इंद्र → धर्म ....
   इंद्र → राज ....
   इंद्र → ज्ञान ....

वर्तनी–व्यवस्था

पाठ योजनाः 4

आज की अवधारणा

छात्रों को वर्तनी का अर्थ स्पष्ट करते हुए मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ, व्यंजन संबंधी अशुद्धियाँ तथा संयुक्ताक्षर संबंधी अशुद्धियों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र इस बात से भली–भाँति परिचित हैं कि जब वर्णों को शुद्ध रूप से लिखा जाएगा तभी वर्तनी शुद्ध होगी।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को जानने में,
- शुद्ध उच्चारण करने में,
- वर्तनी की शुद्धता की ओर ध्यान देकर शुद्ध लेखन करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन–पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को शुद्ध वाचन एवं लेखन हेतु प्रेरित करना।
- शब्दों के शुद्ध रूप को मस्तिष्क में बैठाकर, उसे आवश्यकता पड़ने पर यांत्रिक रूप से प्रयोग करना।
- छात्र विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों पर ध्यान देते हुए शुद्ध शब्दों की पहचान की योग्यता विकसित कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में वर्तनी–व्यवस्था के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करते हुए उन्हें शुद्ध वाचन एवं लेखन की दिशा में अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को मात्रा, व्यंजन तथा संयुक्ताक्षर संबंधी अशुद्धियों वाले कुछ शब्द श्रुतलेख के तौर पर बोलें तथा छात्र उन्हें अपनी कार्य–पुस्तिका में लिखें। सभी शब्द बोलने के पश्चात् अध्यापक उनके शुद्ध रूपों को श्यामपट्ट पर लिखें तथा छात्रों को एक–दूसरे के साथ अपनी कार्य–पुस्तिकाओं को बदलते हुए अपने–अपने सहपाठी के लिखे गए शब्दों को जाँचने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में वर्तनी संबंधी व्याकरणिक पुस्तकें।
- यूट्यूब पर शुद्ध उच्चारण एवं वर्तनी संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- मात्रा, व्यंजन तथा संयुक्ताक्षर संबंधी शब्दों के शुद्ध रूप को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'वर्तनी-व्यवस्था' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को वर्तनी का ज्ञान कराना तथा शुद्ध उच्चारण एवं लेखन हेतु प्रेरित करना।	• छात्रों को बताना कि हम अपने विचारों का आदान-प्रदान दो प्रकार से करते हैं-बोलकर व लिखकर। बोलने के लिए हम अपने मुख से निकली ध्वनियों का प्रयोग करते हैं और लिखने के लिए लिपि का। उच्चारित शब्द के लेखन में प्रयुक्त लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को वर्तनी कहते हैं। • उन्हें बताएँ कि आप शब्दों का जैसा उच्चारण करेंगे, उसी प्रकार से आपका लेखन भी होगा। अत: आवश्यक है कि शब्दों का शुद्ध उच्चारण किया जाए, ताकि हम वाक्य-शुद्धि करते हुए शुद्ध रूप से भाषा का प्रयोग कर सके। • यह भी स्पष्ट करें कि शुद्ध उच्चारण न करने के कारण वर्तनी की अशुद्धियाँ हो जाती हैं। शब्दों में ध्वनियों की निश्चित व्यवस्था होती है। इसी निश्चित व्यवस्था के अनुसार वर्णों को लिखने से वर्तनी की अशुद्धियाँ नहीं होंगी। • उन्हें इस बात से भी अवगत कराएँ कि कुछ शब्दों को लिखते समय हम यांत्रिक रूप से अशुद्ध लिखते चले जाते हैं। किसी शब्द की वर्तनी मस्तिष्क में बैठ जाने पर, बिना सोचे-समझे उसे उसी रूप में लिखना यांत्रिक कहलाता है। जब तक वर्तनी की उस अशुद्धता की ओर कोई हमारा ध्यान आकर्षित न करे, तब तक हम उसके शुद्ध रूप को नहीं जान सकते।

	• छात्रों को पाठ से मात्रा-संबंधी, व्यंजन संबंधी तथा संयुक्ताक्षर संबंधी शब्दों के शुद्ध रूप का वाचन कराएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ।

क. लिखने के लिए किसका प्रयोग किया जाता है?

अ. लिपि ब. संज्ञा स. सर्वनाम

ख. भाषा के मौखिक रूप को कौन सुरक्षित रखता है?

अ. वाचिक रूप ब. लिखित रूप स. सांकेतिक रूप

ग. 'क्रिपण' का शुद्ध रूप क्या है?

अ. कीर्पण ब. क्रीपण स. कृपण

घ. उच्चारित शब्द के लेखन में प्रयुक्त लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को क्या कहते हैं?

अ. अशुद्धि ब. वर्तनी स. व्यवस्था

2. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए–

क. विधालय – ______ ख. आर्शीवाद – ______

ग. उजज्वल – ______ घ. स्वस्थय – ______

ङ. आडंम्बर – ______ च. उन्नती – ______

छ. प्राथर्ना – ______ ज. गतीविधी – ______

झ. पथप्रदशर्क – ______ ञ. परसिद्ध – ______

3. अशुद्ध शब्दों को ठीक करके वाक्य पुनः लिखिए।

क. सभी भीखारी का मज़ाक बना रहे थे।

______

ख. दूर्घटना-स्थल पर भारी भीड़ जमा थी।

______

ग. मुझे आजिवन तुम्हारे साथ रहना है।

______

घ. अद्धापिका कक्षा में पढ़ा रही हैं।

ङ. हमें बूजूर्गो की इज्ज़त करनी चाहिए।

च. परीश्रम करने पर सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

4. अशुद्ध शब्दों को शुद्ध करके अनुच्छेद को दोबारा लिखिए।

डॉ. कलाम दृढ़ इच्छाशक्ती वाले व्यक्ति थे। वे भारत को वीकसित देश बनाने का सपना देखते थे। उनका मानना था कि भारतवासियों को व्यापक द्रष्टि से सोचना चाहिए। हमें सपने देखने चाहिए। सपनों को वीचारों में बदलना चाहिए। वीचारों को कार्यवाहि के माध्यम से हकिकत में बदलना चाहिए। डॉ. कलाम को 'भारत-रत्न', 'पद्माभूषण' तथा पद्माविभुषण आदि सम्मानों से सम्मानित किया गया।

....

....

....

....

....

....

5. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप के समक्ष सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	अंतराष्ट्रिय	☐	अंतर्राष्ट्रीय	☐	अंर्तराष्ट्रीय	☐	अंर्तंराष्ट्रीय	☐
ख.	नारज	☐	नराज़	☐	नाराज़	☐	नराज़ा	☐
ग.	अतीथी	☐	अतिथि	☐	अतीथि	☐	अतिथी	☐
घ.	बावाजूद	☐	वाबजूद	☐	वाबजुद	☐	बावजूद	☐
ङ.	र्शीषक	☐	शीषर्क	☐	शीषक	☐	शीर्षक	☐
च.	उपालब्धियाँ	☐	उपलब्धियाँ	☐	उपलब्धिया	☐	उपलाब्धयाँ	☐

शब्द-विचार

पाठ योजनाः 5

आज की अवधारणा

छात्रों को शब्दों के विभिन्न आधारों पर किए गए वर्गीकरण (स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर, रचना/बनावट के आधार पर प्रयोग के आधार अर्थ के आधार पर तथा व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर) से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को इस बात जानकारी है कि वर्णों को जोड़कर शब्दों का निर्माण होता है तथा शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तो वे पद कहलाते हैं। इस प्रकार भाषा का निर्माण होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों के शब्द-भंडार में वृद्धि होगी तथा वे निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- शब्दों का वर्गीकरण किन-किन आधारों पर किया जाता है?
- स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के कितने भेद हैं तथा वे कौन-कौन से हैं?
- रचना/बनावट के आधार पर शब्दों को कौन-कौन से भागों में बाँटा गया है?
- सामान्य तथा तकनीकी शब्द किस आधार पर विभाजित हैं?
- विकारी तथा अविकारी के अंतर्गत किन-किन शब्दों को रखा गया है?

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को शब्दों की महत्ता से अवगत कराना।
- विभिन्न आधारों पर किए गए शब्दों के मध्य के अंतर की समझ विकसित करना।
- शब्दों के आधारों की पहचान करने की योग्यता का विकास करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अलग-अलग शब्दों को जानने की रुचि उत्पन्न करते हुए अपनी औपचारिक बातचीत के दौरान इन शब्दों को प्रयोग में लाने हेतु उन्हें प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं में से प्रत्येक आधार पर किए गए विभिन्न भेदों से संबंधित पाँच-पाँच शब्द ढूँढकर लिखिए।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-विचार संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर विभिन्न शब्दों के आधारों से संबंधित वीडियो क्लिप्स।
- शब्दों के वर्गीकरण की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'शब्द-विचार' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को शब्दों के वर्गीकरण के आधारों की जानकारी देते हुए उनमें विभिन्न भेदों से बने शब्दों की पहचान करने की योग्यता उत्पन्न करना।	• छात्रों को शब्द की परिभाषा देते हुए यह बताना कि शब्दों का वर्गीकरण पाँच भागों में किया जाता है– स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर, रचना/बनावट के आधार पर, प्रयोग के आधार पर, अर्थ के आधार पर तथा व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर। • उन्हें बताएँ स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के पाँच भेद हैं– तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी तथा संकर शब्द। सभी भेदों को एक–एक करके समझाएँ। • रचना/बनावट के आधार पर शब्दों के तीन प्रकार हैं– रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़। तीनों को उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • प्रयोग के आधार पर शब्दों को सामान्य तथा तकनीकी शब्दों में वर्गीकृत किया गया है। • वहीं अर्थ के आधार पर शब्दों के कई भेद हैं जैसे– पर्यायवाची, अनेकार्थक, समरूप भिन्नार्थक, शब्द-युग्म, विविध शब्द, विलोम शब्द, एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द, वाक्यांश के लिए एक शब्द तथा समूहवाची एवं ध्वनिबोधक शब्द आदि। • अंततः उन्हें बताएँ कि व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्दों को दो भागों में बाँटा गया है– विकारी तथा अविकारी शब्द।

	• विकारी शब्दों के चार भेद हैं– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया। वहीं अविकारी शब्द भी चार प्रकार के होते हैं– क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्यमयादिबोधक।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. तत्सम तथा तद्‌भव शब्दों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

ख. रचना अथवा बनावट के आधार पर शब्द के तीनों प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

ग. सामान्य शब्दों तथा तकनीकी शब्दों में क्या भिन्नता है? दोनों के तीन-तीन उदाहरण दीजिए।

....

....

....

घ. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्दों के भेदों के नाम लिखिए।

....

....

2. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्‌भव रूप लिखिए–

क. चंद्रिका – ________ ङ. छिद्र – ________

ख. अश्रु – ________ च. कुंभकार – ________

ग. तृण – ________ छ. काक – ________

घ. दुर्बल – ________ ज. क्षीर – ________

3. निम्नलिखित शब्द किस-किस भाषा के शब्दों के मेल से बने हैं-

क. घड़ीसाज = ... + ...   ख. अख़बारवाला = ... + ...

ग. मोटरगाड़ी = ... + ...   घ. वर्षगाँठ = ... + ...

ङ. तहसीलदार = ... + ...   च. लाठीचार्ज = ... + ...

4. उचित शब्दों का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

क. जब रूढ़ शब्द में कोई अन्य सार्थक शब्द या शब्द खंड जुड़ जाता है तो वे शब्द .... शब्द कहलाते हैं।

ख. कारतूस शब्द .... भाषा का शब्द है।

ग. भाषा में प्रयोग के आधार पर शब्दों को .... भागों में बाँटा गया है।

घ. अविकारी शब्द अपने .... रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं।

ङ. वे शब्द .... शब्द कहलाते हैं, जिनके सार्थक खंड नहीं किए जा सकते।

6. निम्नलिखित शब्दों को उपयुक्त विदेशी शब्दों के अंतर्गत लिखिए-

सर्कस	तौलिया	टेलीफ़ोन	मुफ़्त	हफ़्ता	स्टेशन	जवान
जहाज	इमारत	चाबी	कुली	साबुन	मतलब	तोप

तुर्की	**पुर्तगाली**	**अंग्रेज़ी**	**फ़ारसी**	**अरबी**
....	....	....	....	....
....	....	....	....	....
....	....	....	....	....

समानार्थी या पर्यायवाची शब्द

पाठ योजना: 6

आज की अवधारणा

छात्रों को पर्यायवाची शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए पाठ तथा पाठ से इतर उदाहरणों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को इस बात की जानकारी है कि व्याकरण में केवल सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है। अर्थ की दृष्टि से पर्यायवाची शब्द सार्थक शब्दों का ही एक प्रकार है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे-

- पर्यायवाची या समानार्थी शब्दों के अर्थ को समझने में,
- इन शब्दों के बारे में सोचने एवं विचार कर उचित पर्यायवाची या समानार्थी शब्द का चयन करने में तथा
- अधिकांश पर्यायवाची शब्द कैसे शब्द होते हैं, इस बात को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्र पर्यायवाची या समानार्थी शब्द को परिभाषित कर सकेंगे।
- दैनिक जीवन में पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग कर सकेंगे।
- पर्यायवाची शब्दों के महत्व से परिचित हो सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अधिक-से-अधिक शब्दों के पर्यायवाची शब्द ढूँढने की कौतूहलता उत्पन्न करते हुए इस दिशा में उन्हें अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को श्यामपट्ट पर कोई वर्ग-पहेली बनाकर दें तथा कुछ शब्द देते हुए उन्हें उन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द ढूँढने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित पुस्तकें।

- यूट्यूब पर पर्यायवाची शब्दों से संबंधित वीडियो क्लिप्स।
- पर्यायवाची शब्दों के विभिन्न अर्थों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इइस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। कुल समयः पाँच मिनट	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'समानार्थी या पर्यायवाची शब्द' के साथ की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को पर्यायवाची शब्दों तथा उनके अर्थों को जानने हेतु जिज्ञासु बनाना।	• छात्रों को बताएँ कि वे शब्द जो एक ही अर्थ के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'समानार्थी या पर्यायवाची शब्द' कहा जाता है जैसे-संसार शब्द के लिए हम दुनिया, विश्व, जगत, जग आदि शब्दों का प्रयोग उसके पर्याय के रूप में करते हैं। • उन्हें बताएँ कि किसी वस्तु के पर्यायों का जन्म उसके गुण, रूप अवस्था आदि को देखकर होता है। • यद्यपि पर्यायवाची समान अर्थ वाले शब्द होते हैं, तथापि प्रयोग करते समय इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि प्रत्येक स्थिति में शब्द की जगह पर उसके पर्यायवाची शब्द का प्रयोग संभव नहीं जैसे-'सीता जी ने अग्नि-परीक्षा दी', यदि हम इस वाक्य के स्थान पर यह कहें कि 'सीता जी ने आग-परीक्षा दी', तो यह वाक्य अटपटा-सा प्रतीत होता है। • पर्यायवाची शब्द अधिकांशतः रूढ़ शब्द होते हैं। • पाठ में दिए गए पर्यायवाची शब्दों का छात्रों से ही वाचन करवाएँ। जहाँ कहीं आवश्यक लगें उन्हें शब्दों का अर्थ स्पष्ट करके बताएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. चित्र देखकर उनके पर्यायवाची शब्द लिखिए।

क. 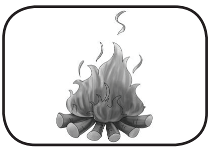 ख. ग.

....

....

घ. 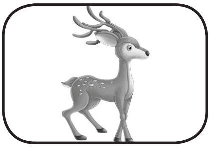 ङ..

....

....

2. पर्याय के आधार पर दिए गए शब्दों में से उचित शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

क. सवेरे के समय सैर करना अच्छा होता है, इसलिए हमें ....जल्दी उठना चाहिए।

ख. मुझे अपने सखा पर गर्व है। मेरे .... का नाम मानस है।

ग. क्षीर स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। अत: हमें रोज़ .... पीना चाहिए।

घ. तितली प्रसून से रस चूसती है इसलिए वह .... पर बैठती है।

ङ. घोड़ा बहुत तेज़ भागता है। .... घास खाता है।

च. मेरी माँ बहुत अच्छी हैं। मेरी .... स्कूल में अध्यापिका हैं।

3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

क. युद्ध -

ख. मुक्ति -

ग. शिव -

घ. बुद्धि -

ङ. पत्नी -

च. विष्णु -

4. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्दों पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	बिजली	-	तड़ित	जड़ित	दामिनी
ख.	बेटा	-	सुता	पुत्र	तनय
ग.	खल	-	खली	धूत	अधम
घ.	कोयल	-	श्याम	काकिला	पिक
ङ.	दुख	-	पीड़क	पीड़िता	कष्ट
च.	पत्ता	-	पर्ण	पात्र	दल
छ.	दुर्गा	-	चंडी	जगदंबा	दुर्गेशी

ज. जन्म – उद्भव ☐ उत्पत्ति ☐ जानक ☐

5. निम्नलिखित शब्दों का उनके पर्यायवाची शब्दों से मिलान कीजिए-

क. कपड़ा •	• i) जगदीश
ख. रात •	• ii) अचल
ग. लक्ष्मी •	• iii) भारती
घ. शक्ति •	• iv) रमा
ङ. शारदा •	• v) अंबर
च. सोना •	• vi) कंचन
छ. पर्वत •	• vii) निशा
ज. ईश्वर •	• viii) पराक्रम

6. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द वर्ग-पहेली में से ढूँढकर लिखिए-

ग	ण	प	ति	मो	ह	क	प
जा	दी	लो	पा	नि	स	मी	र
न	भ	च	नी	र	के	क	ग
न	य	न	ता	ज	अ	त	ग
कु	ज	मा	आ	न	पं	नि	न
सु	म	न	दि	नी	क	र	ल
म	आ	ग	त	आ	ज	ल	ज
अ	न	ल	य	सू	र	ज	म

क. सूर्य – ______ ______ ख. फूल – ______ ______

ग. आकाश – ______ ______ घ. माँ – ______ ______

ङ. अग्नि – ______ ______ च. आँख – ______ ______

छ. गणेश – ______ ______ ज. कमल – ______ ______

झ. हवा – ______ ______ ञ. जल – ______ ______

अनेकार्थी शब्द पाठ योजनाः 7

आज की अवधारणा

छात्रों को अनेकार्थी शब्दों के बारे में बताकर उसके अर्थ स्पष्ट करना तथा उनसे संबंधित उदाहरण ाों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थियों को पता है कि अर्थ के आधार पर शब्दों को दो भागों में बाँटा जाता है-सार्थक और निरर्थक शब्द। अनेकार्थी शब्द इन्हीं सार्थक शब्दों के अंतर्गत आते हैं।

सीखने का प्रतिफल

- अनेकार्थी शब्दों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- अनेकार्थी शब्द के कितने अर्थ निकलते हैं तथा क्या उनका स्थानापन्न किया जा सकता है, इस बात को जानने में,
- अनेकार्थी शब्दों के अर्थों को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- भाषा प्रयोग के दौरान उचित स्थान पर अनेकार्थी शब्द का प्रयोग बताना।
- भाषा में अनेकार्थी शब्दों के महत्व से अवगत कराना।
- दैनिक जीवन में अनेकार्थी शब्दों का प्रयोग बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अनेकार्थी शब्दों के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करते हुए इनके अर्थों को समझने के लिए प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों से पूछें कि आपके माता-पिता किसी ज़रूरी काम से बाहर गए हैं। आप घर में अकेले हैं। तभी किसी ने दरवाज़ा खट-खटाया। ऐसे में आप क्या करेगें? लिखिए।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द भंडार से संबंधित पुस्तकें।

- यूट्यूब पर अनेकार्थी शब्दों के प्रयोग की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में अनेकार्थी शब्दों के अर्थों को दर्शाता चार्ट पेपर।।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए बताएँ कि आज नए अध्याय 'अनेकार्थी शब्द' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को अनेकार्थी शब्द के बारे में बताना तथा अर्थ जानने संबंधी उत्सुक बनाना।	• छात्रों, जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ निकलते हैं, वे अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। • उन्हें वाक्य प्रयोग के माध्यम से इसे स्पष्ट करें और बताएँ कि 'अंबर में पक्षी उड़ रहे हैं।' तथा 'लड़की ने रंग-बिरंगे अंबर पहने हैं।' इन दोनों वाक्यों में 'अंबर' शब्द का प्रयोग हुआ हैं, लेकिन दोनों वाक्य में यह शब्द यह अलग-अलग अर्थ दे रहा हैं। पहले वाक्य में 'अंबर' का अर्थ 'आसमान' से है तथा दूसरे वाक्य में 'अंबर' शब्द का अर्थ 'कपड़े' से है। इसी तरह के शब्दों को अनेकार्थक शब्द कहते हैं। • अगर ध्यान दें तो अनेकार्थी शब्दों का व्यवहार हमारे जीवन में होता ही रहता है, लेकिन फिर भी इन शब्दों को पर्यायवाची शब्द समझने की भूल न करें। • अध्यापक पाठ का वाचन करवाते हुए अनेकार्थी शब्दों के अर्थ से छात्रों को परिचित कराएँ तथा अपनी कार्य-पुस्तिका में दस ऐसे शब्द लिखकर लाने को कहें, जिनके कई अर्थ निकलते हों। फिर एक-दूसरे मित्र से बदलकर उसके उत्तर की जाँच करें। • अंततः उन्हें बता दें कि अनेकार्थी शब्द के अर्थ का ज्ञान प्रसंग के अनुरूप ही ग्रहण किया जाता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. दिए गए उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

कार्य　　शहद　　अंक　　अंश　　वस्त्र　　जलज

क. मेरे .... में चोट लग गई है।

ख. शिशु को .... में लेना चाहिए।

ग. मधुमक्खियाँ .... बनाती हैं।

घ. हमारा राष्ट्रीय फूल .... है।

ङ. हमें अपना .... स्वयं करना चाहिए।

च. मुझे गुरुवार को पीले .... पहनना अच्छा लगता है।

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ पर सही (✓) तथा जो अर्थ नहीं है उस पर गलत (✗) का निशान लगाइए–

क.	अरुण –	सूर्य	☐	लड़का	☐	लाल	☐
ख.	सर –	मीठा	☐	पानी	☐	तालाब	☐
ग.	बाल –	केश	☐	बच्चा	☐	गेंद	☐
घ.	हार –	माला	☐	पराजय	☐	मोती	☐
ङ.	मुद्रा –	सिक्का	☐	बैठने की स्थिति	☐	शून्य	☐
च.	कनक –	चाँदी	☐	सोना	☐	गेहूँ	☐

3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के अर्थ लिखिए–

क. मेरे <u>बाल</u> काले और लंबे हैं। ____________

ख. मेरे पास <u>कनक</u> की अंगूठी है। ____________

ग. <u>सर</u> में मछलियाँ तैर रही हैं। ____________

घ. क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया की टीम को <u>हार</u> का सामना करना पड़ा। ____________

ङ. स्नेहा ने अपने <u>लाल</u> का नाम कार्तिक रखा है। ____________

च. हमें सबसे <u>राग</u> करना चाहिए, घृणा नहीं। ____________

4. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अनेकार्थी शब्द लिखिए–

क. श्री – ________ ________　　ख. हरि – ________ ________

ग. पक्ष – ________ ________　　घ. पंथ – ________ ________

ङ. बलि – ________ ________　　च. मद – ________ ________

छ.	जेठ –	______	______	
ज.	थाती –	______	______	

5. दिए गए शब्द-समूहों में से उस शब्द पर घेरा लगाइए जिसका संबंध शब्द-समूह से न हो।

क.	सूर्य	न्यायशील	पाठ	
ख.	धनुष	जाति	अक्षर	रंग
ग.	दुर्गा	सरस्वती	वेदांग	एक प्राचीन लिपि
घ.	स्वर्ग	बाण	निशाना	घमंड
ङ.	रास्ता	रीति	पंथ	सेना

विपरीतार्थी अथवा विलोम शब्द

पाठ योजनाः 8

आज की अवधारणा

छात्रों को विपरीतार्थी (विलोम) शब्द के बारे में जानकारी देते हुए पाठ तथा पाठेतर विपरीतार्थी शब्दों के उदाहरण देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र इस बात से परिचित हैं कि विपरीतार्थी शब्दों को सार्थक शब्दों के अंतर्गत रखा जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- विपरीतार्थी शब्द का अर्थ समझने में तथा
- दिए गए शब्दों के अर्थ समझकर उनके विलोम शब्द बनाने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- विपरीतार्थी शब्दों को उदाहरण सहित परिभाषित कर सकेंगे।
- भाषा प्रयोग के दौरान उचित स्थान पर विपरीतार्थी शब्दों का प्रयोग कर सकेंगे।
- इन शब्दो का वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर विपरीतार्थी शब्दों के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करते हुए दिए गए शब्दों के अर्थों को समझकर उनके उचित विलोम शब्द बनाने हेतु उन्हें अभिप्रेरित करना।

गतिविधियाँ

दिए गए अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए–

एक तीव्र बुद्धि का लड़का था। वह अपने पिता के साथ गाँव में रहता था। वह अत्यंत मेहनती था। वह अपने पिता के साथ खेत में काम करता था। उसने अपनी मेहनत से ऊसर ज़मीन को उर्वर में बदल दिया था। वह स्वभाव से बहुत शांत और दयालु था। वह अपने वृद्ध पिता का सहारा था। वह कभी किसी की निंदा नहीं करता और हमेशा सत्य का समर्थन करता था।

अब इस अनुच्छेद में से मोटे शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

जैसे– तीव्र – मंद .... – ....

.... – .... – ....

....	–	....	....	–	....
....	–	....	....	–	....
....	–	....	....	–	....

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित पुस्तकें।
- विलोम शब्दों से संबंधित चार्ट पेपर।
- यूट्यूब पर विलोम शब्दों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'विपरीतार्थी अथवा विलोम शब्द' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों के भीतर शब्दों का अर्थ समझकर उनके उपयुक्त विलोम शब्द बताने हेतु उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि जो शब्द एक-दूसरे के विपरीत अर्थ को व्यक्त करते हैं, वे 'विपरीतार्थी अथवा विलोम शब्द' कहलाते हैं। • विलोम शब्दों की रचना ज़्यादातर उपसर्गों (कु,अप,नि, अ,सु आदि) के प्रयोग से होती है। • किसी भी शब्द का विलोम बनाते समय यह सावधानी रखनी चाहिए कि तत्सम शब्द का तत्सम और तद्भव शब्द का तद्भव शब्द ही विलोम के रूप में प्रयोग हो जैसे-सत्य-असत्य (तत्सम); सच-झूठ(तद्भव)। • विपरीतार्थी या विलोम शब्द लिंग परिवर्तन, उपसर्गों के समान प्रयुक्त होने वाले शब्दों तथा भिन्न जातीय शब्दों के द्वारा भी बनते है। • विलोम शब्दों का युग्म परस्पर एक-दूसरे का विरोधी होता है। • छात्रों को यह भी स्पष्ट करें कि वाक्य-संरचना में विलोम शब्दों का अत्यधिक महत्व होता है क्योंकि इनसे गुणवत्ता बढ़ जाती है।

	• पाठ से इन शब्दों का वाचन कराते हुए जहाँ कहीं आवश्यक लगें छात्रों को उक्त शब्दों का अर्थ भी समझाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित शब्दों का उनके विलोम शब्दों से मिलान कीजिए-

क. इष्ट	i) उदार
ख. भिज्ञ	ii) अनावृष्टि
ग. अनुदार	iii) आर्द्र
घ. अतिवृष्टि	iv) तीक्ष्ण
ङ. शुष्क	v) अनिष्ट
च. कुंठित	vi) निर्माण
छ. ध्वंस	vii) नीरस
ज. सरस	viii) अनभिज्ञ

2. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विलोम शब्दों के जोड़ों को अलग करके लिखिए-

क. पाठ यदि आरंभ से ही पढ़ा जाए, तो अंत तक आते-आते पाठ से संबंधित शंकाओं का समाधान स्वयं हो जाता है।

....

ख. हमें किसी की बुराई न करके सभी की भलाई करनी चाहिए।

....

ग. संत-महात्मा जन पाप तथा पुण्य की बातें बखूबी करते हैं।

....

घ. पाठ में आई उपयोगी तथा अनुपयोगी बातों में से उपयोगी बातों को छाँटकर लिखिए।

....

ङ. प्रत्येक क्रिया के पीछे कोई-न-कोई प्रतिक्रिया अवश्य होती है।

....

च. व्यक्ति के भीतर गुण एवं अवगुण दोनों ही रहते हैं।

....

छ. सार्थक शब्दों में कुछ निरर्थक शब्द आ गए हैं।

....

3. निम्नलिखित शब्दों के उचित विलोम शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	आस्था – अस्थि	☐	अनास्था	☐	प्रास्था	☐
ख.	राजा – स्वराजा	☐	कुराजा	☐	रंक	☐
ग.	रक्षक – भक्षक	☐	दक्षक	☐	प्राक्षक	☐
घ.	सार्थक – अर्थक	☐	निरर्थक	☐	व्यर्थ	☐
ङ.	देव – देवी	☐	देवता	☐	दानव	☐
च.	आवरण – अनावरण	☐	अनवृत	☐	आवृत	☐
छ.	मधुर – खटास	☐	मिठास	☐	कटु	☐
ज.	हर्ष – हर्षित	☐	शोक	☐	हर्षक	☐

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

क. पंडित – ____________ ख. निरामिष – ____________

ग. निंदा – ____________ घ. उत्तर – ____________

ङ. दृश्य – ____________ च. आगत – ____________

छ. वृद्धि – ____________ ज. योगी – ____________

झ. प्रस्तुत – ____________ ञ. आसक्त – ____________

5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के उचित विलोम शब्द लिखिए-

क. हमें सभी की <u>स्तुति</u> करनी चाहिए .... नहीं।

ख. मनुष्य को हमेशा <u>आशावादी</u> होना चाहिए .... नहीं।

ग. विज्ञान <u>वरदान</u> है न कि ....।

घ. प्रश्न-पत्र में कुछ प्रश्नों के उत्तर <u>संक्षिप्त</u> लिखने होते हैं तो कुछ के .... से।

ङ. हमें <u>आलस्य</u> को छोड़कर .... को अपनाना चाहिए।

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

पाठ योजनाः 9

आज की अवधारणा

छात्रों को श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए पाठ से अतिरिक्त श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों के उदाहरण देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि कुछ शब्द सुनने व पढ़ने में लगभग समान प्रतीत होते हैं, लेकिन उनमें सुक्ष्म अंतर होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे-

- श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों का अर्थ व उनके मध्य अंतर को जानने में,
- इन शब्दों के अंतर्गत कौन-कौन से शब्द शामिल हैं, इसे समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द की परिभाषा जानेंगे।
- दैनिक जीवन में श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों की महत्ता व उपयोगिता समझाना।
- भाषा में अर्थ को ध्यान में रखते हुए उचित शब्द का वाक्य में प्रयोग करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करके भाषा प्रयोग के दौरान इनका उचित रूप से वाक्यों में प्रयोग करने की दिशा में उन्हें अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

निम्नलिखित समरूपी भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ वर्ग-जाल में से ढूँढकर लिखिए-

न	क्ष	त्र	मा	त्रा	वं
ती	घों	की	फ	ल	श
जा	स	म	कि	ना	रा
का	ला	त	घ	ज	ड़
ख	सं	ध्या	र	पा	नी

श्याम	–	____________	कुल	–	____________
शाम	–	____________	कूल	–	____________
मूल्य	–	____________	नीर	–	____________
मूल	–	____________	नीड़	–	____________
ग्रह	–	____________	परिमाण	–	____________
गृह	–	____________	परिणाम	–	____________

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्यूब पर श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों के अर्थों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए बताएँ कि आज नए अध्याय 'श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों के संबंध में बताना तथा उदाहरणों के अर्थों को जानने के प्रति जिज्ञासु बनाना।	• छात्रों, हिंदी भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं, जो उच्चारण की दृष्टि से बहुत मेल खाते हैं, परंतु उनके अर्थ भिन्न होते हैं। इस प्रकार के शब्दों को समरूपी भिन्नार्थक शब्द कहा जाता हैं। • उन्हें अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों को स्पष्ट करने का प्रयास करें। जैसे-"यह आम पका हुआ है" तथा "यह पक्का मकान है" आपने देखा कि इन दोनों वाक्यों में रेखांकित शब्द सुनने और बोलने में समान लगते हैं, किंतु इनके अर्थ में भिन्नता है। • शुद्ध उच्चारण के माध्यम से अध्यापक इन शब्दों के बीच का अंतर स्पष्ट करें तथा छात्रों को इनके अर्थ से भी परिचित कराएँ।

	• उन्हें समझाएँ इन शब्दों को समध्वनि, समश्रुत, समोच्चरित तथा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द भी कहते हैं। इन शब्दों की वर्तनी एवं ध्वनि में सुक्ष्म-सी भिन्नता होती है। • श्यामपट्ट पर अध्यापक एक वर्ग-पहेली बनाकर उसके भीतर उन्हें कुछ शब्द देते हुए उसके श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द ढूँढने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. चित्र देखकर सही नाम पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क. द्रव्य / द्रव

ख. द्वीप / दीप

ग. 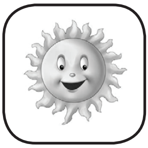 तरणी / तराणी

घ. चालाक / चालक

ङ शस्त्र / शास्त्र

2. रेखांकित शब्दों को शुद्ध करके वाक्यों को पुनः लिखिए–

क. पुस्तक का <u>आकर</u> चौकोर है।

....

ख. वह <u>दीन</u> दोगुनी व रात चौगुनी तरक्की कर रहा है।

....

ग. बस के <u>चालाक</u> ने बीच रास्ते में बस रोक दी।

....

घ. प्रत्येक व्यक्ति को <u>क्रम</u> करते रहना चाहिए।

....

ङ. राजा का <u>प्रसाद</u> बहुत विशाल था।

....

च. रेखा ने अपनी बात का अंत्य शुक्रिया कहकर किया।

....

3. कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

क. महाराणा प्रताप का .... हवा की तरह तेज़ दौड़ता था।

ख. विद्यालय में कल .... जमा करने का आखिरी दिन है।

ग. यह मकान बहुत .... बना हुआ है।

घ. मेरा पुत्र अभिषेक .... है।

ङ. हमें .... का लालच नहीं करना चाहिए।

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ–

क. प्राकार – ....

प्रकार – ....

ख. वसन – ....

व्यसन – ....

ग. नीड – ....

नीर – ....

घ. ख़ान – ....

खान – ....

ङ. समान – ....

सामान – ....

एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

पाठ योजनाः 10

आज की अवधारणा

छात्रों को एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए पाठ तथा पाठ से अतिरिक्त शब्दों को उदाहरण द्वारा समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को पता है कि हिंदी भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो देखने में तो एक से प्रतीत होते हैं परंतु उनमें थोड़ा अंतर होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों के अर्थों को समझने में,

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों की उपयोगिता समझाना।
- वाक्य प्रयोग के दौरान अर्थ को ध्यान में रखकर उचित शब्द का प्रयोग बताना।
- छात्रों को यह बताना कि ये शब्द समान अर्थ प्रतीत होने पर भी सूक्ष्म अंतर रखते हैं।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करते हुए अपनी भाषा को प्रभावपूर्ण बनाने हेतु इस दिशा में उन्हें अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

वर्ग-पहेली में से एकार्थक शब्द छाँटकर लिखिए तथा उनके अर्थ सोचकर लिखिए–

दु	अ	उ	मृ	त्	यु
ख	धि	त्			उ
शो	क	सा	ह	स	प
	ष्	ह		पा	हा
अ	ट	प	रि	हा	स
प	न्	र्या	नि	र्ण	य
रा	या	प्	ध		
ध	य	त	न	खे	द

दुख	_	सामान्य पीड़ा	________	_ ________
________	_	________	________	_ ________
________	_	________	________	_ ________
________	_	________	________	_ ________
________	_	________	________	_ ________

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्यूब पर एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों के अर्थों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को भाषा प्रयोग के दौरान अनेक शब्दों के लिए एक शब्द की उपयोगिता एंव महत्व से परिचित कराना।	• छात्रों, कुछ शब्द देखने में एक जैसे लगते हैं। किंतु उनमें कुछ भिन्नता होती है, ऐसे शब्दों को एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द कहते हैं। • उन्हें बताएँ ये समानार्थी शब्द नहीं होते हैं। इन शब्दों को ध्यान से देखने पर ही इनके अंतर का पता चलता हैं। • इनके प्रयोग में भूल न हो इसके लिए इनकी अर्थ-भिन्नता को जानना अति आवश्यक है। इसके लिए उन्हें उदाहरण देकर समझाएँ। जैसे-'पाप' और 'अपराध' शब्द। इन शब्दों के अर्थ को वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट तौर पर समझा जा सकता है-'झूठ बोलना पाप (नैतिक या धार्मिक नियमों के विरूद्ध आचरण) हैं।', 'पुलिस ने रिश्वत लेने के अपराध (सामाजिक कानूनों का उल्लंघन) में सरकारी कर्मचारी को गिरफ्तार कर लिया।'

	• अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा इस विषय को स्पष्ट करें और उसके बाद अध्यापक श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखें तथा छात्रों को उन्हें अपनी कार्य-पुस्तिका में उतारकर अर्थ सहित वाक्य प्रयोग करके दिखाने को कहें। • छात्रों को एकार्थक शब्दों के अर्थों को बताने से संबंधित कोई गतिविधि भी दी जा सकती है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए-

क. सेवा – ....

सुश्रूषा – ....

ख. ईर्ष्या – ....

द्वेष – ....

ग. वेदना – ....

व्यथा – ....

घ. भ्रम – ....

संदेह – ....

ङ. ऋषि – ....

मुनि – ....

2. सही विकल्प के सामने सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क. .... – किसी की सहायता (दया | कृपा)

.... – दीन-दुखी पर पिघलना

ख. .... – जहाँ पहुँचा ही न जा सके (अगम | दुर्गम)

.... – जहाँ कठिनाई से पहुँचा जा सके

ग. .... – मन का खिन्न होना (शोक | खेद)

.... – मृत्यु आदि पर दुख प्रकट करना

घ. .... – अपकीर्ति

.... – भारी दोष लगना

कलंक	अपयश

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि सूक्ष्म अंतर स्पष्ट हो जाए–

क. अमूल्य – ....

बहुमूल्य – ....

ख. कष्ट – ....

दुख – ....

ग. अस्त्र – ....

शस्त्र – ....

घ. स्त्री – ....

पत्नी – ....

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

क. हमारे प्रधानाचार्य जी ने वार्षिकोत्सव में आए प्रमुख अतिथि का .... किया। (अभिनंदन/स्वागत)

ख. मुझे .... है कि मेरे कारण आपको डाँट पड़ी। (बहुमूल्य/अमूल्य)

ग. मेरे पास सीता से .... कपड़े हैं। (पत्नी/स्त्री)

घ. मीराबाई के लिए कृष्ण भक्ति .... थी। (अधिक/पर्याप्त)

ङ. वर्मा जी अपनी .... के साथ घूमने गए। (उपहार/भेंट)

च. मेरे मित्र ने मेरे जन्मदिन पर मुझे .... दिया। (खेद/शोक)

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

पाठ योजनाः 11

आज की अवधारणा

छात्रों को अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बताना तथा उन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके सभी उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि संक्षेपीकरण के लिए अनेक शब्दों की जगह पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के बारे में सोचने और विचार करने में,
- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द को जानने में,
- अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करने से भाषा किस प्रकार प्रभावी बनती है, यह समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में अनेक शब्दों के लिए एक शब्द की उपयोगिता समझाना।
- वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करके भाषा को प्रभावी बनाना सिखना।
- अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त एक शब्द की जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके अपनी भाषा को प्रभावपूर्ण बनाने हेतु इस दिशा में उन्हें अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

आपकी दोस्त रीया ने एक अनुच्छेद लिखा है जिसमें अनेक शब्दों का प्रयोग किया है, जिससे भाषा प्रभावहीन हो गई है। पहले आप इसे ध्यान से पढ़िए–

मेरी अध्यापिका तेज़ बुद्धि वाली महिला हैं। वे सभी को समान दृष्टि से देखती हैं। वे कहती हैं कि हमें शरीर को पुष्ट बनाने वाली चीज़ें ही खानी चाहिए न कि बाहर की नुकसानदायक चीज़ें। जो पढ़े लिखे नहीं होते उन्हें वे अपने घर पर पढ़ाती हैं। वे कहती हैं कि विद्या जीवन भर रहती है। अतः विद्या से हमेशा मित्रता करनी चाहिए।

अब आप अनेक शब्दों की जगह पर एक शब्द का प्रयोग करके उपर्युक्त अनुच्छेद को दुबारा लिखिए–

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में अनेक शब्दों के लिए एक शब्द संबंधित पुस्तकें।
- कक्षा में अनेक शब्दों के लिए एक शब्द की जानकारी देते चार्ट पेपर।
- यूट्यूब पर अनेक शब्दों के लिए एक शब्द संबंधी वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए बताएँ कि आज नए अध्याय 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को भाषा प्रयोग के दौरान अनेक शब्दों के लिए एक शब्द की उपयोगिता एवं महत्व से परिचित कराना।	• छात्रों, लेखन को संक्षिप्त तथा प्रभावशाली बनाने के लिए प्राय: अनेक शब्दों के स्थान पर किसी एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। • उन्हें बताएँ कम शब्दों में अपनी बात को बताना भाषा कौशलता के प्रतीक को दर्शाता है। यह एक कला है। • कम से कम शब्दों में अपनी बात को कहकर हम अपनी लेखन-कला को उच्च स्तर का बना सकते हैं। ऐसा करने से ज्ञाषा में संक्षिप्तता आती है। • भाषा को सरल तथा प्रभावी बनाने के लिए वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिससे यह ज्ञात होता है कि कई बार एक शब्द भी स्वयं में अनेक शब्दों के अर्थ को समेटे रखता है। • वैसे भाषा में यह सुविधा होना काफी अच्छा है, जिससे वक्ता अथवा लेखक कम से कम शब्दों में अर्थात् संक्षेप में बोलकर या लिखकर अपने विचार अभिव्यक्ति कर सकें। • अध्यापक श्यामपट्ट पर कुछ वाक्यांश लिखकर एक वर्ग-पहेली बनाएँ तथा छात्रों को उसमें से वाक्यांश के लिए एक शब्द ढूँढकर अपनी कार्य-पुस्तिका में उतारकर उनके सामने लिखकर लाने को कहें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

क. ईश्वर को न मानने वाला – ....

ख. जिसके पास धन न हो – ....

ग. जिसमें संदेह न हो – ....

घ. जहाँ जाया न जा सके – ....

ङ. खोज करने वाला – ....

च. व्याकरण शास्त्र का विद्‌वान – ....

2. अनेक शब्दों के लिए उचित शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	दोपहर से पूर्व का समय	–	अपराह्न	पूर्वाह्न	दिन
ख.	इतिहास से संबंधित	–	नवीन	प्राचीन	ऐतिहासिक
ग.	वाणी संबंधी	–	वाचिक	लिखित	सांकेतिक
घ.	जानने की इच्छा	–	जिज्ञासु	जिज्ञासा	इच्छुक
ङ.	जिसका आकार न हो	–	निराकार	साकार	आकृति
च.	ऊपर कही गई बात	–	उपयुक्त	निम्नलिखित	उपर्युक्त

3. निम्नलिखित शब्दों के लिए वाक्यांश लिखिए-

क. लिप्सा – ....

ख. निस्संतान – ....

ग. शैव – ....

घ. कुख्यात – ....

ङ. अज्ञेय – ....

च. दूरदर्शी – ....

छ. उऋण – ....

ज. जिजीविषा – ....

4. निम्नलिखित वाक्यांशों को उनके एक शब्द से मिलाइए-

क. जिसके लक्षण विशिष्ट हों — i) दुश्चरित्र

ख. प्राणों को दुख देने वाली — ii) आगामी

ग.	सदा रहने वाला	iii)	कुख्यात
घ.	आगे आने वाला	iv)	अल्पव्ययी
ङ.	बुरे चरित्र वाला	v)	विलक्षण
च.	कम खर्च करने वाला	vi)	मर्मांतक
छ.	बुराई के लिए प्रसिद्ध	vii)	शाश्वत

शब्द-निर्माणः उपसर्ग   पाठ योजनाः 12

आज की अवधारणा

छात्रों को उपसर्ग के बारे में बताना तथा इसके भेदों से अवगत कराना। विभिन्न उपसर्गों के उदाहरणों को स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं उपसर्ग शब्द नहीं बल्कि शब्दांश होते हैं, जो किसी शब्द के साथ जुड़कर विशेष अर्थ प्रकट करते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे-

- उपसर्ग के बारे में सोचने और विचार करने में,
- उपसर्ग के विभिन्न भेदों को जानने में,
- अलग-अलग भेदों से विभिन्न शब्दों का निर्माण करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- उपसर्ग व उसके भेदों की उपयोगिता समझना।
- उपसर्गों के महत्व से परिचित कराना।
- उपसर्ग के विभिन्न भेदों से नवीन शब्दों का निर्माण बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में उपसर्गों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके नवीन शब्द निर्माण कराने की दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

वर्ग-जाल में से कम-से-कम आठ शब्द छाँटकर लिखिए तथा उन शब्दों में से उपसर्ग और मूलशब्द अलग-अलग करके भी लिखिए-

खु	क	र	अ	भ	प
श	म	आ	म	र	ण
मि	ज़ो	ज	क	स	थ
ज़ा	र	न	ख	क	ह
ज	ट	म	स	पू	त

अ	व	गु	ण	वा	न
न	ना	ब	नि	ड	र
प	खु	द	हा	प	च
ढ़	श	बू	ल	ग	ट

खुशमिज़ाज – खुश + मिज़ाज ....

....

....

....

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्‌यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध उपसर्ग संबंधी पुस्तकें।
- यूट्‌यूब पर उपसर्ग व उसके भेदों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- विभिन्न उपसर्गों से बने शब्दों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्‌देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए बताएँ कि आज नए अध्याय 'शब्द-निर्माण: उपसर्ग' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्‌देश्य: छात्रों को उपसर्ग के संबंध में बताना तथा विभिन्न उपसर्ग के भेदों को जानकर उनसे नवीन शब्द बनाने की जिज्ञासा उत्पन्न करना।	• छात्रों, उपसर्ग शब्द 'उप' तथा 'सर्ग' से मिलकर बना है। 'उप' का अर्थ हैं-पास और 'सर्ग' का अर्थ है-सृष्टि। शब्द के पास पहुँचकर यानि उसमें जुड़कर नए अर्थ का निर्माण करना। • उपसर्ग, वे शब्दांश होते हैं, जो शब्दों के आरंभ में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन अथवा विशेषता ला देते हैं। • हिंदी में पाँच प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है-संस्कृत के उपसर्ग, हिंदी के उपसर्ग, उर्दू के उपसर्ग, संस्कृत के अव्यय, अंग्रेजी के उपसर्ग।

	• उपसर्गों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं किया जा सकता। ये शब्दांश होते हैं तथा ये शब्द आरंभ में ही जोड़े जाते हैं। शब्दांश के जुड़ने से मूल शब्द में परिवर्तन आता है जैसे–मूल शब्द 'मान' में 'अप' उपसर्ग जोड़कर 'अपमान' हो गया। 'मान' का अर्थ आदर होता है तथा 'अपमान' का अर्थ 'अनादर' होता हैं। • अध्यापक उपसर्ग के सभी भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करके समझाएँ तथा विभिन्न भेदों से संबंधित उपसर्ग देते हुए नवीन शब्द बनाकर दिखाने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए–

क. वाइस – ....

ख. अध – ....

ग. उन – ....

घ. कम – ....

ङ. ऐन – ....

च. पुनर् – ....

छ. सु – ....

2. दिए गए शब्दों में कौन-सा उपसर्ग प्रयुक्त है? सही उपसर्ग पर सही (✓) का चिह्न अंकित कीजिए–

क. पराधीन – पर ☐ परा ☐ पराध ☐

ख. विनय – वि ☐ विन् ☐ वी ☐

ग. अनुरूप – अ ☐ अनू ☐ अनु ☐

घ. प्रगति – प्रग् ☐ प्रक् ☐ प्र ☐

ङ. अवचेतन – अ ☐ अव ☐ अप ☐

3. निम्नलिखित शब्दों में से संस्कृत उपसर्ग तथा हिंदी उपसर्ग वाले शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए–

अत्यंत अमर उनसठ विदेश अछूत निषेध कुविचार
उपमान अत्यधिक कुसंग अध्यक्ष सपूत सफल

हिंदी के उपसर्ग – ....

संस्कृत के उपसर्ग – ....

4. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग व मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए-

	शब्द		प्रत्यय	मूल शब्द
क.	दरअसल	–		
ख.	सरपंच	–		
ग.	निपुण	–		
घ.	तत्पर	–		
ङ.	बहिर्गमन	–		
च.	उद्धरण	–		
छ.	बदहवास	–		

5. निम्नलिखित मूल शब्दों में उचित उपसर्ग का प्रयोग करके शब्द-निर्माण कीजिए-

क. वाद – .... ख. चालक – ....

ग. रक्षण – .... घ. बल – ....

ङ. खुश – .... च. भोज – ....

छ. भोज – .... ज. सफ़र – ....

शब्द-निर्माणः प्रत्यय

पाठ योजनाः 13

आज की अवधारणा

छात्रों को प्रत्यय के बारे में बताना तथा उसे परिभाषित करते हुए उसके भेदों कृत् प्रत्यय व तद्धित प्रत्यय को समझाना। कृत् प्रत्यय के पाँचों भेदों से परिचित कराना तथा तद्धित प्रत्यय के छह भेदों को समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को पता है कि शब्दों के पीछे शब्दांश लगाने से उनमें परिवर्तन या नवीनता आ जाती है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- प्रत्यय के बारे में सोचने और विचार करने में,
- प्रत्यय के भेदों को जानने में,
- दिए गए शब्दों में से प्रत्यय व मूल शब्द की पहचान करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में प्रत्यय की उपयोगिता समझाना।
- प्रत्यय के दोनों भेदों से परिचित कराना तथा अंतर समझाना।
- कृत् प्रत्यय व तद्धित प्रत्यय संबंधी जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'प्रत्यय' के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

श्यामपट्ट पर अध्यापक एक वर्ग-पहेली बनाएँ तथा छात्रों को उनमें से प्रत्यय युक्त शब्दों को ढूढ़ँकर लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध 'प्रत्यय' संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर कृत् प्रत्यय व तद्धित प्रत्यय जानकारी संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में प्रत्यय व उसके भेदों को विस्तारपूर्वक दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'शब्द निर्माण: प्रत्यय' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को प्रत्यय के बारे में बताना तथा भेदों संबंधी उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, जो शब्दांश शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। • उन्हें बताएँ, प्रत्यय ऐसे शब्दांश होते हैं, जिनका स्वतंत्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता है, इनका अपना स्वतंत्र रूप से कोई अस्तित्व नहीं होता है। मूल शब्दों के अंत में जुड़ने से उनके अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। • प्रत्यय के दो भेद होते हैं– कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय। कृत प्रत्यय धातुओं अथवा क्रिया शब्दों के अंत में लगकर संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं। • कृत् प्रत्यय लगकर बनने वाले शब्द कृदंत कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय के पाँच भेद हैं– कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय, कर्मवाचक कृत् प्रत्यय, करणवाचक कृत् प्रत्यय, भाववाचक कृत-प्रत्यय, क्रियावाचक कृत् प्रत्यय। • कृत् प्रत्यय के सभी भेदों को उदाहरण सहित समझाएँ तथा कुछ शब्द लिखकर उनका भेद बताने को कहें और उसमें लगने वाले प्रत्यय और मूल शब्द के बारे में पूछें। • उसके बाद छात्रों को तद्धित प्रत्यय के बारे में बताएँ कि ये धातुओं को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा अव्यय शब्दों के अंत में जुड़कर उन शब्दों के अर्थ में विशेषता उत्पन्न करते हैं और उन्हें नया रूप देते हैं। • तद्धित प्रत्यय के छह भेद हैं– अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय, कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय,भाववाचक तद्धित प्रत्यय, गुणवाचक तद्धित प्रत्यय, ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय, स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय। इन सभी भेदों के बारे में एक-एक करके पूछें और उस प्रत्यय से निर्मित शब्द बनाने को कहें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्यः अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. प्रत्यय किसे कहते हैं?

....

....

ख. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय तथा भाववाचक कृत् प्रत्यय को स्पष्ट कीजिए।

....

....

ग. तद्धित प्रत्यय को परिभाषित करते हुए इसके सभी भेदों के नाम लिखिए।

....

घ. ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं? इस प्रत्यय के कोई चार उदाहरण दीजिए।

....

....

2. दिए गए प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए–

क. आर – ....

ख. ता – ....

ग. मान – ....

घ. आन – ....

ङ. आई – ....

च. आव – ....

3. दिए गए मूल शब्दों की सहायता से ऐसे चार शब्दों का निर्माण कीजिए जिनमें दिए गए दो-दो प्रत्यय प्रयुक्त हो–

	मूल शब्द	प्रत्यय + प्रत्यय =	शब्द रूप
क.	बच्चा	पन + आ =	....
ख.	राष्ट्र	ईय + ता =	....
ग.	सर	कार + ई =	....
घ.	शीत	ल + ता =	....

4. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर उपसर्ग या प्रत्यय युक्त शब्द बनाकर वाक्य पुनः लिखिए–

क. यह मकान <u>बिकने वाला</u> है।

....

ख. चावल अभी आधा पका है।

....

ग. मुझे नमक वाले व्यंजन पसंद हैं।

....

घ. हमें बिना डरे जीना चाहिए।

....

ङ. हमें बुरे शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

....

च. जो सब्जी बेचता है पता नहीं कब आएगा।

....

5. जो शब्द प्रत्यय द्वारा बने हैं, उन पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	बदबू	☐	खिलौना	☐	पुरस्कार	☐
ख.	अतिशय	☐	पहनावा	☐	भरपूर	☐
ग.	मिठास	☐	कमज़ोर	☐	स्वयंवर	☐
घ.	मोटापा	☐	अपमान	☐	निडर	☐
ङ.	कुपुत्र	☐	परिचय	☐	टिकाऊ	☐
च.	हेडक्लर्क	☐	हमउम्र	☐	मुखड़ा	☐

6. एक पुस्तक मूल शब्द की है और दूसरी पुस्तक प्रत्यय की। अब आप उदाहरण के अनुसार मूल शब्द और प्रत्यय मिलाकर नए शब्द बनाइए-

मूल शब्द –	गाड़ी	हर्ष	खा	नमक	शक्ति	रक्षा	मम	मिल
प्रत्यय –	त्व	ईन	इत	या	आप	मान	अक	वाला

	मूल शब्द		**प्रत्यय**		**नए शब्द**
क.	गाड़ी	+	वाला	=	गाड़ीवाला
ख.	....	+	....	=	....
ग.	....	+	....	=	....
घ.	....	+	....	=	....
ङ.	....	+	....	=	....
च.	....	+	....	=	....

शब्द-निर्माण: समास   पाठ योजना: 14

आज की अवधारणा

छात्रों को समास का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके चारों भेदों–अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, द्वंद्व समास तथा बहुव्रीहि समास से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को इस बात का ज्ञान है कि 'संधि' जहाँ वर्णों के मेल से बनती है, वहीं 'समास' शब्दों के मेल से बनता है, तथा समास का संक्षेपीकरण भी किया जा सकता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- समास तथा समास-विग्रह का अर्थ समझने में,
- समास के चारों भेदों को जानने में तथा
- कारकीय विभक्तियों के आधार पर तत्पुरुष समास के भेदों को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- समास तथा समास-विग्रह का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे।
- समास के भेदों को परिभाषित करते हुए इसके उदाहरण दे सकेंगे।
- विभिन्न समासों के मध्य अंतर कर सकेंगे।
- कारकीय विभक्तियों के आधार पर तत्पुरुष समास के भेदों की पहचान कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर समास के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करते हुए इसके विभिन्न भेदों को जानने तथा इनके उदाहरणों को समझने का भाव उत्पन्न करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कोई वर्ग-पहेली बनाकर दें तथा छात्र उसमें से समास के सभी भेदों से लिखें संबंधित समस्तपदों को छाँटकर अलग लिखे। साथ ही भेद का नाम भी लिखें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- समास के भेदों व उदाहरणों को दर्शाता चार्ट पेपर।

- यूट्यूब पर समास व उसके भेदों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- विद्यालय के पुस्तकालय में समास संबंधी पुस्तकें।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'शब्द निर्माणः समास' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों में समास व उसके भेदों को जानने संबंधी उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक पदों का मेल ही 'समास' कहलाता है। समास का अर्थ है– संक्षिप्त करना। • समास भी यौगिक शब्द बनाने की एक विधि है। • समास के लिए दो पद होने आवश्यक हैं– पूर्व पद तथा उत्तर पद। • समस्तपदों को पुनः पृथक् करने की प्रक्रिया 'समास-विग्रह' कहलाती है। • छात्रों को इस बात से अवगत कराएँ कि समास के मुख्यतः चार भेद हैं-अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, द्वंद्व समास तथा बहुव्रीहि समास। • एक-एक करते हुए समास के सभी भेदों को उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • तत्पुरुष समास के संदर्भ में छात्रों को बताएँ कि कारकीय परसर्गों के लोप के आधार पर तत्पुरुष समास के भेद हैं– कर्म तत्पुरुष, करण तत्पुरुष, संप्रदान तत्पुरुष, अपादान तत्पुरुष, संबंध तत्पुरुष तथा अधिकरण तत्पुरूष। • तत्पुरुष समास के अन्य भेद हैं– कर्मधारय समास तथा द्विगु समास। दोनो भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करें। • अंततः कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समास के मध्य का अंतर समझाएँ कि कर्मधारय समास के दोनों पदों में उपमेय-उपमान अथवा विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है, जबकि बहुव्रीहि समास के दोनों पद प्रधान होते हुए किसी तीसरे अथवा विशेष अर्थ की ओर संकेत करते हैं।

	• इस बात से भी छात्रों को परिचित कराएँ कि कर्मधारय और बहुव्रीहि समास की भाँति द्विगु समास भी कई बार भ्रमित करता है। उदाहरण देते हुए इस बात की पुष्टि कीजिए। • इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यदि समस्तपद का विग्रह संख्या और समूह के रूप में किया जा रहा है, तो वहाँ द्विगु समास होगा और यदि विशेषण–विशेष्य अथवा उपमेय–उपमान के रूप में किया जा रहा है, तो कर्मधारय होगा अन्यथा बहुव्रीहि समास होगा।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्यः अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. समस्त पद तथा समास–विग्रह से आप क्या समझते हैं?

....

....

ख. कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समास में अंतर बताइए।

....

....

....

ग. द्विगु समास को परिभाषित करते हुए इसके चार उदाहरण दीजिए।

....

....

....

घ. तत्पुरुष समास किसे कहते हैं? अधिकरण तत्पुरुष के कोई चार उदाहरण दीजिए।

....

....

....

2. सुमेलित कीजिए–

क. संधि	i) अव्ययीभाव समास
ख. दोनों पद समान	ii) शब्दों का मेल
ग. प्रथम पद अव्यय	iii) वर्णों का मेल

घ.	विशेषण-विशेष्य	iv)	द्वंद्व समास
ङ.	उत्तर पद प्रधान	v)	कर्मधारय समास
च.	समास	vi)	तत्पुरुष समास

3. निम्नलिखित समस्तपदों का समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम भी लिखिए-

समस्तपद		समास-विग्रह	समास का नाम
क. यथानियम	–	....	....
ख. विदेशगत	–	....	....
ग. सप्ताह	–	....	....
घ. चक्रपाणि	–	....	....
ङ. देवासुर	–	....	....
च. प्राणप्रिय	–	....	....
छ. चौमासा	–	....	....
ज. घुड़दौड़	–	....	....

4. समास के उचित भेद में सही (✓) का चिह्न लगाइए।

क.	चक्रधर	–	तत्पुरुष	☐	अव्ययीभाव	☐	बहुव्रीहि	☐
ख.	कमलनयन	–	द्वंद्व	☐	अव्ययीभाव	☐	कर्मधारय	☐
ग.	तिरंगा	–	द्विगु	☐	कर्मधारय	☐	द्वंद्व	☐
घ.	प्रतिपल	–	तत्पुरुष	☐	अव्ययीभाव	☐	द्वंद्व	☐
ङ.	युद्धभूमि	–	तत्पुरुष	☐	कर्मधारय	☐	अव्ययीभाव	☐
च.	मृगनयन	–	कर्मधारय	☐	द्विगु	☐	द्वंद्व	☐

5. रेखांकित शब्दों को समस्तपद में परिवर्तित करके वाक्य दोबारा लिखिए।

क. आज माँ ने <u>दाल और चावल</u> बनाए हैं।

....

ख. <u>राजा का पुत्र</u> बड़ा साहसी है।

....

ग. सरकार ने <u>बाढ़ से पीड़ित</u> व्यक्तियों के लिए सेवार्थ कार्यक्रम चलाया है।

....

घ. रामचरितमानस <u>तुलसी द्वारा कृत</u> है।

....

ङ. ज़मींदार निर्धन लोगों को कभी <u>ऋण से मुक्त</u> नहीं रहने देते।

....

च. हमारे विद्यालय में <u>हर वर्ष</u> वार्षिकोत्सव मनाया जाता है।

....

संज्ञा

पाठ योजना: 15

आज की अवधारणा

छात्रों को संज्ञा के बारे में बताना तथा उसके भेदों को उदाहरण सहित परिभाषित करके समझाना। जातिवाचक संज्ञा के भेदों की जानकारी देना तथा सभी भेदों में अंतर स्पष्ट करना। भाववाचक संज्ञाओं की रचना के बारे में बताना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि संज्ञा का अर्थ 'नाम' होता है। किसी भी नाम (व्यक्ति, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम) को संज्ञा कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हों होंगे–

- संज्ञा व उसके भेदों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- सभी भेदों में अंतर जानकर संज्ञा शब्दों की पहचान करने में,
- किन-किन शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं, यह जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में संज्ञा का महत्व व उपयोगिता समझाना।
- संज्ञा के भेदों को स्पष्ट करते हुए उनके बीच अंतर समझाना।
- अलग-अलग शब्दों से भाववाचक संज्ञाओं की रचना सिखाना।
- शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर उसका संज्ञा भेद पहचानने के लिए प्रोत्साहित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'संज्ञा' विषय के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को पाठ्य-पुस्तक या किसी अन्य पुस्तक से कोई भी चित्र दिखाकर उसका चित्र वर्णन करके लिखकर लाने को कहें और उसके बाद छात्रों को उनमें से संज्ञा शब्दों का चयन कर भेद के अनुसार कार्य-पुस्तिका में लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध संज्ञा संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर भाववाचक संज्ञाओं की रचना की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में संज्ञा के भेदों को दर्शाते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'संज्ञा' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को संज्ञा के बारे में बताना तथा संज्ञा के भेदों व भाववाचक संज्ञाओं की रचना संबंधी जानकारी के लिए उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, जिस शब्द से किसी वस्तु, प्राणी, स्थान या भाव के नाम का बोध होता है, उसे संज्ञा कहते हैं। • संज्ञा को तीनों भेद होते हैं– व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा। • उन्हें बताएँ कुछ विद्वान जातिवाचक संज्ञा के दो भेद स्वीकार करते हैं– द्रव्यवाचक संज्ञा व समूहवाचक संज्ञा। • द्रव्यवाचक व समूहवाचक संज्ञा को उदाहरण सहित समझाकर उनसे द्रव्यवाचक व समूहवाचक शब्दों के बारे में पूछें। • उन्हें बता दें कि भाववाचक संज्ञाएँ सामान्यतः महसूस की जाती हैं और अगणनीय होती हैं। • छात्रों को उदाहरण द्वारा व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा बनना तथा जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा बनना बताएँ और समझाएँ कि भाववाचक संज्ञाएँ बहुवचन रूप में आने पर किस प्रकार जातिवाचक संज्ञाएँ हो जाती हैं। • अंततः उन्हें इस की जानकारी दें कि जातिवाचक संज्ञाओं, सर्वनामों, विशेषणों, क्रियाओं, अव्यय शब्दों से भाववाचक संज्ञाओं की रचना होती है। उसके बाद उन्हें कुछ शब्द देकर उसकी भाववाचक संज्ञा बनाने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्यः अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. 'पुलिस' शब्द द्रव्यवाचक संज्ञा है या समूहवाचक संज्ञा?

....

ख. संज्ञा किस-किस के नाम का बोध कराती है?

....

ग. जातिवाचक संज्ञा तथा समूहवाचक संज्ञा में भेद कीजिए।

....

घ. आपका घर जिस शहर में स्थित है, उस शहर का नाम संज्ञा का कौन-सा भेद होगा?

....

2. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

क.	स्त्री	-	....	ङ.	मिलाना	-	....
ख.	चोर	-	....	च.	शीघ्र	-	....
ग.	पराया	-	....	छ.	कोमल	-	....
घ.	दृढ़	-	....	ज.	खट्टा	-	....

3. निम्न शब्दों को उनके भेदों के अनुसार लिखिए-

क. व्यक्तिवाचक संज्ञा - ....

ख. जातिवाचक संज्ञा - ....

ग. भाववाचक संज्ञा - ....

4. निम्नलिखित शब्दों से बने भाववाचक संज्ञा शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	उपयोगी	-	उपयोग	☐	योग्य	☐	उपयोगिता	☐
ख.	हारना	-	हराना	☐	हरित	☐	हार	☐
ग.	देव	-	देवी	☐	देवत्व	☐	देवता	☐
घ.	सर्व	-	सर्वस्व	☐	सर्वत्र	☐	सर्वाधिक	☐
ङ.	अमर	-	आम्र	☐	आम	☐	अमरत्व	☐
च.	दौड़ना	-	दौड़	☐	धावक	☐	धावन	☐

5. निम्नलिखित वाक्यों में सही (✓) या गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

क. माता-पिता, घर और लड़के आदि जातिवाचक संज्ञा हैं। ☐

ख. किसी व्यक्ति, पशु का नाम भाववाचक संज्ञा कहलाता है। ☐

ग. द्रव्य का बोध कराने वाले द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं। ☐

घ. व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक में नहीं हो सकता। ☐

ङ. भाववाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा से नहीं बनती। ☐

च. दूध, कोल्ड ड्रिंक और पानी आदि द्रव्यवाचक संज्ञा है। ☐

6. कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम हमारे .... प्रदर्शक हैं। (मार्ग/पथ)

ख. निराला ने .... में कहा, "गुलाम देश में सभी शूद्र हैं।" (रोष/प्रेम)

ग. क्रोध में .... नहीं खोना चाहिए। (आप/आपा)

घ. भारत के .... सपूतों ने देश को स्वतंत्र कराया। (वीरता/वीर)

ङ. .... वीरों का आभूषण है। (क्षमा/क्रूरता)

संज्ञा-विकारः लिंग

पाठ योजनाः 16

आज की अवधारणा

छात्रों को लिंग का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके भेदों का परिचय देना। साथ ही लिंग संबंधी नियमों की जानकारी देते हुए इस बात से अवगत कराना कि लिंग परिवर्तन किन-किन स्तरों पर किया जाता है।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को इस बात की जानकारी है कि लिंग, वचन एवं कारक संज्ञा के विकार हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे-

- लिंग तथा उसके भेदों को समझने में,
- लिंग संबंधी नियमों को जानने में तथा
- शब्द एवं वाक्य स्तर पर लिंग परिवर्तन को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है-

- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं उभयलिंगी शब्दों से अवगत करना।
- अपने आस-पास के वातावरण से इन शब्दों की पहचान करने की योग्यता का विकास करना।
- विभिन्न प्रकार के शब्दांशों को जोड़कर स्त्रीलिंग शब्द बनाने की योग्यता विकसित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर लिंग के विभिन्न प्रकारों (स्त्रीलिंग, पुल्लिंग एवं उभयलिंग) को समझकर उनकी पहचान करने की योग्यता का भाव विकसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक उभयलिंग के संबंध में कक्षा में चर्चा करें तथा छात्रों को अपने विद्यालयी वातावरण से ऐसे दस-दस शब्द अपनी कार्य-पुस्तिका में सोचकर लिखने को कहें जो उभयलिंग को दर्शाते हो।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में संज्ञा के विकारों से संबंधित पुस्तकें।
- शब्दों के लिंग परिवर्तन को दर्शाता चार्ट पेपर।

- यूट्यूब पर 'संज्ञा का विकार: लिंग' की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'संज्ञा-विकार: लिंग' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा के बारे में बताएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को वचन के संबंध में बताना तथा उसके भेद तथा वचन परिवर्तन के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों आप सभी जानते हैं कि शब्द के वे रूप जो पुरुष जाति अथवा स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें 'लिंग' कहते हैं। इसके दो भेद हैं-पुल्लिंग व स्त्रीलिंग। • 'पुल्लिंग' पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द होते हैं जबकि स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं। • उन्हें लिंग संबंधी नियमों की जानकारी देते हुए प्राणीवाचक तथा अप्राणीवाचक संज्ञाओं के लिंग संबंधी नियमों से अवगत कराएँ। • प्राणीवाचक शब्दों के लिंग की पहचान प्राकृतिक होती है और अप्राणीवाचक शब्दों का लिंग व्याकरणिक होता है। इनकी पहचान क्रिया तथा विशेषण शब्दों द्वारा की जाती है जैसे-यह बड़ी (विशेषण) पेंसिल (स्त्रीलिंग) है। पंखा (पुल्लिग) चल रहा है (क्रिया)। • तत्पश्चात् पाठ से विभिन्न प्रकार के उदाहरण देते हुए उन्हें पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग शब्द बनाने सिखाएँ तथा इनके नियमों का भी ज्ञान कराएँ। • यह भी स्पष्ट करें कि हिंदी में लिंग के कारण 'शब्द' एवं 'वाक्य' दो स्तरों पर परिवर्तन होता है। शब्द पर आप लिंग परिवर्तन समझ ही चुके हैं तथा वाक्य स्तर पर लिंग परिवर्तन होने से संबंधकारक, विशेषण, क्रियाविशेषण तथा क्रिया पद प्रभावित होते हैं। पाठ से उदाहरण देते हुए समझाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य: अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

क. महिला ने खाना पकाया और .... ने सफाई की।

ख. पति ने .... से कहा कि आज हम बाज़ार चलेंगे।

ग. पिताजी ने .... को नई साड़ी लाकर दी।

घ. वर्षा होने पर मोर व .... दोनों नाचने लगे।

ङ. कल ही चाचा जी व .... हमारे घर पहुँचे हैं।

च. हम वर और .... को समय पर आर्शीवाद देने पहुँच गए थे।

2. निम्नलिखित वाक्यों में लिंग संबंधी कुछ अशुद्धियाँ हो गई हैं, इन्हें शुद्ध करके लिखिए-

क. गुणवान महिला का सभी सम्मान करते हैं।

....

ख. मोहित आठवें कक्षा में पढ़ता है।

....

ग. निशा ने संतोष का साँस लिया।

....

घ. राम और सीता वन को गई।

....

ङ. रिद्धिमा ने अध्यापक का बात मान लिया।

....

3. निम्नलिखित अनुच्छेद में प्रयुक्त स्त्रीलिंग शब्दों को पुल्लिंग में और पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में बदलकर अनुच्छेद को लिंग-परिवर्तन के अनुसार पुनः लिखिए-

एक गाँव में एक औरत रहती थी। वह दिन-रात खूब मेहनत करती फिर भी पति और बच्चों के लिए दो वक्त की रोटी ही जुटा पाती। उसका एक पुत्र था। जो अत्यंत चालाक तथा समझदार था। एक दिन उसने अपनी बहन से कहा, "मैं गाँव में नहीं रहना चाहता, शहर जाकर कुछ पैसे कमाना चाहता हूँ, जिससे माता जी की कुछ मदद कर सकूँ।" यह कहकर वह काम की खोज में निकल पड़ा। शहर की ओर चलते-चलते उसे बीच में राजा का महल दिखा।

....

....

....

....

....

4. उचित विकल्प में सही (✓) का चिह्न लगाइए।

क.	नदियों के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐
ख.	पर्वतों के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐
ग.	सागरों के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐
घ.	देशों के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐
ङ.	भाषाओं के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐
च.	लिपियों के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐

संज्ञा-विकारः वचन पाठ योजनाः 17

आज की अवधारणा

छात्रों को वचन के बारे में बताना तथा उसके भेदों से परिचित कराना। एकवचन व बहुवचन में अंतर स्पष्ट करना। वचन संबंधी मान्य नियमों को समझाना तथा वचन परिवर्तन के नियमों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से एक अथवा अनेक का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हों होंगे–

- वचन के बारे में सोचने और विचार करने में,
- शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर उसका भेद पहचानने में,
- वचन परिवर्तन संबंधी नियम कौन-कौन से हैं, यह जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में वचन की उपयोगिता समझाना।
- एकवचन व बहुवचन की अलग-अलग उपयोगिता बताना।
- वचन संबंधी मान्य नियम तथा वचन परिवर्तन की जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में वचन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

सीमा ने एक अनुच्छेद लिखा है, लेकिन इस अनुच्छेद में कई जगह शब्दों के वचन का सही प्रयोग नहीं किया है। आप उन शब्दों को वचन के अनुसार लिखकर दुबारा अनुच्छेद लिखिए–

अनिता जानती थी कि कक्षाएँ की कई लड़की उसे पसंद नहीं करती हैं। वे कहती थीं कि अनिता दिखावे बहुत करती है, पर अनिता इस पर ध्यान नहीं देती थी। उसे तो कक्षाओं में हमेशा प्रथम आना होता था बस। सभी लड़की नंदिनी को बहुत पसंद करती थीं। वह सभी लड़की की मदद करती थी। नंदिनी में प्रश्न के उत्तरों को ठीक तरह से लिखने की प्रतिभा थी। इन सारी बात के कारण ही अनिता नंदिनी से ईर्ष्या करती थी।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध वचन संबंधी पुस्तकें।
- कक्षा में वचन के भेदों को दर्शाते चार्ट पेपर।
- यूट्यूब पर वचन संबंधी मान्य नियम व वचन परिवर्तन के नियमों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'वचन' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को वचन के बारे में बताना तथा उसके भेद व परिवर्तन के नियमों को जानने के प्रति जिज्ञासु बनाना।	• छात्रों, वचन दो प्रकार के होते हैं– एकवचन व बहुवचन। एकवचन से हमें किसी एक वस्तु, प्राणी, पदार्थ अथवा व्यक्ति का बोध होता है तथा बहुवचन से हमें एक से अधिक वस्तुओं, पदार्थों या व्यक्तियों का बोध होता है। • उन्हें बताएँ किसी व्यक्ति विशेष के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे– महाराणा प्रताप प्रतापी राजा थे। • अभिमान, बड़प्पन अथवा अधिकार प्रकट करने के लिए संज्ञा, सर्वनाम आदि का बहुवचन के रूप में प्रयोग किया जाता है। • कुछ संज्ञा शब्द सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं– जैसे लोग, बाल, दर्शन, हस्ताक्षर, समाचार, प्राण, आँसू, प्रजा आदि। • कुछ शब्द सदैव एकवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं जैसे–वर्षा, आग, पानी, दूध, घी आदि। • ध्यान रखें कि भाववाचक तथा व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में ही आती हैं। वहीं आजकल 'तू' एकवचन के स्थान पर सम्मान के लिए 'तुम' का प्रयोग होने लगा है।

	• उन्हें बताएँ जब शब्दों के साथ सेना, जाति, समूह, दल आदि प्रयुक्त होना हैं, तब उनका प्रयोग एकवचन के रूप में होता है। वहीं एकवचन शब्दों के साथ यदि गण, लोग, जन, वृंद आदि समूहवाची शब्द जुड़ जाएँ, तो वे बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं। • छात्रों को यह सभी नियम समझाने के बाद वचन परिवर्तन के नियमों को समझाएँ तथा कुछ शब्द देकर उन्हें उसका वचन बदलकर वाक्य प्रयोग करके लाने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके दोबारा लिखिए-

क. भेड़ें-बकरियाँ घास चर रही हैं।

....

ख. स्त्री जातियों का सम्मान करो।

....

ग. उसकी बहनें ने राखी बाँधी।

....

घ. पेड़ों पर लता हैं।

....

ङ. माता जी संतरा खरीद कर लाई।

....

च. बच्चा गेंदें से खेल रहा है।

....

2. निम्नलिखित वाक्यों में कारक संबंधी अशुद्धियों को ठीक करके वाक्यों को पुनः लिखिए-

क.	पुड़िया	- पुड़ी	☐	पूड़े	☐	पुड़ियाँ	☐
ख.	कवि	- कविगण	☐	कविवग	☐	कवि समूह	☐
ग.	भाषा	- भाषी	☐	भाषाएँ	☐	भाषियों	☐
घ.	पुस्तक	- पुस्तकीय	☐	पुस्तकें	☐	पुस्तकाकार	☐
ङ.	बछड़ा	- बाछी	☐	बाछिया	☐	बछड़े	☐

च. धातु – धातू ☐ धातुएँ ☐ धातृ ☐

3. सही कथन पर सही (✓) तथा गलत कथन पर गलत (×) का चिह्न लगाइए–

क. भाववाचक तथा व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ सदैव बहुवचन में आती हैं।

ख. जो एक या अनेक होने का बोध कराएँ, उसे लिंग कहते हैं।

ग. अकारांत या आकारांत में संबोधन के समय शब्दों का बहुवचन रूप 'ओ' हो जाता है।

घ. सम्मान, अधिकार, बड़प्पन प्रकट करने के लिए एकवचन का प्रयोग किया जाता है।

ङ. वचन के दो भेद हैं।

च. कुछ संज्ञा शब्द जैसे–लोग, बाल, दर्शन तथा प्राण आदि सदैव बहुवचन में ही प्रयोग किए जाते हैं।

4. कोष्ठक में से उचित शब्द छाँटकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

क. महादेवी वर्मा हिंदी की .... हैं। (लेखिकाएँ/लेखिका)

ख. मैंने मोतियों की .... खरीदी। (माला/मालाएँ)

ग. आज घर में सत्यनारायण की .... सुनाई गई। (कथाएँ/कथा)

घ. .... ने मिलकर आंदोलन किया। (श्रमिक वर्ग/श्रमिक)

ङ. मेरी .... बहुत अच्छी हैं। (माताएँ/माता)

च. पौधों में .... निकल आई। (कली/कलियाँ)

5. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए–

क. सैनिक	–	च. मित्र	– ....
ख. पुड़िया	–	छ. पाठक	– ....
ग. शाखा	–	ज. खग	– ....
घ. बात	–	ठ. अलमारी	– ....
ङ. लुटिया	–	ञ. काँटा	– ....

संज्ञा-विकार: कारक   पाठ योजना: 18

आज की अवधारणा

छात्रों को कारक के बारे में बताना तथा कारक चिह्नों से अवगत कराना। कारक के सभी भेदों के नाम बताकर उनके बीच अंतर स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि कारक-चिह्नों के बिना वाक्य का स्पष्ट रूप से अर्थ प्रकट नहीं होता है, वे अर्थहीन वाक्य हो जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- कारक व कारक-चिह्नों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- वाक्यों में कारक-चिह्नों की पहचान करने में,
- कारक के भेद के अनुसार उसका कारक–चिह्न बताने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को कारक-चिह्नों की उपयोगिता बताना।
- कारक के सभी भेदों से परिचित कराना।
- कारक के प्रत्येक भेद से उसका कारक-चिह्न लगाकर वाक्य बनाने को अग्रसित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'कारक' विषय के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक अलग-अलग कारक-चिह्नों की परचियाँ बनाएँ तथा एक-एक करके छात्रों को बुलाकर परची उठवाएँ। फिर उस परची में लिखे कारक-चिह्न का भेद बताने को कहें और उसके बाद उसका वाक्य प्रयोग करने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध कारक संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर कारक–चिह्नों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में कारक के भेद व उसके चिह्नों को उदाहरण सहित दर्शाते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'कारक' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को कारक व कारक-चिह्नों के बारे में बताकर उसके भेदों के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप द्वारा उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से विशेषत: क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। • उन्हें बताएँ संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध बताने के लिए जिन विशेष चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें परसर्ग या विभक्तियाँ कहते हैं। • कारक के आठ भेद होते हैं– कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक। • कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न 'ने' है, कर्म कारक का 'को', करण कारक का 'से, के द्वारा' संप्रदान कारक का 'को, के लिए', अपादान कारक का 'से (अलग)' संबंध कारक का 'का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी', अधिकरण कारक का 'में, पर, संबोधन कारक का 'हे, अरे, ओ' आदि है। • उन्हें सभी विभक्ति चिह्नों से अवगत करवाकर उनसे संबंधित वाक्य बनाकर लाने को कहें और अपने सहमित्र से बदलकर कार्य की प्रतिपुष्टि करें। • अंतत: उन्हें करण कारक तथा अपादान कारक में अंतर समझाएँ तथा उनसे संबंधित पाँच-पाँच वाक्य बनाकर दिखाने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. **निम्नलिखित कारकों की विभक्ति लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए-**

कारक		विभक्ति	वाक्य
क. संबोधन कारक	–	....	
ख. संप्रदान कारक	–	....	
ग. कर्ता कारक	–	....	
घ. करण कारक	–	....	
ङ. अधिकरण कारक	–	....	
च. अपादान कारक	–	....	

2. **निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित परसर्गों से कीजिए-**

क. बच्चा ज़मीन .... खेल रहा है। (पर/से)

ख. यह दुकान गुप्ता जी .... है। (को/की)

ग. ....! मेरी पुकार सुनो। (पर/से)

घ. पेड़ .... पत्ते गिर गए। (से/में)

ङ. दादी जी ने थाली .... चावल रखे। (को/के लिए)

च. बच्चों ने माता-पिता .... उपहार खरीदा। (से/को)

छ. पुत्र पिता जी .... पढ़ता है।

3. **सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ–**

क. कारक के कितने भेद हैं?

अ. सात ☐ ब. आठ ☐ स. नौ ☐

ख. 'अपादान' का अर्थ क्या होता है?

अ. जोड़ना ☐ ब. मिलाना ☐ स. अलग करना ☐

ग. देने की क्रिया अथवा भाव किस कारक का शाब्दिक अर्थ है?

अ. करण ☐ ब. संबोधन ☐ स. संप्रदान ☐

घ. व्याकरण का प्रथम कारक कौन-सा है?

अ. कर्म ☐ ब. संप्रदान ☐ स. कर्ता ☐

ङ. छात्र पुस्तक से पढ़ रहे हैं। वाक्य में रेखांकित शब्द किस कारक को प्रदर्शित कर रहे हैं?

अ. करण ☐ ब. संप्रदान ☐ स. अपादान ☐

4. रेखांकित कारक-चिह्नों के भेद लिखिए–

क. हे प्रभु! रक्षा कीजिए।

....

ख. राहुल साइकिल से गिर गया।

....

ग. राम ने रावण को मारा।

....

घ. किताबें मेज़ पर रखी हैं।

....

ङ. बच्चे के हाथ से गुब्बारा उड़ गया।

....

5. निम्नलिखित वाक्यों में उचित परसर्ग लगाकर सार्थक वाक्य बनाइए-

क. अलमारी कपड़े रखे हैं।

....

ख. राजा घोड़ा सहलाया।

....

ग. राजेश पतंग उड़ाई।

....

घ. कृष्ण ने कंस मारा।

....

ङ. राम साइकिल गिर गया।

....

च. राधा बाँसुरी ले ली।

....

छ. राधिका गाँव दूर था।

....

सर्वनाम

पाठ योजनाः 19

आज की अवधारणा

छात्रों को सर्वनाम के बारे में बताना तथा उसके सभी भेदों से परिचित कराते हुए उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हों होंगे–

- सर्वनाम के बारे में सोचने और विचार करने में,
- वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को पहचान कर उसका भेद पहचानने में,
- सर्वनाम के भेदों के बारे में उत्सुकता पैदा करना तथा जानकारी देना।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में सर्वनाम शब्दों की उपयोगिता समझाना।
- सर्वनाम के सभी भेदों की अलग-अलग उपयोगिता को समझाना।
- पुरुषवाचक सर्वनाम के तीनों भेदों से अवगत कराना।
- निश्चयवाचक व अनिश्चयवाचक तथा संबंधवाचक व निजवाचक सर्वनाम में अंतर स्पष्ट करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'सर्वनाम' शब्दों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके उसके भेदों के उदाहरण बनाने हेतु इस दिशा में उन्हें अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को बताएँ कि जिस प्रकार सर्वनाम शब्द संज्ञा के स्थान पर आकर हमारी भाषा को सुंदरता व स्पष्टता प्रदान करता है, उसी प्रकार प्रकृति भी हमारी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते हुए हमें हवा, पानी, पेड़-पौधे आदि चीज़ें देती है। प्रकृति द्वारा मिले इन उपहारों के प्रति हमारी क्या ज़िम्मेदारी है?

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध सर्वनाम संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर सर्वनाम शब्दों का रुपांतर तथा सर्वनाम शब्दों की शब्दावली संबंधित वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में सर्वनाम व उसके भेदों की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
उद्देश्य: छात्रों को सर्वनाम के संबंध में बताकर उसके भेदों के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'सर्वनाम' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को विशेषण के संबंध में बताना तथा उसके भेदों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम दो शब्दों के मेल से बना है– सर्व (सबका) + नाम (संज्ञा)। • इनका प्रयोग संज्ञा शब्दों की पुनरावृति को रोकता है तथा इनके प्रयोग से भाषा सुंदर तथा प्रभावशाली हो जाती है। • जान लीजिए की बार-बार एक नाम लिखने या एक ही बात को दोहराने से भाषा का प्रभाव घट जाता है। • सर्वनाम के छह भेद होते हैं– पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, संबंध वाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा निजवाचक सर्वनाम। • छात्रों को सर्वप्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम की परिभाषा उदाहरण सहित स्पष्ट करके बताएँ कि इसके भी तीन भेद होते हैं– उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम तथा अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम। • अध्यापक उन्हें स्पष्ट करने के बाद छात्रों को एक-एक करके निश्चयवाचक और संबंधवाचक सर्वनाम को उदाहरण सहित स्पष्ट करें व छात्रों को सभी भेदों से संबंधित चार-चार वाक्य बनाकर दिखाने को कहें।

	• उन्हें बताएँ कि सर्वनाम भी संज्ञा शब्दों की भाँति विकारी होते हैं। इनके कारकीय रूप भी बनते हैं लेकिन सर्वनामों में संबोधन के रूप नहीं होते। • फिर उन्हें सर्वनाम शब्दों का रुपांतर समझाएँ और बताएँ कि सर्वनाम के रूप परिवर्तन के दो ही कारण हैं– वचन, संबंधकारक। एकवचन तथा बहुवचन दोनों ही रूपों में सर्वनामों का प्रयोग होता है। जान लें कि किसी को पुकारने के लिए संज्ञा (नाम) का प्रयोग होता है न कि सर्वनाम का, अतः सर्वनाम में संबोधन कारक नहीं होता।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

क. निश्चयवाचक तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम में क्या अंतर है?

....

....

ख. निश्चयवाचक सर्वनाम के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

ग. पुरुषवाचक सर्वनाम के सभी भेदों को बताइए।

....

....

घ. संबंधवाचक सर्वनाम से आप क्या समझते हैं?

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों में सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगाइए–

क. सर्वनाम विशेषण के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। ☐

ख. पुरुषवाचक सर्वनाम के 2 भेद हैं। ☐

ग. निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम कहलाता है। ☐

घ. जो-सो, जैसा-वैसा आदि शब्दों का प्रयोग संबंधवाचक सर्वनाम में किया जाता है।

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखिए-

क. तुम ही हमारे अध्यापक हैं।

....

....

ख. हमें तुम्हें याद करता है।

....

....

ग. माँ ने कौन बनाया है?

....

....

घ. मैं अपनी रोटी तुम्हें बनाऊँगी।

....

....

ङ. मेरे को अभी पढ़ना है।

....

....

4. कोष्ठक में से उचित सर्वनाम शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. .... तुम्हें याद करता है। (वह/वे)

ख. .... मुझे अपने बारे में कल बताया था। (उसने/यह)

ग. .... माता-पिता का कहना मानना चाहिए। (मैं/हमें)

घ. .... हमारे घर कब आएँगे? (तुम/आप)

ङ. आज .... सब एक साथ खाना खाएँगे। (तुम/हम)

5. सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कीजिए और उनके भेद भी लिखिए-

क. हम पिकनिक पर जा रहे हैं। ....

ख. पेड़ के नीचे कुछ गिरा है। ....

ग. मैं अपनी पुस्तकें स्वयं पढ़ूँगा। ....

घ. गौरवी कहाँ चली गई? ....

ङ. पानी में कुछ गिर गया है। ....

च. कोई आपसे मिलने आया है। ....

विशेषण

पाठ योजनाः 20

आज की अवधारणा

छात्रों को विशेषण के बारे में बताना तथा विशेष्य व विशेषण में अंतर बताना। विशेषण के सभी भेदों से परिचित कराकर अंतर स्पष्ट करना तथा प्रविशेषण के बारे में बताना। विशेषणों की तुलना, विशेषण शब्दों के रुपांतर तथा विशेषणों की रचना के बारे में बताना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि विशेषण शब्द विशेषता को बताते हैं, जिन संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- विशेषण के बारे में सोचने और विचार करने में,
- विशेष्य व प्रविशेषण के बीच अंतर जानने में,
- वाक्यों में से विशेषण शब्दों की भेद के अनुसार पहचान करने में,
- तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीनों अवस्थाओं को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को विशेषण शब्दों की उपयोगिता समझाना।
- विशेषण के सभी भेदों को उदाहरण सहित बताना।
- विशेषण की तीनों अवस्थाओं से परिचित कराना।
- विशेषणों की रचना कितने प्रकार से होती है? यह जानना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में विशेषण विषय के प्रति कौतुहल उत्पन्न करना तथा अपने आस-पास की चीज़ों को देखकर विशेषण शब्दों की सूची तैयार करने के लिए प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

छात्रों को किसी भी चीज की विशेषता बताते हुए एक विज्ञापन तैयार करने को कहें। उसके बाद विशेषता बताने वाले शब्दों को छाँटकर लिखकर लाने को कहिए।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध विशेषण संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर विशेषण के भेदों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में विशेषण की अवस्थाएँ व भेदों की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'विशेषण' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को विशेषण के संबंध में बताना तथा उसके भेदों, अवस्थाएँ तथा रचना के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, विशेषण के विषय में आप जानते हैं कि ये संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता का बोध कराते हैं। जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं। • उन्हें बताएँ कि कुछ शब्द विशेषण की भी विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। विशेषण के चार भेद होते हैं– गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संकेतवाचक / सार्वनामिक विशेषण। • गुणवाचक विशेषण किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण-दोष, रूप-रंग, आकार, स्थान, काल, स्वाद, दिशा आदि का बोध कराते हैं, जबकि संख्यावाचक विशेषण में किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषताओं का बोध होता है। • छात्रों को गुणवाचक व संख्यावाचक विशेषण उदाहरण सहित स्पष्ट करें फिर उन्हें बताएँ कि परिमाणवाचक विशेषण से माप-तोल संबंधी विशेषताओं का बोध होता है। वहीं संज्ञा से पहले लगकर उसकी विशेषता बताने वाले सर्वनाम सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। उन्हें यह दोनों भेद भी उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

	• जब छात्र विशेषण के भेदों से परिचित हो जाएँ उसके बाद उन्हें विशेषण की तीनों अवस्थाओं से अवगत कराएँ। तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं– मूलावस्था, उत्तरावस्था व उत्तमावस्था। • उदाहरण सहित तीनों अवस्थाओं को स्पष्ट करने के बाद बताएँ कि विशेषण में लिंग, वचन, कारक के कारण विकार आते हैं। • ध्यान रखें कि हिंदी में तीन प्रकार के विशेषण होते हैं– मूल विशेषण, उपसर्ग अथवा प्रत्यय से निर्मित, समास द्वारा निर्मित। • अध्यापक उन्हें उदाहरण सहित स्पष्ट करके सभी भेदो से संबंधित वाक्य बनाकर लाने को कहें तथा श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखकर उनकी दोनों-तीनों अवस्थाएँ लिखकर लाने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. विशेष्य तथा विशेषण किन्हें कहते हैं?

....

....

ख. परिमाणवाचक विशेषण के दोनों भेदों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

ग. सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अंतर कीजिए।

....

....

....

घ. मूलावस्था, उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था में भेद कीजिए।

....

....

....

2. विशेषण-विशेष्य का मिलान कीजिए-

	विशेषण		विशेष्य
क.	बनारसी	i)	सिपाही
ख.	साहसी	ii)	गुलाल
ग.	तीखी	iii)	कहानी
घ.	तिरंगा	iv)	बालक
ङ.	लाल	v)	मिर्च
च.	वीर	vi)	चाट
छ.	मज़ेदार	vii)	झंडा
ज.	हरी	viii)	साड़ी
झ.	चौकोर	ix)	कमरा
ञ.	चटपटी	x)	मटर

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों को विशेषण रूप में बदलकर वाक्य पूरे कीजिए–

क. धतूरे का बीज .... होता है। (कड़वाहट)

ख. श्रेष्ठा ने .... पुस्तक पढ़ ली। (पूरे)

ग. पृथ्वी की .... सतह गर्म हो रही है। (भीतर)

घ. सिद्धार्थ .... टोपी पहनकर आया है। (सफेदी)

ङ. माँ ने .... दलिया बनाया है। (मिठास)

च. .... समारोह का आयोजन हुआ। (भव्यता)

4. दिए गए वाक्यों में विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए और उचित भेद पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	पुस्तकालय में दस हज़ार पुस्तकें हैं।	परिमाणवाचक	संख्यावाचक
ख.	सफ़ेद ताजमहल को मैं देखती ही रह गई।	गुणवाचक	सार्वनामिक
ग.	कुछ विद्यार्थी यहाँ नहीं आए।	परिमाणवाचक	संख्यावाचक
घ.	कृष्ण साँवले रंग के थे।	गुणवाचक	सार्वनामिक
ङ.	विशाल सभा भवन में कार्यक्रम हुआ।	संख्यावाचक	गुणवाचक
च.	मैंने अब काफ़ी यात्रा कर ली।	संख्यावाचक	परिमाणवाचक

5. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाइए-

क.	स्वदेश	–	....	च.	दिन	–	....
ख.	पहाड़	–	....	छ.	आदर	–	....
ग.	स्मरण	–	....	ज.	बंगाल	–	....
घ.	भारत	–	....	झ.	प्रेम	–	....
ङ.	रोग	–	....	ञ.	धर्म	–	....

6. निम्नलिखित विशेषण शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

क. काल्पनिक – ....

ख. भयानक – ....

ग. स्वर्गीय – ....

घ. चचेरा – ....

ङ. हार्दिक – ....

च. जोशीला – ....

क्रिया

पाठ योजनाः 21

आज की अवधारणा

छात्रों को क्रिया के बारे में बताना तथा धातु रूप समझाना। कर्म व संरचना के आधार पर क्रिया के सभी भेदों से अवगत कराना तथा इसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि क्रिया वाक्य का अनिवार्य अंग है। प्रत्येक वाक्य में यह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अवश्य विद्यमान होती है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- क्रिया के बारे में सोचने और विचार करने में,
- दोनों आधारों पर क्रिया के भेदों को जानने में,
- प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के नियम को जानने में,
- अकर्मक व सकर्मक क्रिया को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को क्रिया तथा उसके भेदों से अवगत कराना।
- अकर्मक व सकर्मक क्रिया की पहचान के नियम बताना।
- संरचना के आधार पर सभी भेदों-सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया व प्रेरणार्थक क्रिया को समझाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में क्रिया शब्दों के प्रति उत्सुकता उत्पन्न करके उसके प्रत्येक भेद से संबंधित वाक्य बनाने के लिए प्रोत्साहित करना।

गतिविधियाँ

दिए गए रिक्त स्थानों में क्रिया शब्द लिखकर कविता तैयार कीजिए–

चटक .... बागों में कलियाँ,
पंछी .... है रंग रलियाँ।
ग्वाल .... सब गायें लेकर,
बालक .... हैं मन देकर।

महक .... है खूब चमेली,
भौंरे .... जान अकेली।
सूरज ले किरणों की माला,
.........................., सब जग उजाला।
ठंडी हवा .... अति प्यारी
क्या शोभा .... है क्यारी।
पत्ते यों ओस से जड़े ....,
जैसे मोती बिखर पड़े।
दूर .... आलस का डेरा।
मुँह ...., थोड़ा कुछ ....।
फिर .... में ध्यान ....।

अब इस कविता का लयबद्ध गान कीजिए।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध क्रिया संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर सकर्मक व अकर्मक क्रिया पहचान संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में कर्म व संरचना के आधार पर क्रिया भेदों की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'क्रिया' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को काल के संबंध में बताना व भेदों को जानने के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, जो शब्द किसी कार्य के करने, घटित होने या किसी स्थिति का बोध करवाते हों, उन्हें क्रिया कहते हैं। • यह व्यापार–सूचक शब्द है। इससे किसी भी कार्य के करने या घटित होने का बोध होता है। क्रिया प्रत्येक वाक्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अवश्य विद्यमान होती है।

	• उन्हें बताएँ कि क्रिया का मूल रूप 'धातु' कहलाता है जैसे– पढ़, चल, सो, देख, रो, गा, बैठ आदि। • क्रिया के भेदों को दो आधार पर बाँटा जाता है– कर्म के आधार पर तथा संरचना के आधार पर। • कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं– अकर्मक (कर्म रहित क्रिया), सकर्मक (कर्म सहित क्रिया)। अकर्मक व सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पूर्व 'क्या' अथवा 'किसको' लगाकर प्रश्न करना चाहिए तथा उत्तर न मिले तो क्रिया अकर्मक होगी व उत्तर मिल जाए तो क्रिया सकर्मक होगी। • अकर्मक व सकर्मक क्रिया उदाहरण सहित स्पष्ट करने के बाद छात्रों को सकर्मक क्रिया के एककर्मक व द्विकर्मक क्रिया के बारे में बताएँ तथा अपूर्ण क्रिया समझाएँ। • छात्रों को बताएँ संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं– सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया। इन सभी भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करें तथा छात्रों को प्रत्येक भेद से संबंधित दो–दो वाक्य बनाकर दिखाने को कहें। • उन्हें प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के नियमों से अवगत करा कर कुछ मूल शब्दों से प्रेरणार्थक क्रिया बनाने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. क्रिया का रूप किस-किसके अनुसार परिवर्तित होता है?

....

....

ख. अकर्मक तथा सकर्मक क्रिया में अंतर बताइए।

....

....

....

ग. सकर्मक क्रिया की पहचान आप किस प्रकार करेंगे? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

....

घ. द्विकर्मक क्रिया में मुख्य कर्म व गौण कर्म से आप क्या समझते हैं?

....

....

ङ. अपूर्ण क्रिया किसे कहते हैं? इसके भेदों को भी स्पष्ट कीजिए।

....

....

च. प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं?

....

....

छ. नामधातु क्रिया कौन-सी होती हैं?

....

2. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के लिए नामधातु की क्रियाओं पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	दोहरा	–	दोहराव	☐	दोहराना	☐
ख.	आप	–	आपका	☐	अपनाना	☐
ग.	गरम	–	गरमाहट	☐	गरमाना	☐
घ.	हाथ	–	हथियाना	☐	हथियाया	☐
ङ.	बात	–	बतियाँ	☐	बतियाना	☐
च.	शर्म	–	शर्माना	☐	शर्मीला	☐

3. कोष्ठक में दिए गए उचित क्रिया शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

क. कल अतिथि चले ....। (आएँगे/जाएँगे)

ख. श्रेया अपनी सहेली से .... रही है। (बताना/बतिया)

ग. अध्यापक बच्चों को .... हैं। (पढ़ाते/पढ़ाएँगे)

घ. माता जी ने रोटियाँ .... । (बनाएँगी/बनाई)

ङ. मैं आठवीं कक्षा में .... । (पढ़ाऊँगा/पढ़ता हूँ)

च. क्या तुम घर ....। (आओगे/आऊँगा)

4. **निम्नलिखित वाक्यों की संरचना के आधार पर उनके भेदों पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–**

क. श्वेता खेल रही है।	कृदंत क्रिया	संयुक्त क्रिया
ख. पिता जी थककर बैठ गए।	नामधातु क्रिया	पूर्वकालिक क्रिया
ग. माता जी नहाकर पूजा करने लगीं।	नामधातु क्रिया	पूर्वकालिक क्रिया
घ. अध्यापिका बच्चों को पढ़ाती हैं।	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	द्‌वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
ङ. श्याम कहानी पढ़ चुका।	सामान्य क्रिया	संयुक्त क्रिया
च. श्रेष्ठा पढ़कर सो गई।	प्रेरणार्थक क्रिया	पूर्वकालिक क्रिया

5. **निम्नलिखित वाक्यों के सामने लिखें कि क्रिया अकर्मक है या सकर्मक–**

क. दिन निकल रहा है। ....

ख. माता जी खाना पकाती हैं। ....

ग. बच्चे बहुत देर तक हँसते रहे। ....

घ. धोबी कपड़े धो रहा है। ....

ङ. बच्चे किताबें लाए। ....

च. दादी ने माँ से दवा मँगवाई। ....

6. **प्रेरणार्थक क्रियाओं पर गोला लगाए–**

क. कहलवाना	ङ. पहलवान	झ. पटकवाना
ख. रखना	च. दौड़ना	ञ. खिलवाना
ग. हँसवाना	छ. लिखवाना	ट. सुख
घ. चलवाना	ज. उठवाना	ठ. दुख

7. **निम्नलिखित वाक्यों में से संयुक्त क्रिया छाँटकर लिखिए–**

क. कल रात उसके घर चोरी हो गई।

....

ख. दादी जी घूम चुकीं।

....

ग. मैं खेलना चाहती हूँ।

....

घ. वह राजस्थान चला गया।

....

ङ. वह नहा चुका।

....

च. राखी कहानी सुन चुकी।

....

काल

पाठ योजनाः 22

आज की अवधारणा

छात्रों को काल के बारे में बताना तथा काल के तीनों भेदों से परिचित कराना। उन्हें भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यत् काल के भेदों से अवगत कराना तथा उनके बीच अंतर स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं काल से हमें क्रिया के होने के समय का बोध होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- काल के बारे में सोचने और विचार करने में,
- वाक्यों को ध्यानपूर्वक सुनकर उनका भेद पहचानने में,
- विभिन्न भेदों के उदाहरणों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को काल शब्द का महत्व व उपयोगिता बताना।
- भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यत् काल के बारे में समझाना।
- काल के भेदों के भेदों से परिचित कराकर उदाहरण सहित समझाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में काल के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक कुछ क्रिया शब्दों की परचियाँ बनाएँ तथा एक–एक छात्र को बुलाकर उन परचियों में से एक परची उठाने को कहें और उस परची में लिखे शब्द से काल के तीनों भेदों से संबंधित वाक्य बनाकर बोलने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध 'काल' संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर काल के तीनों भेदों के बीच अंतर स्पष्ट करते वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में काल तथा भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यत् काल व उनके भेदों की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'काल' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ–प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों में काल के संबंध में बताना तथा उनके भेदों को जानने के प्रति जिज्ञासु बनाना।	• छात्रों, क्रिया का वह रूप, जो उसके होने के समय का बोध कराता है, उसे 'काल' कहते हैं। • उन्हें बताएँ काल के तीन भेद होते हैं– भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यत् काल। • बीते हुए समय में कार्य के होने का बोध कराने वाला क्रिया रूप भूतकाल कहलाता है। भूतकाल के छह भेद होते हैं– सामान्य भूतकाल, आसन्न भूतकाल, पूर्ण भूतकाल अपूर्ण भूतकाल, संदिग्ध भूतकाल व हेतु–हेतुमद् भूतकाल। • भूत काल के सभी भेदों को छात्रों को उदाहरण सहित समझाएँ तथा फिर वर्तमान काल के बारे में बताएँ कि इससे चल रहे समय में कार्य के होने का बोध होता है। इसके तीन भेद होते हैं– सामान्य वर्तमान काल, संदिग्ध वर्तमान काल, अपूर्ण वर्तमान काल। इनके तीनों भेदों को स्पष्ट करके प्रत्येक भेद से संबंधित दो-दो वाक्य बनाकर लाने को कहें। • उसके बाद उन्हें बताएँ कि आने वाले समय में कार्य के होने का बोध कराने वाले क्रिया शब्द भविष्यत् काल कहलाते हैं। • भविष्यत् काल के दो भेद होते हैं–सामान्य भविष्यत् काल व संभाव्य भविष्यत् काल। छात्रों को उदाहरण सहित भविष्यत् काल के दोनों भेदों को स्पष्ट करें। • अंत में छात्रों का श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर उन्हें अपनी कार्य–पुस्तिका में उतारने तथा उनका भेद लिखकर लाने को कहें।

	• अविकारी शब्द का तीसरा भेद समुच्चयबोधक (योजक) है। ये अविकारी शब्द हैं जो दो शब्दों, वाक्य के अंशों और वाक्यों को जोड़ते हैं। • छात्रों को बताएँ कि समुच्चयबोधक के तीन भेद हैं–संयोजक, विभाजक तथा विकल्पसूचक तीनों भेदों को स्पष्ट करें। • तत्पश्चात्, विस्मयादिबोधक शब्द के बारे में बताएँ कि वे अविकारी शब्द जो आश्चर्य, घृणा, शोक, हर्ष आदि मन के भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें 'विस्मयादिबोधक शब्द' कहते हैं। • विभिन्न भावों को प्रदर्शित करने वाले सूचक शब्दों से उन्हें परिचित कराना। • अंततः उन्हें निपात से अवगत कराते हुए बताएँ कि वे अविकारी पद जो वाक्य में किसी शब्द के बाद बात को बल प्रदान करने के लिए लगाए जाते हैं, 'निपात' कहलाते हैं।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. सामान्य भविष्यत् काल तथा संभाव्य भविष्यत् काल में अंतर कीजिए।

....

....

....

ख. हेतु-हेतुमद् भूतकाल किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

....

....

ग. आसन्न भूतकाल किसे कहते हैं?

....

....

घ. पूर्ण तथा अपूर्ण भूतकाल में भेद कीजिए।

....

....

....

2. निर्देशानुसार क्रिया-रूप से रिक्त स्थान भरिए-

क. हमने मैच ....। ('खेल' का सामान्य भूत)

ख. मेरे पिता जी कल ....। ('लिखना' का संदिग्ध वर्तमान)

ग. स्नेहा गाना ....। ('खाना' का पूर्ण भूत)

घ. विद्यार्थी ....। ('गाना' का सामान्य वर्तमान)

ङ. उसने खाना ....। ('उड़ना' का अपूर्ण वर्तमान)

च. पक्षी आसमान में ....। ('जाना' का सामान्य भविष्यत्)

3. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाओं को रेखांकित करके उनके काल लिखिए-

क. महिलाएँ पुरुषों के बराबर कार्य कर रही हैं।

....

ख. वायुयान लंदन पहुँच चुका होगा।

....

ग. यदि चाचा जी आए तो मेरे लिए उपहार अवश्य लाएँगे।

....

घ. भय से मेरा शरीर काँप गया।

....

ङ. अविष्ठा लिख रही होगी।

....

च. शायद आज वर्षा होगी।

....

छ. मारिषा एयर होस्टेस बनना चाहती है।

....

4. निम्नलिखित क्रिया शब्दों से तीनों कालों की वाक्य-रचना कीजिए-

क. जाना - ....

....

....

ख. सुनाना - ....

....

....

ग. सोना – ....

....

....

घ. करना – ....

....

....

5. निम्नलिखित वाक्यों में उचित शब्द लिखकर खाली जगह भरिए–

क. क्रिया के जिस रूप से बीते समय में कार्य का साधारण रूप से होना प्रदर्शित हो, ... भूतकाल कहलाता है।

ख. 'उसने पुस्तक पढ़ ली होगी' वाक्य .... भूतकाल का उदाहरण है।

ग. 'रतिका विद्यालय जा रही है' वाक्य में .... वर्तमान काल है।

घ. जब किसी कार्य का भूतकाल में होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करे, उसे .... भूतकाल कहते हैं।

वाच्य

पाठ योजना: 23

आज की अवधारणा

छात्रों को वाच्य के बारे में बताना तथा उसके भेदों के बारे में बताना। कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य में उदाहरण द्वारा अंतर स्पष्ट करके समझाना तथा वाच्य परिवर्तन से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र 'क्रिया' विषय से भली-भाँति परिचित हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- वाच्य के बारे में सोचने और विचार करने में,
- वाच्य के तीनों भेदों के बारे में जानने में,
- वाच्य परिवर्तन कैसे किया जाता है? यह जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को 'वाच्य' का महत्व व उपयोगिता बताना।
- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य व भाववाच्य में अंतर स्पष्ट करके समझाना।
- वाच्य परिवर्तन के नियमों से उदाहरण सहित अवगत कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'वाच्य' विषय के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

चित्र देखकर 20–30 शब्दों में चित्र-वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

आपने चित्र-वर्णन में वाच्य के किन-किन भेदों का प्रयोग किया है, उन्हें रेखांकित करके बताइए–

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध वाच्य संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर वाच्य परिवर्तन संबंधी जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में वाच्य व उसके भेदों को दर्शाते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'वाच्य' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को वाच्य के संबंध में बताना तथा वाच्य परिवर्तन के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना।	• छात्रों, 'वाच्य' क्रिया के उस रूपांतरण को कहते हैं, जिससे यह पता चलता है कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म या भाव है। • वाच्य के तीन भेद होते हैं– कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य। इन तीनों भेदों को एक–एक उदाहरण सहित स्पष्ट करके समझाइए। • उन्हें पहले कर्तृवाच्य को परिभाषित करने के बाद बताएँ कि इसमें कर्ता ही वाक्य का केंद्रबिंदु होता है। इसमें लिंग, वचन, क्रिया कर्ता के अनुसार होती है तथा कर्तृवाच्य की क्रिया अकर्मक तथा सकर्मक दोनों ही प्रकार की हो सकती है। • अब कर्मवाच्य के बारे में जानें कि इसमें वाक्य का केंद्रबिंदु कर्म होता है। इसमें क्रिया का लिंग, वचन तथा पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होता है। कर्ता के साथ इसमें 'के द्वारा', 'से' शब्दों का प्रयोग होता है। ध्यान रखें इसमें क्रिया सदैव सकर्मक होती है।

	• भाववाच्य में क्रिया सदैव एकवचन, पुल्लिंग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है। जान लें भाववाच्य की क्रिया मुख्य रूप से असमर्थता या अशक्तता के अर्थ में प्रयुक्त होती है तथा आज्ञा प्राप्त करने के अर्थ में भाववाच्य की क्रिया प्रयुक्त होती है। • अंततः उन्हें वाच्य परिवर्तन विस्तारपूर्वक समझाएँ। उसके बाद श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखें तथा उनके आगे वाच्य लिखकर निर्देशानुसार उनका वाच्य परिवर्तन करके लाने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. वाच्य से आप क्या समझते हैं?

....

....

ख. कर्तृवाच्य को परिभाषित कीजिए।

....

....

ग. भाववाच्य एवं कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य किस प्रकार बनाया जाता है? दो नियम बताइए।

....

....

....

....

घ. आप कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में किस प्रकार परिवर्तित करेंगे?

....

....

....

2. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए–

क. बच्चा रोता है। (भाववाच्य)

....

ख. शबनम द्वारा खाना बनाया गया। (कर्मवाच्य)

....

ग. नानी जी चल नहीं सकती। (भाववाच्य)

....

घ. बच्चों से खेला जाएगा। (कर्तृवाच्य)

....

ङ. लड़कियाँ नृत्य करती हैं। (कर्मवाच्य)

....

3. निम्नलिखित वाक्यों के आगे वाच्य का नाम लिखिए–

क. बंदरों द्वारा पेड़ से नीचे उतरा गया।

....

ख. अध्यापिका बच्चों को पढ़ाती है।

....

ग. सोमेश के द्वारा निबंध लिखा जाता है।

....

घ. तेंदुआ तेज़ भागा।

....

ङ. मुझसे चला नहीं जाता।

....

च. दूध नहीं पीया जा रहा था।

....

छ. घायल बिस्तर से नहीं उठता।

....

4. वाक्यों के आधार पर उचित वाच्य भेद पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	हाथी चिंघाड़ते हैं।	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
ख.	पक्षियों द्वारा पेड़ पर बैठा गया।	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
ग.	मोहन क्रिकेट खेलता है।	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
घ.	हम नहीं चल सकते।	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
च.	मीषा से पढ़ा नहीं जाता।	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
छ.	रोहित से साइकिल चलाई जाती है।	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य

अविकारी शब्द (अव्यय)

पाठ योजनाः 24

आज की अवधारणा

छात्रों को अविकारी शब्द के बारे में बताना तथा उसके भेदों से परिचित कराना। अर्थ व रचना के आधार पर क्रियाविशेषण के भेदों को स्पष्ट करना तथा संबंधबोधक व समुच्चयबोधक के बीच अंतर स्पष्ट करके समझाना। विस्मयादिबोधक व निपात के बारे में बताना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, काल, पुरुष आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं आता, उन्हें 'अव्यय' या 'अविकारी शब्द' कहते हैं। वे अविकारी शब्दों के भेदों से परिचित हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- अविकारी शब्दों के भेदों के बारे में जानने में,
- क्रियाविशेषण के सभी भेदों के बीच अंतर स्पष्ट करने में,
- वाक्यों में से क्रियाविशेषण व संबंधबोधक पहचानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को अर्थ व रचना के आधार पर क्रियाविशेषण के भेदों से अवगत कराना।
- संबंधबोधक व समुच्चयबोधक शब्दों की जानकारी देना।
- विस्मयादिबोधक व निपात शब्दों को समझाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'अविकारी शब्द (अव्यय) के प्रति रुचि उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में समुच्चयबोधक शब्द लिखकर अनुच्छेद पूरा कीजिए–

होली का त्योहार हमारे देश के सभी हिस्सों में बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है .... वृंदावन में यह त्योहार विशेष उत्साह के साथ मनाया जाता है .... वहाँ यह त्योहार भगवान कृष्ण अपने भक्तों, गोपियों .... ग्वालों के साथ मनाते थे। पूरे फाल्गुन मास में वहाँ मिठाई, पकवान, रंग-गुलाल .... मौज-मस्ती चलती रहती है। खासकर बच्चों

को यह त्योहार बहुत पसंद है .... ज़्यादातर होली के आस-पास ही सबकी परीक्षाएँ होती हैं .... थोड़ी परेशानी होती है .... खेलने की इच्छा रखने वाले किसी भी तरह खेल लेते हैं।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध 'अविकारी शब्द' संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अविकारी शब्द के भेदों संबंधी जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में अविकारी शब्द के भेदों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'अविकारी शब्द' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों में अविकारी शब्द के भेदों के बारें में बताकर उनके प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, हिंदी में अविकारी शब्द पाँच प्रकार के होते हैं– क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक व निपात। • क्रिया की विशेषता बताने वाले अविकारी शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं। अर्थ व रचना के आधार पर क्रियाविशेषण के भेद किए जाते हैं। • अर्थ के आधार पर क्रियाविशेषण के चार भेद हैं– कालवाचक क्रियाविशेषण, स्थानवाचक क्रियाविशेषण, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण व रीतिवाचक क्रियाविशेषण। रचना के आधार पर क्रियाविशेषण के दो भेद हैं– मूल क्रियाविशेषण व यौगिक क्रियाविशेषण। • इन सभी भेदों को स्पष्ट करने के बाद छात्रों को बताएँ कि वे अविकारी शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ जुड़कर वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका संबंध बताते हैं, वे संबंधबोधक कहलाते हैं। इसके तीन भेद हैं– प्रयोग के आधार पर, व्युत्पत्ति के आधार पर तथा अर्थ के आध ार पर। इन्हें उदाहरण सहित छात्रों को समझाएँ।

	• उसके बाद छात्रों को समुच्चयबोधक उदाहरण सहित परिभाषित करते हुए उसके भेदों से परिचित कराएँ और कुछ वाक्य लिखकर उसमें से छात्रों को समुच्चयबोधक शब्द छाँटकर रेखांकित करने को कहें। • जो अविकारी शब्द मन के भावों आश्चर्य, क्रोध, घृणा, हर्ष, शोक, प्रशंसा आदि को प्रकट करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक शब्द कहते हैं। ये वाक्य के प्रारंभ में लगते हैं। इन शब्दों के बाद '!' चिह्न का प्रयोग होता है, जिसे विस्मयादिबोधक चिह्न कहते हैं। • छात्रों से अलग–अलग स्थितियों में आने वाले मन के भावों के बारे में पूछें तत्पश्चात् उन्हें निपात शब्दों के बारे में बताएँ कि ये वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण या क्रियाविशेषण के साथ बल देने के लिए लगाए जाते हैं।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. क्रियाविशेषण तथा संबंधबोधक में अंतर बताइए।

....

....

....

ख. रचना के आधार पर क्रियाविशेषण के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

ग. निपात किसे कहते हैं?

....

....

घ. विस्मयादिबोधक अव्यय किन्हें कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

2. **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाविशेषण शब्दों को चुनकर लिखिए तथा उनके भेद भी लिखिए–**

	शब्द	भेद का नाम
क. तुम विद्यालय अवश्य जाओ।	....	....
ख. वह भीतर चली गई।	....	....
ग. धीरे-धीरे चलो।	....	....
घ. अविका बहुत बोलती है।	....	....
ङ. हम विद्यालय कल जाएँगे।	....	....
च. तुम कम खाओ।	....	....

3. **निम्नलिखित वाक्यों को क्रियाविशेषण या विशेषण से मिलाइए–**

क. रचना ने अच्छा बोला।	क्रियाविशेषण	घ. सृष्टि अच्छी लड़की है।
ख. कम खाना खाया करो।		ङ. बच्चे बहुत उछल-कूद करते हैं।
ग. अरुण थोड़ा ही खा पाया।	विशेषण	च. रमणिता के पास चार केले हैं।

4. **निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषण शब्दों को रेखांकित करके उनके उचित भेद पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–**

क. फल-सब्जियाँ अधिक खाओ।	परिमाणवाचक	☐	स्थानवाचक	☐
ख. अश्मिका ध्यानपूर्वक सुनती है।	परिमाणवाचक	☐	रीतिवाचक	☐
ग. बाहर धूप निकली है।	कालवाचक	☐	स्थानवाचक	☐
घ. मधु इधर-उधर घूम रही है।	परिमाणवाचक	☐	स्थानवाचक	☐
ङ. वह अभी चली जाएगी।	कालवाचक	☐	रीतिवाचक	☐

5. **बॉक्स में लिखे शब्दों को छाँटकर उनके शीर्षक के सामने लिखिए–**

प्रतिदिन	बेशक	भीतर	नित्य	आजकल	ठीक
थोड़ा-थोड़ा	सदैव	इधर	कम	दाहिने	उदास
दिनभर	बाहर	ध्यानपूर्वक	अवश्य	शायद	

कालवाचक	**स्थानवाचक**	**रीतिवाचक**	**परिमाणवाचक**
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

6. **निम्नलिखित संबंधबोधक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

क. के पास – ....

ख. के बीच – ....

ग. की ओर – ....

घ. के ऊपर – ....

ङ. के उपरांत – ....

च. की तरह – ....

7. निम्नलिखित वाक्यों में से संबंधबोधक अव्यय छाँटकर लिखिए-

क. मेरा विद्यालय मेरे घर के पास है। ....

ख. भैया आसमान की ओर देख रहे थे। ....

ग. मैं परिवार सहित देश भ्रमण करने गई। ....

घ. आप घर के अंदर आ जाइए। ....

ङ. भूख के मारे मेरा बुरा हाल है। ....

च. वह कई वर्षों तक विदेश में रहा। ....

8. निम्नलिखित वाक्यों में समुच्चयबोधक शब्दों को रेखांकित करके उनके उचित भेद पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क. राकेश इस तरह भागा मानो शेर आ गया।

संकेतवाचक ☐ स्वरूपवाचक ☐ कारणवाचक ☐

ख. मन लगाकर पढ़ो ताकि कक्षा में प्रथम आओ।

स्वरूपवाचक ☐ उद्देश्यवाचक ☐ संकेतवाचक ☐

ग. रवि और राधिका पति–पत्नी हैं।

संयोजक ☐ विरोधसूचक ☐ परिणामसूचक ☐

घ. आप चाय पिएँगे या कॉफी।

विकल्पसूचक ☐ संयोजक ☐ विरोधसूचक ☐

ङ. भूख लग रही थी इसलिए मैंने खाना खा लिया।

विरोधसूचक ☐ कारणवाचक ☐ परिणामसूचक ☐

9. शब्द पढ़िए और सही नामों से मिलाइए–

क. क्योंकि		च. और
ख. ताकि	**व्यधिकरण समुच्चयबोधक**	छ. मानो
ग. या		ज. परंतु
घ. एवं	**समानाधिकरण समुच्चयबोधक**	छ. तथा
ङ. अर्थात्		ज. तो

10. निम्नलिखित वाक्यों में से निपात शब्द छाँटकर लिखिए–

क. एलेक्स ने आने की ख़बर तक नहीं दी। ....

ख. राम-सा पुत्र पाकर वह धन्य हो गई। ....

ग. तुम्हें मात्र यही कार्य करना है। ....

घ. आप भी कमाल करते हैं। ....

ङ. मैं कल ही जाऊँगी। ....

च. यह तो कोई काम की बात नहीं है। ....

11. निम्नलिखित निपात शब्दों से वाक्यों का निर्माण कीजिए–

क. ही – ....

ख. भर – ....

ग. केवल – ....

घ. मत – ....

ङ. लगभग – ....

12. सुमेलित कीजिए–

क. संबोधनबोधक	i) उफ़!
ख. भयबोधक	ii) बहुत अच्छा!
ग. स्वीकृतिबोधक	iii) अजी!
घ. शोकबोधक	iv) ओह!
ङ. आशीर्वादबोधक	v) हाँ!
च. अनुमोदनबोधक	vi) जीते रहो!

पद-परिचय

पाठ योजनाः 25

आज की अवधारणा

छात्रों को पद-परिचय का अर्थ बताते हुए शब्द के आठ भेदों के आधार पर उनके पद-परिचय से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तो वह पद कहलाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे-

- पद-परिचय से क्या तात्पर्य है?
- शब्द के आठ भेद कौन-से हैं जिनके आधार पर पद-परिचय दिया जाता है?
- पद-परिचय देने के लिए किन-किन बातों को बताना आवश्यक है?

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है-

- पद-परिचय को परिभाषित करते हुए शब्द के उन आठ भेदों के नाम बता सकेंगे जिनके आधार पर पद-परिचय दिया जाता है।
- विभिन्न वाक्यों में पूछे गए पदों का पद-परिचय दे सकेंगे।
- पद-परिचय देते समय आवश्यक बातों को ध्यान में रख सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में विभिन्न शब्दों के आधार पर पद-परिचय देने हेतु जिज्ञासा उत्पन्न करना, ताकि वे इन्हें भली-भाँति समझ सकें।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर दें तथा उनमें उन पदों को रेखांकित करें जिनका पद-परिचय छात्रों द्वारा दिया जाएगा। अब एक-एक कर वाक्य लेते हुए सभी छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए उन्हें वाक्यों में आए रेखांकित पदों के पद-परिचय देने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में पद-परिचय संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर पद-परिचय की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- शब्द के आठ भेदों के आधार पर इंटरनेट पर पद-परिचय संबंधी लिंक।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'पद-परिचय' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : पद-परिचय के बारे में बताते हुए इसके सभी भेदों को समझने की योग्यता विकसित करना।	• छात्रों को बताएँ कि पद-परिचय से तात्पर्य वाक्य में आए पदों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण आदि) का व्याकरणिक परिचय देने से है। इसके माध्यम से यह जाना जा सकता है कि वाक्य में प्रयुक्त पद तथा उसका उपभेद क्या है। • उन्हें बताएँ कि शब्द के आठ भेदों के आधार पर शब्दों का पद-परिचय दिया जाता है, जो हैं- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, संबंध बोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक। • एक-एक करके सभी भेदों को स्पष्ट करते हुए बताएँ कि संज्ञा का पद-परिचय देते समय संज्ञा के भेद, लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया आदि अन्य पदों से संज्ञा का संबंध आदि बातों का वर्णन किया जाता है। • सर्वनाम के पद-परिचय में सर्वनाम का भेद, लिंग, वचन, कारक, संबंध तथा पुरुष का वर्णन किया जाता है। • विशेषण के पद-परिचय में विशेषण का भेद, लिंग, वचन, अवस्था, विशेष्य आदि के बारे में बताया जाता है। • क्रिया का पद-परिचय देते समय क्रिया का भेद, पुरुष, लिंग, वचन, काल एवं वाच्य के बारे में बताया जाता है।

	• क्रियाविशेषण का पद-परिचय देते समय उसका भेद तथा उस क्रिया का निर्देश, जिसकी विशेषता बताई जा रही हो, के बारे में बताया जाता है। • संबंधबोधक का पद-परिचय देते समय उसका भेद तथा संबंध रखने वाले शब्दों का वर्णन किया जाता है। • समुच्चयबोधक के पद-परिचय में उसके भेद (समानाधिकरण, व्यधिकरण) तथा इनके भी भेदों के बारे में जानकारी दी जाती है। • विस्मयादिबोधक का पद-परिचय देते समय जिस भाव को अभिव्यक्त किया गया है जैसे-आश्चर्य, घृणा, क्रोध, हर्ष, विस्मय, भय आदि का निर्देश दिया जाता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित वाक्यों का पद-परिचय दीजिए–

क. साम्येश आठवीं कक्षा में पढ़ता है।

....

....

ख. वाह! क्या खूब खेला।

....

....

ग. घोड़ा तेज़ दौड़ता है।

....

....

घ. नीतिका अच्छी लड़की है।

....

....

च. अच्छे बच्चे बड़ों का कहना मानते हैं।

....

....

2. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय लिखिए–**

क. सोनी <u>हँसती</u> है।

....

ख. <u>काला</u> घोड़ा दौड़ रहा है।

....

ग. आशा <u>की अपेक्षा</u> लतिका गंभीर स्वभाव की है।

....

घ. <u>मज़दूर</u> मिट्टी <u>खोद रहा</u> है।

....

ङ. <u>मीठी दही खा</u> लीजिए।

....

च. <u>गाय दूध</u> देती है।

....

छ. <u>धीरे-धीरे</u> सब ठीक हो जाएगा।

....

3. **रचनात्मक गतिविधि–**

अपने एक दिन की दिनचर्या लिखिए तथा उसमें से पाँच वाक्य चुनकर उनका पद-परिचय दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

वाक्य-विचार

पाठ योजना: 26

आज की अवधारणा

छात्रों को वाक्य के बारे में बताना तथा वाक्य के अंग-उद्देश्य व विधेय को समझाना। पदबंध व उसके प्रकारों से अवगत कराना। वाक्य के भेद व वाक्य परिवर्तन समझाना तथा वाक्य संश्लेषण से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि शब्दों के व्यवस्थित एवं सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे-

- वाक्य व उसके अंगों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- पदबंध क्या है, उसके बारे में जानने में,
- रचना व अर्थ के आधार पर वाक्य के भेदों के नाम जानने में,
- वाक्य संश्लेषण की प्रक्रिया को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- उद्देश्य व विधेय को समझाना।
- पदबंध के पाँचों प्रकार से अवगत कराना।
- वाक्य के सभी भेदों को विस्तारपूर्वक समझाना।
- वाक्य परिवर्तन की जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'वाक्य-विचार' पाठ के प्रति उत्सुकता उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखें तथा छात्रों को उन्हें अपनी कार्य-पुस्तिका में उतारकर मिश्रित व संयुक्त वाक्य में परिवर्तन करके लिखकर लाने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध 'वाक्य-विचार' संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर वाक्य परिवर्तन व वाक्य संश्लेषण संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में वाक्य के अंग व भेदों की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए बताएँ कि आज नए अध्याय 'वाक्य-विचार' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को वाक्य के बारे में बताना तथा वाक्य परिवर्तन व भेदों के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, जो शब्द-समूह सार्थक है, व्याकरणिक नियमानुसार व्यवस्थित है और अपना पूर्ण आशय स्पष्ट करने में समर्थ है, उसे 'वाक्य' कहते हैं। • अर्थ की दृष्टि से वाक्य के छह अनिवार्य तत्व हैं-सार्थकता, अविच्छिन्नता, योग्यता, पूर्णता, मेल और पदक्रम। • इन छह तत्वों को विस्तारपूर्वक समझाकर अध्यापक वाक्य के अंग के बारे में बताएँ। वाक्य के दो अंग होते हैं-उद्देश्य और विधेय। • वाक्य में जिस व्यक्ति अथवा वस्तु के विषय में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं तथा वाक्य में उद्देश्य (कर्ता) के विषय में जो भी कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं। • अध्यापक उदाहरण सहित उद्देश्य व विधेय समझाकर श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखें तथा छात्रों को उद्देश्य और विधेय अलग-अलग करके लिखकर लाने को कहें। साथ ही साथ उन्हें कर्ता व कर्म तथा उनका विस्तार भी समझाएँ।

	• अब पदबंध के बारे में बताएँ कि वाक्य में जब एक से अधिक पद मिलकर किसी व्याकरणिक इकाई जैसे-संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण आदि का कार्य करते हैं, तब वह बँधी हुई सार्थक भाषिक इकाई 'पदबंध' कहलाती है। • पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं-संज्ञा पदबंध, सर्वनाम पदबंध, विशेषण पदबंध, क्रिया पदबंध, क्रियाविशेषण पदबंध। इन्हें उदाहरण सहित स्पष्ट करें। • उन्हें अब वाक्य के भेदों के बारे में बताएँ। वाक्य के भेद दो आधारों पर किए जाते है-रचना के आधार पर तथा अर्थ के आधार पर। रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं-सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्रित वाक्य। • छात्रों को कुछ सरल वाक्य लिखवाकर उन्हें संयुक्त व मिश्रित बनाकर लाने को कहें और बताएँ कि अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं- विधिवाचक, निषेध वाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, आज्ञावाचक, इच्छावाचक, संकेतवाचक व संदेहवाचक। इन सभी को उदाहरण सहित स्पष्ट करके समझाएँ तथा प्रत्येक का एक-एक उदाहरण लिखकर लाने को कहें। • अंततः वाक्य संश्लेषण के बारे में जानें कि संश्लेषण अर्थात् मिलाकर उन्हें एक करना। इस प्रक्रिया में अनेक वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाया जाता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के पद-परिचय दीजिए–

क. वाक्य के तत्व 'अविच्छिन्नता' से आप क्या समझते हैं?

....

....

ख. पदबंध को परिभाषित कीजिए।

....

....

ग. विशेषण तथा क्रियाविशेषण पदबंध में अंतर कीजिए।

....

....

....

घ. वाक्य-संश्लेषण किसे कहते हैं?

....

ङ. आश्रित उपवाक्य के भेदों के नाम लिखिए।

....

च. विशेषण उपवाक्य किसे कहते हैं?

....

2. दिए गए वाक्यों में रेखांकित पदबंध को पहचान कर उसका नाम लिखिए–

क. स्कूल के पीछे की ओर एक बड़ा मैदान है।

....

ख. व्यायाम करने वाले व्यक्ति सदा स्वस्थ रहते हैं।

....

ग. शिकारी के बाण से शेर घायल हो गया।

....

घ. माली फूल तोड़ रहा है।

....

ङ. पुरस्कार में मिली पुस्तक मैंने पढ़ ली।

....

च. वह बैठे-बैठे सो गई।

....

छ. बिना सोचे-समझे कोई काम मत कीजिए।

....

3. निम्नलिखित पदबंधों का एक-एक उदाहरण दीजिए–

क. सर्वनाम पदबंध

....

ख. क्रिया पदबंध

....

ग. विशेषण पदबंध

....

घ. संज्ञा पदबंध

....

4. अर्थ के आधार पर वाक्यों के नाम पहचान कर उत्तर लिखिए–

क. च क वा ह सं दे – ....

ख. ज्ञा वा आ क च – ....

ग. न श्‍ प्र क वा च – ....

घ. धि क वा वि च – ....

ङ. सं क वा त के च – ....

च. षे वा नि ध क च – ....

5. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेदों के नाम उनके सामने लिखिए–

क. अवधेश ने अपना कार्य पूर्ण कर लिया। ....

ख. यदि आप आते तो मैं भी आपके साथ चलती। ....

ग. रोहन ने भोजन नहीं किया है। ....

घ. प्रभु आपको दीर्घायु करे। ....

ङ. तुरंत कमरे से बाहर निकल जाओ। ....

6. वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित करके लिखिए–

क. रमेश ने उत्तर याद किए। **(निषेधवाचक)**

....

ख. धोबी ने कपड़े धोए। **(प्रश्नवाचक)**

....

ग. राधा गीत गाएगी। **(आज्ञावाचक)**

....

घ. पिता जी कल बाज़ार जाएँगे। **(संदेहवाचक)**

....

7. दिए गए वाक्यों को रचना के आधार पर निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए–

क. मैं अपना काम करके खेलने गई। (संयुक्त वाक्य)

....

ख. रोहन घर आया और मैं बाहर चला गया। (मिश्र वाक्य)

....

ग. गिलास नीचे गिरकर चूर-चूर हो गया। **(संयुक्त वाक्य)**

....

घ. सूर्य अस्त हुआ और चिड़ियाँ घोंसले में आ गईं। **(सरल वाक्य)**

....

ङ. मैं उठकर सैर करने जाती हूँ। **(मिश्रित वाक्य)**

....

8. निम्नलिखित वाक्यों से संश्लिष्ट वाक्य बनाइए–

क. आज मैं बीमार था।
मैं विद्यालय नहीं गया।

....

ख. रमन सुबह उठता है।
वह टहलने जाता है।

....

ग. वह प्रतिदिन व्यायाम करता है।
उसका शरीर हृष्ट-पुष्ट है।

....

घ. शिक्षक ने छात्रों को पाठ पढ़ाया।
पाठ पढ़ाकर छात्रों को लिखने को कहा।

....

पदक्रम तथा अन्वय पाठ योजनाः 27

आज की अवधारणा

छात्रों को पदक्रम व अन्वय के बारे में बताना। उदाहरण द्वारा पदक्रम व अन्वय संबंधी नियमों से अवगत कराना तथा विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी वाक्य-विचार विषय से भली-भाँति परिचित हैं। वे जानते हैं कि वाक्य रचना में पदक्रम का महत्वपूर्ण स्थान है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे-

- पदक्रम व अन्वय के बारे में सोचने और विचार करने में,
- पदक्रम व अन्वय संबंधी नियमों को जानने में,
- विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों को पहचानकर उन्हें सुधार करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को पदक्रम व अन्वय की उपयोगिता समझाना
- पदक्रम व अन्वय संबंधी सभी नियमों की जानकारी देना।
- अशुद्ध वाक्यों में विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों से अवगत कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'पदक्रम व अन्वय' विषय के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

नीचे दिए गए अनुच्छेद में पदक्रम ठीक नहीं है। अतः यह अनुच्छेद समझ नहीं आ रहा है। आप पदक्रम को ठीक करके दोबारा लिखिए।

बंटी अपने सरकारी कॉलोनी में रहता है मम्मी-पापा के साथ। हर घर के पीछे कॉलोनी में का.फी ज़मीन पड़ी है खाली। वहाँ कूड़ा जाता है .फेंका। बंटी पिछले एक सप्ताह से ज़मीन का जुटा था स.फाई करने में। इस काम में भी उसकी मदद कर रहे उसके दोस्त थे। नहा-धोकर बंटी जब के लिए घर से स्कूल जाने लगा तो कहा उसकी मम्मी ने "बंटी, आज तुम्हारा याद है न! जन्मदिन है।"

....

....

....

....

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में पदक्रम व अन्वय संबंधी व्याकरण की पुस्तकें।
- यूट्यूब पर पदक्रम व अन्वय संबंधी नियमों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों को दर्शाते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए बताएँ कि आज नए अध्याय 'पदक्रम तथा अन्वय' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को पदक्रम तथा अन्वय के संबंध में बताना तथा उसके नियमों और वाक्य शुद्धि के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, वाक्य के अर्थ तथा पदों के पारस्परिक संबंध को जानने के लिए शब्दों को क्रमानुसार रखना ही पदक्रम कहलाता है। • अध्यापक, छात्रों को एक-एक करके पदक्रम के सभी नियमों से अवगत कराएँ तथा उदाहरण सहित स्पष्ट करें। • उन्हें अन्वय के बारे में बताएँ कि वाक्य में आए शब्दों का परस्पर लिंग, वचन, पुरुष तथा काल आदि के अनुसार जो संबंध होता है, उसे अन्वय कहते हैं • हिंदी में अन्वय (मेल) निम्नलिखित रूप में देखा जाता है– क्रिया का कर्ता व कर्म से, संज्ञा का सर्वनाम से, संबंधकारक का संबंधी से, विशेषण का विशेष्य से। • छात्रों को एक-एक करके अन्वय के सभी नियमों से परिचित कराएँ तथा उदाहरण सहित स्पष्ट करने को कहें।

	• अब उन्हें अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना बताएँ। इससे पहले उन्हें समझाएँ कि हम अपने लेखन व उच्चारण में निम्नलिखित अशुद्धियाँ करते है, जैसे–शब्द प्रयोग संबंधी अशुद्धियाँ, विकारी शब्द प्रयोग संबंधी अशुद्धियाँ, कारक संबंधी अशुद्धियाँ, पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ, अन्वय (कर्ता, कर्म और क्रिया) संबंधी अशुद्धियाँ, वाच्य प्रयोग संबंधी अशुद्धियाँ, पुनरुक्ति संबंधी अशुद्धियाँ तथा शब्दों के अर्थ के विषय में अज्ञानता संबंधी अशुद्धियाँ। • इन अशुद्धियों को वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट करके समझाएँ तथा कुछ अशुद्ध वाक्य लिखकर उनकी अशुद्धि के बारे में पूछें और शुद्ध रूप लिखने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–

क. खरगोश को काटकर घास खिलाओ।

....

ख. तुमने किससे मिलना है?

....

ग. चारों दिशा के नाम लिखिए।

....

घ. तुम तुम्हारे घर जाओं।

....

ङ. घर पर अंदर सफाई होनी चाहिए।

....

च. यह किसकी किताबें है।

....

छ. प्रत्येक स्कूलों के बच्चे आए।

....

2. सही वाक्यों पर सही (✓) तथा गलत पर गलत (✗) का चिह्न लगाएँ–

क. दस बजने में पाँच मिनट हैं।

ख. तुम्हें अनेकों बार समझाया गया।

ग. लक्ष्मीबाई वीर स्त्री थी।

घ. मीना बोली–आम बहुत मीठा है।

ङ. मैं प्रातःकाल के समय पूजा करुँगी।

च. प्रदूषण गहरी समस्या है।

छ. यह फल दो व्यक्ति के लिए है।

ज. सेठ जी पर घड़ों पानी गिर गया।

3. वाक्यों को पढ़कर अशुद्ध प्रयोग वाले शब्दों पर गोला लगाइए–

क. दुश्मन ने गंभीर चाल चली।

ख. आज स्वादिष्ट खाने बना है।

ग. प्रगति मैदान में अनेकों लोगों की भीड़ थी।

घ. निर्मला के अनेकों घर हैं।

ङ. दीवार पर नहीं लिखें।

विराम-चिह्न पाठ योजनाः 28

आज की अवधारणा

छात्रों को विराम-चिह्न के बारे में बताना तथा उसके सभी भेदों को उदाहरण द्वारा परिभाषित करते हुए समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि विराम का अर्थ– रुकना, ठहरना या विश्राम करना होता है। बात को स्पष्ट करने के लिए हम बीच-बीच में रुकते हैं, लिखित में इसी रुकने को दर्शाने के लिए कुछ निश्चित चिह्नों का सहारा लिया जाता है, जिसे विराम-चिह्न कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- विराम-चिह्नों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- महत्वपूर्ण विराम-चिह्नों के बारे में जानने में,
- वाक्य में लगे विराम-चिह्नों को पहचानकर उसका नाम बताने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- भाषा में विराम-चिह्न की उपयोगिता बताना।
- सभी विराम-चिह्नों का अलग-अलग महत्व बताना।
- विभिन्न विराम-चिह्नों के प्रति उत्सुकता उत्पन्न करना और जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में विराम-चिह्नों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक सभी विराम-चिह्नों की परचियाँ बनाएँ तथा एक-एक छात्र को बुलाकर उनसे परची उठवाएँ। परची में बने विराम-चिह्न को पहचानकर उसका भेद बताने को कहें व वाक्य प्रयोग करने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध विराम-चिह्न संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर विराम-चिह्नों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में विराम-चिह्नों को उदाहरण सहित दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए बताएँ कि आज नए अध्याय 'विराम-चिह्न' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को विराम-चिह्न के संबंध में बताना तथा उसके भेदों को जानने के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, लिखित भाषा में विश्राम की प्रक्रिया को कुछ संकेत-चिह्नों द्वारा प्रकट किया जाता है, जिन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। • विराम-चिह्नों के प्रयोग से अभिव्यक्ति में स्पष्टता आती है। इसके प्रमुख विराम-चिह्न इस प्रकार से हैं—अल्प विराम (,), अर्द्ध विराम (;) पूर्ण विराम (।), विस्मयादिबोधक (!), प्रश्नसूचक चिह्न (?), योजक चिह्न (-), निर्देशक चिह्न (—), कोष्ठक ((),[ ],{ }), उद्धरण चिह्न (" "), त्रुटि चिह्न (‸), लाघव चिह्न (०), लोप चिह्न (.........) • उन्हें बताएँ यह भाषा को अर्थपूर्ण बनाने में सहायक होते हैं। इनके प्रयोग से भाषा स्पष्ट व प्रभावशाली बनती है। • अध्यापक सभी चिह्नों को उदाहरण सहित परिभाषित करके प्रत्येक विराम-चिह्न का छात्रों से अर्थ पूछे। • प्रत्येक विराम-चिह्न का प्रयोग करके छात्रों से दो-दो वाक्य बनाकर लाने को भी कह सकते हैं।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. **निम्नांकित चिह्नों के सामने उनके नाम तथा एक-एक उदाहरण लिखिए–**

चिह्न	नाम	उदाहरण
?	....	....
!	....	....
( )	....	....
/	....	....
,	....	....

2. **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विराम-चिह्न लगाकर वाक्य दोबारा लिखिए-**

क. डी पी एस के छात्रों ने राजधानी स्कूल के छात्रों को क्रिकेट मैच में हरा दिया

....

ख. लोकतंत्र जनता का जनता के लिए जनता द्वारा शासन है लिंकन

....

ग. सिद्धार्थ गौतम बुद्ध की पत्नी का नाम यशोधरा था

....

घ. वाह सीमा का जवाब नहीं

....

ङ. महात्मा गांधी बापू के नाम से जाने जाते हैं

....

3. **निम्नलिखित अनुच्छेद में उचित विराम-चिह्न लगाकर दोबारा लिखिए-**

हमारे देश में प्रतिवर्ष 14 नवंबर को बाल दिवस मनाया जाता है इस दिन हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय पं जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन है उन्हें बच्चों से बहुत प्रेम था बाल दिवस पर विद्यालयों में बच्चों के लिए विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं फल और मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं जगह जगह पर बाल मेले लगते हैं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

....

....

....

....

4. **निम्नलिखित विराम-चिह्नों का प्रयोग करते हुए एक-एक उदाहरण लिखिए-**

क. योजक चिह्न – ....

ख. हंसपद चिह्न – ....

ग. अल्प विराम – ....

घ. उद्धरण चिह्न – ....

ङ. विवरण चिह्न – ....

5. निम्नलिखित विराम-चिह्नों का उनके नाम से मिलान कीजिए-

क. दोहरा उद्धरण चिह्न	“ ”	( )	च. इकहरा उद्धरण चिह्न
ख. लाघव चिह्न	/	......	छ. योजक चिह्न
ग. हंसपद चिह्न	;	‘ ’	ज. निर्देशक चिह्न
घ. प्रश्नवाचक चिह्न	?	-	झ. कोष्ठक
ङ. अर्द्ध विराम	०	—	ञ. विस्तार चिह्न

अलंकार

पाठ योजना: 29

आज की अवधारणा

छात्रों को अलंकार के बारे में बताना तथा उसके भेदों से परिचित कराना। शब्दालंकार व अर्थालंकार के भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि अलंकार का सामान्य अर्थ आभूषण या गहना है, लेकिन वे इस बात से परिचित नहीं हैं कि साहित्य में अंलकार का अर्थ काव्य की शोभा बढ़ाने से है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- अंलकार के बारे में सोचने और विचार करने में,
- शब्दालंकार व अर्थालंकार को जानने में,
- अंलकारों को सुनकर उसका भेद पहचानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को काव्य में अंलकारों की उपयोगिता समझाना।
- शब्दालंकार व अर्थालंकार के भेदों से परिचित कराना।
- सभी अंलकारों को उदाहरण सहित समझाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में अंलकार विषय के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक, छात्रों को किसी प्रसिद्ध कवि की कविता लिखकर लाने को कहें, जिनमें अंलकारों का प्रयोग किया गया हो। फिर उस कविता में से अंलकारों को अलग से लिखकर उसके आगे भेद लिखकर लाने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध अंलकार संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अंलकारों की पहचान संबंधी जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में अंलकार व शब्दालंकार तथा अर्थालंकार के भेदों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इइस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए बताएँ कि आज नए अध्याय 'अंलकार' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को अंलकार के संबंध में बताना तथा उसके भेदों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, अंलकार शब्द अलम्+कार की संधि हैं। इसका शब्दिक अर्थ है–आभूषण। शब्दों अथवा अर्थों के चमत्कारपूर्ण आकर्षक प्रयोग को अंलकार कहते हैं। • कविता रूपी कामिनी की शोभा को बढ़ाने के लिए अंलकारों से उसको सजाया जाता है। अंलकारों के प्रयोग से कविता का सौंदर्य बढ़ता है, तथा कथन प्रभावशाली हो उठता है। • अंलकार के दो भेद होते हैं–शब्दालंकार और अर्थालंकार। शब्दालंकार में शब्दों के चमत्कार पर बल दिया जाता है वहीं अर्थालंकार में अर्थगत सुंदरता एवं चमत्कार बढ़ाने पर बल दिया जाता है। • हिंदी साहित्य में शब्द और अर्थ दोनों का महत्व होता है। कहीं शब्द के प्रयोग से तो कहीं अर्थ के चमत्कार से काव्य के सौंदर्य में वृद्धि होती है। • शब्दालंकार के मुख्य रूप से तीन भेद हैं–अनुप्रास, यमक और श्लेष अंलकार। अर्थालंकार के मुख्य रूप से चार भेद हैं-उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिश्योक्ति अंलकार। • छात्रों को एक-एक करके सभी अंलकारों को उदाहरण सहित समझाएँ तथा उसके बाद कुछ अलग-अलग काव्य पंक्तियाँ लिखें और उसमें अंलकार पहचानकर बताने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. अलंकार किसे कहते हैं? हिंदी भाषा में इसका क्या महत्व है?

....

....

....

....

ख. अलंकार के कितने भेद हैं? सभी के नाम लिखिए।

....

....

....

2. निम्नलिखित अलंकारों की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए–

क. उपमा – ....

....

....

ख. उत्प्रेक्षा – ....

....

....

ग. रूपक – ....

....

....

घ. अतिशयोक्ति – ....

....

....

3. खंड 'अ' का मिलान खंड 'ब' से कीजिए–

'अ'	**'ब'**
क. अलंकार	(i) काव्य की शोभा
ख. अर्थालंकार के	(ii) चार भेद हैं।
ग. शब्दालंकार के	(iii) तीन भेद हैं।
घ. जिसकी उपमा दी जाती है।	(iv) उपमान
क. जिससे उपमा दी जाती है।	(v) उपमेय

4. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों के अलंकार-भेद लिखिए–

क. चरण–सरोज परवारन लागा। – ....

ख. रघुपति राघव राजा राम। – ....

ग. काली घटा का घमंड घटा। – ....

घ. यह तन काँचा कुंभ है लिया फिरै था साथ। – ....

ङ. भजु मन चरण–कँवल अविनासी। – ....

च. हरि मुख मानो मधुर मयंक। – ....

मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा सूक्तियाँ

पाठ योजनाः 30

आज की अवधारणा

छात्रों को मुहावरे, लोकोक्ति व सूक्तियों के बारे में बताना तथा उदाहरण सहित उन्हें परिभाषित करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते है कि मुहावरे व लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा प्रभावशाली और आकर्षक बन जाती है।

सीखने का प्रतिफल

- इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–
- मुहावरे, लोकोक्ति व सूक्तियों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- मुहावरे, लोकोक्ति व सूक्तियों के बीच अंतर जानने में,
- इनको सुनकर उनका अर्थ बताने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन–पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में मुहावरे, लोकोक्ति व सूक्तियों की उपयोगिता समझाना।
- विभिन्न प्रकार के मुहावरे, लोकोक्ति व सूक्तियों से परिचित कराना।
- वाक्य प्रयोग के दौरान उचित मुहावरों, लोकोक्तियों व सूक्तियों के प्रयोग से अपनी भाषा को प्रभावी बनाना सिखना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में मुहावरे, लोकोक्ति व सूक्तियों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके उनके अर्थ जानकर वाक्य प्रयोग के लिए अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक, छात्रों के समक्ष मुहावरे, लोकोक्ति या कोई सूक्ति एक–एक करके बोलें तथा किसी भी छात्र को खड़ा करके उसका अर्थ बताने को कहें। इस तरह सभी छात्र उनके अर्थो से अच्छी तरह परिचित होंगे।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध मुहावरे, लोकोक्ति व सूक्तियाँ संबंधी पुस्तकें।
- लल यूट्यूब पर उनके अर्थों की जानकारी संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- लल कक्षा में महत्वपूर्ण मुहावरे, लोकोक्ति व सूक्तियों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए बताएँ कि आज नए अध्याय 'मुहावरे, लोकोक्ति तथा सूक्तियों' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को मुहावरे, लोकोक्ति व सूक्तियों के संबंध में बताना तथा उदाहरणों के प्रति जिज्ञासु बनाना।	• छात्रों, वाक्य अथवा वाक्यांश द्वारा साधारण अर्थ छोड़कर विशिष्ट अर्थ प्रकट करना 'मुहावरा' कहलाता है। वहीं लोकोक्ति लोक+उक्ति से मिलकर बना है जिसका अर्थ है लोक में प्रचलित उक्ति। • मुहावरे वाक्यांश होते हैं, जबकि लोकोक्ति स्वयं में पूरा वाक्य होती है। लोकोक्ति के प्रयोग से भाषा का सौंदर्य प्रभावशाली एवं विलक्षण हो जाता है। • विशेष परिस्थिति में मानवीय भावों एवं विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति में मुहावरे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुहावरों की तरह ही लोकोक्तियाँ तथा सूक्तियाँ भी कथन को प्रभावोत्पादक रोचक एवं रंजक बनाती हैं। • उन्हें बताएँ विचार मंथन के बाद सारगर्भित शब्दावली में कहे गए, किसी सुगठित कथन को सूक्ति कहते हैं। 'सूक्ति' शब्द सु+उक्ति के मेल से बना है, जिसका अर्थ है-सुंदर उक्ति या कथन। सूक्तियों के प्रयोग से भाषा का सौंदर्य बढ़ जाता है। • मुहावरे, लोकोक्ति व सूक्ति के प्रयोग से भाषा में बल तथा भाव में ओजस्विता तथा स्पष्टीकरण आ जाता है।

	• श्यामपट्ट पर अध्यापक कुछ मुहावरे, लोकोक्ति या सूक्तियाँ लिखकर छात्रों को उन्हें अपनी कार्य-पुस्तिका में वाक्य प्रयोग करके लाने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. मुहावरा किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

ख. मुहावरों का हिंदी भाषा में क्या महत्व होता है?

....

....

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए-

क. अंग-अंग टूटना - ....

ख. आँखें फेर लेना - ....

ग. उल्टी गंगा बहना - ....

घ. हाथ मलना - ....

ङ. ढीला पड़ना - ....

च. घास खोदना - ....

3. निम्नलिखित वाक्यों को सही मुहावरों के द्वारा पूरा कीजिए-

क. छत से कूदते देखकर सभी ने दाँतों ....।

ख. मुझे पहले ही ....।

ग. मेरा छोटा लड़का तो ....।

घ. शहरों में रहने के लिए कई तरह के ....।

लोकोक्तियाँ

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. लोकोक्ति किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

....

....

ख. लोकोक्ति की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं?

....

....

....

2. नीचे दी गईं अधूरी लोकोक्तियों को पूरा कीजिए–

क. ऊँची दुकान – ....

ख. साँप भी – ....

ग. आगे कुआँ – ....

घ. वन-वन फिरहूँ – ....

सूक्तियाँ

1. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत-

अ. मन में विजय से ही सफलता संभव है। ☐

ब. परतंत्र व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता। ☐

स. इनमें से कोई नहीं। ☐

ख. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान-

अ. काम से जी चुराने वाला ही भाग्य की दुहाई देता है। ☐

ब. निरंतर परिश्रम करने से मूर्ख भी विद्वान बन सकता है। ☐

स. इनमें से कोई नहीं। ☐

ग. सबै दिन होत न एक समान-

अ. सदा एक-सा नहीं रहता। ☐

ब. परोपकार सर्वोच्च धर्म है। ☐

स. इनमें से कोई नहीं। ☐

2. निम्नलिखित सूक्तियों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

क. परहित सरिस धरम नहिं भाई – ....

....

ख. दैव-दैव आलसी पुकारा – ....

....

ग. सबै दिन होत न एक समान – ....

....

3. मुहावरे, लोकोक्तियाँ और सूक्तियों में अंतर स्पष्ट कीजिए-

मुहावरे	लोकोक्तियाँ	सूक्तियाँ

रचनात्मक गतिविधियाँ पाठ योजनाः 31

आज की अवधारणा

छात्रों को कविता पाठ, कहानी, संवाद, चुटकुले/क्षणिकाएँ, अंत्याक्षरी जैसी रचनात्मक गतिविधियों से अवगत कराते हुए इनके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र कविताएँ एवं कहानियाँ पढ़ते तथा सुनते आ रहे हैं। वे आपस में चुटकुले सुनाना एवं अंत्याक्षरी भी खेलते रहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों की विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के प्रति रुचि जागृत होगी तथा वे निम्न में सक्षम हो सकेंगे-

- कविताओं को सही लय, शुद्‌ध उच्चारण एवं उचित हाव-भाव के साथ पढ़ने में,
- कहानियों का उचित विराम एवं गति तथा धारा प्रवाह के साथ वाचन करने में,
- संवादों का पात्र एवं देशकाल के अनुरूप स्पष्ट उच्चारण करने में तथा,
- अंत्याक्षरी के विभिन्न रूपों का महत्व समझने में।

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- छात्रों को विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के प्रति प्रेरित करना।
- शुद्‌ध उच्चारण के साथ स्पष्ट रूप से प्रस्तुति देने हेतु योग्यता विकसित करना।
- इन गतिविधियों के माध्यम से मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान प्रदान करना।
- अवसर के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों की कल्पनाओं को उन्मुक्त करते हुए उन्हें रचनात्मक गतिविधियों के प्रति जिज्ञासु बनाना ताकि खेल-खेल में वे विविध विषयों से जुड़ सकें।

गतिविधियाँ

- प्राकृतिक सौंदर्य व देश से संबंधित कोई कविता याद करके कक्षा में उसकी प्रस्तुति दें।
- प्रतिदिन एक कहानी पढ़ें और अपने छोटे भाई-बहनों तथा मित्रों को सुनाएँ।
- छात्रों को कबीर, रहीम, तुलसी एवं सूर के दोहे याद करने को दें तथा कक्षा में दो टीम बनाते हुए अंत्याक्षरी खेलें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध कविताओं एवं कहानियों से संबंधित साहित्यिक पुस्तकें।
- यूट्यूब पर रचनात्मक गतिविधियों के विविध रूपों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- समाचार-पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित चुटकुले, कविताएँ, कहानियाँ आदि।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'रचनात्मक गतिविधियाँ' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को निबंध के लेखन के संबंध में बताना तथा उसकी लेखन-विधियों से परिचित कराना।	• छात्रों को बताएँ कि वे गतिविधियाँ रचनात्मक गतिविधियाँ कहलाती हैं जो मनोरंजन के साथ-साथ उनकी भीतरी प्रतिभा एवं कौशलों को उभारने का कार्य भी करती है। • रचनात्मक गतिविधि के प्रथम रूप कविता पाठ के बारे में उन्हें अवगत कराएँ कि काव्य रचना द्वारा देश-प्रेम, प्रकृति प्रेम, विभिन्न सामाजिक समस्याओं तथा मनोभावों को प्रकट किया जा सकता हैं। • कविता पाठ संबंधी आवश्यक बातों का ज्ञान कराते हुए उनका इस दिशा में रुझान उत्पन्न करें ताकि काव्य के प्रति उनकी रुचि उत्पन्न हो। • 'कहानी' गतिविधि के बारे में स्पष्ट करें कि कहानी पढ़ना या सुनना हम सभी को प्रिय होता है। आपकी पाठ्य-पुस्तक में भी कई कहानियाँ लगी हुई हैं। • कहानी समाज का दर्पण होती है। यह समाज को शिक्षित करने का कार्य करती है। कथा वाचन के दौरान ध्यान रखने योग्य बातों से छात्रों को अवगत कराएँ। • तत्पश्चात् उन्हें 'संवाद' गतिविधि का परिचय दें कि दो या दो से अधिक लोगों के बीच होने वाली बातचीत 'संवाद' है। एकांकी, नाटक और कहानी में संवाद महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं।

	• उन्हें बताएँ कि संवाद-योजना करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि संवाद संक्षिप्त तथा सरल एवं पात्रों के अनुकूल हों। • संवादों का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए तथा उन्हें बोलते समय हाव-भाव एवं भाव-भंगिमाओं का पूर्णतः ध्यान रखना चाहिए। • अन्य गतिविधि 'चुटकुले/क्षणिकाएँ' से परिचित कराएँ कि जीवन में हास्य-विनोद का विशेष महत्व है। तनावपूर्ण जीवन में चुटकुले तथा क्षणिकाएँ मन को गुदगुदा कर कुछ पल के लिए मनुष्य को स्फूर्ति, हँसी और ताज़गी देकर तरोताज़ा करते हैं। • छात्रों को बताएँ कि चुटकुले सुनाते समय स्वयं न हँसें इसमें अश्लीलता न हो तथा ये किसी जाति, संप्रदाय या संस्कृति का अनादर न करते हो।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. "सुभद्राकुमारी कुमारी चौहान" की कविता 'कोयल' को इंटरनेट की सहायता से नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए–

____
____
____
____

____
____
____
____

____
____
____
____

____
____
____
____

2. नीचे दिए गए विषय पर कहानी लिखिए-

त्याग में ही सुख है, संग्रह में नहीं।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. विक्रेता और ग्राहक के बीच संवाद लिखिए-

विक्रेता – ....

ग्राहक – ....

विक्रेता – ....

ग्राहक – ....

विक्रेता – ....

ग्राहक – ....

विक्रेता – ....

ग्राहक – ....

विक्रेता – ....

ग्राहक – ....

विक्रेता – ....

ग्राहक – ....

4. शब्द अंत्याक्षरी के द्‌वारा नीचे दी गई वर्ग-पहेली को पूरा कीजिए-

हमने शुरू कर दी अब आपकी बारी। 'ल' के आगे वर्ण जोड़िए और शब्द बनाइए-

न	ल							

अपठित गद्यांश

पाठ योजनाः 32

आज की अवधारणा

अपठित गद्यांश के बारे में बताते हुए इसे हल करने की विधि से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र अपने पाठ्यक्रम में आने वाले पठित गद्यांशों को हल करना जानते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- अपठित गद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर पर विचार करने में,
- अपठित गद्यांश हेतु आवश्यक बातों को जानने में तथा
- अपठित गद्यांश को हल करने की विधि को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- गद्य विधा के प्रति रुझान उत्पन्न करना।
- छात्रों में चिंतन-मनन की क्षमता का विकास करते हुए तर्कपूर्ण उत्तर देने हेतु उन्हें अभिप्रेरित करना।
- विभिन्न प्रकार के विषयों से संबंधित अपठित गद्यांशों को हल करने की योग्यता का विकास करना।

लक्ष्य कौशल

अपठित गद्यांशों को हल करने के माध्यम से छात्रों की भाषा पर पकड़ बनाना तथा उनकी कल्पनात्मकता को विकसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को श्यामपट्ट पर कोई अनुच्छेद लिखकर दें तथा उस पर आधारित कुछ प्रश्न भी लिखें। अब छात्रों को अपनी-अपनी कार्य-पुस्तिका में उनके उत्तर लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न विषयों की जानकारी देने वाली गद्यात्मक पुस्तकें।

- यूट्यूब पर अपठित गद्यांश को हल करने संबंधी जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- अपठित गद्यांश की महत्वपूर्ण बातों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अपठित गद्यांश' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को अपठित गद्यांश के बारे में बताते हुए उनके भीतर इन्हें हल करने की योग्यता का विकास करना।	• छात्रों को बताएँ कि 'अपठित' का अर्थ होता है-जो पूर्व में न पढ़ा गया हो। अतः वे गद्यांश 'अपठित गद्यांश' कहलाते हैं जिन्हें आपने पूर्व में नहीं पढ़ा होता क्योंकि ये आपके पाठ्यक्रम में नहीं लगे होते। • इनका संबंध किसी भी विषय से हो सकता है जैसे-कला, विज्ञान, राजनीति, साहित्य या अर्थशास्त्र। • ये गद्यांश मानसिक व्यायाम करने के साथ-साथ सामान्य ज्ञान में भी वृद्धि करते हैं। • अपठित गद्यांशों के अभ्यास से अर्थ ग्रहण की क्षमता का विकास होता है तथा ये व्याकरण संबंधी ज्ञान बढ़ाने में भी सहायक होते हैं। • अपठित गद्यांशों को हल करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए, जो इस प्रकार हैं- i) गद्यांश को सबसे पहले ध्यान से पढ़ना चाहिए। ii) पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों को गद्यांश में से ढूँढकर रेखांकित करना चाहिए। iii) अपने शब्दों में उत्तर देने का प्रयास करना चाहिए। भाषा सरल, स्पष्ट तथा उत्तर संक्षिप्त हो। iv) शीर्षक का चुनाव सावधानी से करते हुए कम-से-कम शब्दों में लिखना चाहिए। पहले गद्यांश का केंद्रीय भाव ग्रहण करना चाहिए, ऐसा करने पर शीर्षक आसानी से ढूँढा जा सकता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

ईश्वरचंद्र विद्यासागर बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान थे। एक दिन वे रेलगाड़ी से कहीं से आ रहे थे। जब वे स्टेशन पर उतरे, तो उन्होंने देखा कि एक नवयुवक स्टेशन पर खड़ा था और कुली! कुली! पुकार रहा था। स्टेशन छोटा था, इसलिए वहाँ कोई कुली नहीं था। ईश्वरचंद्र को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि युवक के पास भारी सामान नहीं था, बल्कि एक छोटा-सा सूटकेस था। ईश्वरचंद्र उस युवक के पास पहुँचे और बोले, "लाइए, आपका सूटकेस में उठा देता हूँ।" युवक यहाँ ईश्वरचंद्र विद्यासागर से ही मिलने आया था। ईश्वरचंद्र ने धोती-कुर्ता पहन रखा था, इसलिए युवक उन्हें पहचान न पाया। स्टेशन से बाहर निकलने पर युवक ने उन्हें कुछ पैसे दिए, मगर ईश्वरचंद्र ने नहीं लिए। युवक को लगा शायद पैसे कम हैं, इसलिए यह व्यक्ति उन्हें लेने से इनकार कर रहा है। उसने अधिक पैसे देने चाहे, पर ईश्वरचंद्र बोले, "मैंने आपका सूटकेस पैसों के लिए नहीं उठाया। मैंने तो बस आपकी सहायता की थी।" अगले दिन युवक ईश्वरचंद्र से मिलने पहुँचा, तो उन्हें देखकर हैरान रह गया। उसे अपने पर बहुत शर्म आ रही थी। उसने ईश्वरचंद्र जी के चरणों में गिरकर क्षमा याचना की। ईश्वरचंद्र ने कहा, "बेटे! प्रतिज्ञा करो की भविष्य में तुम अपना कार्य स्वयं करोगे।"

क. ईश्वरचंद्र कौन थे?

अ. डॉक्टर   ब. लेखक   स. प्रसिद्ध विद्वान

ख. 'प्रसिद्ध' शब्द में उपसर्ग है-

अ. प्र   ब. सिद्ध   स. ध

ग. युवक वहाँ किससे मिलने आया था?

अ. अपनी पत्नी से

ब. ईश्वरचंद्र विद्यासागर से

स. अध्यापक से

घ. ईश्वरचंद्र ने युवक से क्या प्रतिज्ञा करवाई?

अ. अपना काम दूसरों से कराओगे।

ब. अपना काम स्वयं करोगे।

स. कुली! कुली! कभी नहीं चिल्लाओगे।

ङ. 'विद्वान' शब्द का स्त्रीलिंग रूप होगा-

अ. विद्वानवती   ब. विदुषी   स. ज्ञानी

3. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

मनुष्य ने जब पहली बार आग जलाना सीखा था, तो वह एक बहुत बड़ा आविष्कार था। आज तो हमारे पास आग जलाने के अनेक साधन हैं परंतु उस युग में न तो साधन थे और न ही समझ थी। माना जाता है कि मनुष्य ने चकमक पत्थरों को टकराकर उनके घर्षण से आग

जलाई होगी। यह कार्य जिसने भी किया था, वह एक महान मानव था। उसमें यह गुण जन्म से ही स्वयंभूत था, अर्थात् ऐसा गुण जिसके लिए कहीं बाहर से शिक्षा न लेनी पड़े। वास्तव में शिक्षा तो वही है, जो हमारे भीतर छिपे हुए गुणों को बाहर ले आती है। हो सकता है कि किताबी ज्ञान से जी चुराने वाला बालक कोई महान आविष्कार कर डाले। संसार में ऐसे अनेक उदाहरण हैं। अतः हम सभी को अपने गुणों का विकास करते रहना चाहिए।

क. 'पत्थर' शब्द का अर्थ है-

अ. पाषाण   ब. घिसना   स. फेंकना

ख. शिक्षा किसे कहते हैं?

अ. जो अंदर छिपे गुणों को बाहर ले आए

ब. जो किताब पढ़ाना सिखा दे

स. जो धन कमाने योग्य बना दे

ग. पहली बार आग जलाने के लिए किसका प्रयोग किया गया?

अ. माचिस का   ब. चकमक पत्थर का   स. लाइटर का

घ. 'वह एक महान मानव था।' इसमें विशेषण कौन-सा है?

अ. महान   ब. मानव   स. वह

ङ. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है-

अ. महान आविष्कार   ब. आंतरिक शिक्षा   स. पानी की खोज

4. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

भारतीय संस्कृति का प्रकृति से गूढ़ संबंध रहा है। सभ्यता के आदिकाल से मनुष्य पूर्णतया प्रकृति पर ही अधिक आश्रित रहा है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में प्रकृति के विभिन्न तत्वों की पूजा का वर्णन मिलता है। हमारे देश में तुलसी, पीपल, बरगद आदि की पूजा आज भी की जाती है। वृक्षों के प्रति श्रद्धा एवं आदर का भाव रखने का मूल कारण यह था कि हमारे देश के प्राचीन मनीषियों ने यह जान लिया था कि मानव का अस्तित्व वृक्षों के अस्तित्व पर ही निर्भर है। यही कारण था कि घर के आँगन में तुलसी का पौधा लगाकर प्रतिदिन उसकी पूजा की जाती थी। तुलसी का पौधा घर में होना आज भी शुभ माना जाता है। अपने घर के पीछे आम, नीम, केले आदि के पेड़ लगाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। मंदिरों में बरगद, पीपल, नीम, बेल आदि के पेड़ हमेशा से लगाए जाते रहे हैं और श्रद्धालु प्रायः प्रतिदिन इन पर लोटा भर जल डालकर अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं।

क. भारतीय संस्कृति का प्रकृति से कैसा संबंध रहा है?

अ. गूढ़   ब. गहरा संबंध   स. ये दोनों

ख. सभ्यता के आदिकाल से मनुष्य पूर्णतया किस पर आश्रित है?

अ. आदिकाल   ब. प्रकृति   स. तत्वों पर

ग. मानव का अस्तित्व किस पर निर्भर है?

अ. वृक्षों के अस्तित्व पर

ब. पौधों के अस्तित्व पर

स. अनाज के अस्तित्व पर

घ. वृक्ष का पर्यायवाची है-

अ. पेड़ ब. सुमन स. पंकज

ङ. घर में किसका पौधा लगाकर पूजा की जाती है?

अ. बरगद ब. तुलसी स. नीम

अपठित पद्यांश — पाठ योजना: 33

आज की अवधारणा

अपठित पद्यांश के बारे में बताते हुए इसे हल करने के तरीके से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र विभिन्न विषयों से संबंधित कविताएँ पढ़ते तथा सुनते आ रहे हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- अपठित पद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर पर विचार करने में,
- अपठित पद्यांश को किस प्रकार हल किया जाए, इसे समझने में तथा,
- अपठित पद्यांश संबंधी महत्वपूर्ण बातों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- काव्य के प्रति रुझान उत्पन्न करना।
- पद्यांश के मूल भाव को समझने की समझ विकसित करना।
- अपठित पद्यांशों को हल करने की विधि से अवगत कराना।
- छात्रों की व्यक्तिगत योग्यता तथा अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अपठित पद्यांशों को हल करने के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करते हुए इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को श्यामपट्ट पर कुछ काव्य पंक्तियाँ तथा उन पर आधारित प्रश्न लिखकर दें। अब छात्रों से कहें कि वे इन पंक्तियों के मूल भाव को समझकर इसे अपनी कार्य-पुस्तिका में हल करें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध अपठित पद्यांश से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अपठित पद्यांश को हल करने संबंधी जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- अपठित पद्यांश की महत्वपूर्ण बातों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अपठित पद्यांश' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को अपठित पद्यांश के बारे में बताते हुए उनके भीतर इन्हें हल करने की योग्यता का विकास करना।	• छात्रों को बताएँ कि वे पद्यांश 'अपठित पद्यांश' कहलाते हैं जो आपकी पाठ्य-पुस्तक से न हो तथा जिन्हें आपने पूर्व में न पढ़ा हो। • उन्हें अपठित पद्यांश का महत्व समझाते हुए इस बात से अवगत कराएँ कि इससे उनकी कविता को पढ़ने व समझने की क्षमता का विकास होता है। • अपठित पद्यांश को पढ़कर आप उसे अच्छी तरह समझ सकें, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए, जो इस प्रकार हैं- i) पद्यांश को पहले दो या तीन बार ध्यानपूर्वक अवश्य पढ़ना चाहिए ताकि उसका भाव व अर्थ अच्छी तरह समझ में आ जाए। ii) प्रश्नों को अच्छे से पढ़कर उसके अनुरूप उत्तर देने चाहिए। iii) पद्यांश की पंक्तियों में से प्रश्नों के उत्तर नहीं देने चाहिए, बल्कि अपने शब्दों में देने चाहिए। iv) इसके उत्तर सरल, स्पष्ट और कम शब्दों का प्रयोग करके भावों के साथ व्यक्त करने चाहिए। • उन्हें इस बात से भी अवगत कराएँ कि इन पद्यांशों से आपकी भाषा व काव्य पर पकड़ मज़बूत होती है तथा व्याकरण का ज्ञान भी बढ़ता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

फूलों से नित हँसना सीखो,
भँवरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से,
नित सीखो शीश झुकाना।
नदियों की धारा से सीखो,

हरदम बहते रहना।
और धुएँ से सीखो बच्चों,
ऊँचे ही पथ पर चढ़ना।

क. हमें हँसना किससे सीखना चाहिए?

....

ख. कविता में 'हरदम बहते रहने' का क्या अर्थ है?

....

ग. हमें धुएँ से क्या सीखना चाहिए?

....

घ. 'चढ़ना' शब्द का भाववाचक संज्ञा क्या होगा?

....

ङ. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक दीजिए।

....

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

जीवन में आगे बढ़ना है तो
सीखो नदी-पहाड़ों से।
सरदी, गरमी, धूप और वर्षा
रुकते नहीं ये आँधी से।।

कल-कल करती नदियाँ बहतीं
सब को खुशियाँ देती हैं।
कोई कूड़ा डाले तो भी वे
कुछ भी न कहती हैं।।

अपने निर्णय पर अटल,
सदा खड़ा है पर्वतराज।
हवा, आँधियाँ, तूफान आए
कभी न हिलता उसका ताज।।

क. आगे बढ़ने के लिए हमें किससे शिक्षा लेने के लिए कहा गया है?

....

....

ख. पर्वतराज से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

....

....

ग. 'धूप' का विलोम शब्द क्या है?

....

घ. 'खुशियाँ' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

....

3. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

आसमान में उड़ने वाली
चिड़िया को मत बाँधो तुम।
जल की प्यारी नन्हीं-सी
मछली को मत पकड़ो तुम।।
शेर-बघेरे हिरण सुनहरे,
को मत बंदी बनाओ तुम।

क. इस कविता से आपको क्या सीख मिलती है?

....

....

ख. जीवों को बंदी बनाना गलत क्यों है?

....

....

ग. 'जल' शब्द के कोई तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

....

घ. 'बंदी' का विलोम शब्द लिखिए।

....

ङ. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

....

च. 'जल' शब्द से कोई चार तुकांतक शब्द बनाइए।

....

संवाद-लेखन

पाठ योजना: 34

आज की अवधारणा

छात्रों को संवाद-लेखन के बारे में बताते हुए इसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में आपसी संवादों का प्रयोग करते ही रहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- संवाद-लेखन से क्या अभिप्राय है, इसे जानने में तथा
- संवाद-लेखन के दौरान किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए, इसे समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा प्रयोग के दौरान संवाद-लेखन की उपयोगिता से परिचित कराना।
- छात्रों के भीतर संवाद-लेखन की क्षमता का विकास करना।
- संवाद-लेखन का महत्व स्पष्ट करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर संवाद-लेखन के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करके किसी भी विषय पर संवाद लिखने की योग्यता का विकास करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को अपनी पसंद के किसी वर्तमान मुद्दे पर संवाद-लेखन करने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में संवाद संबंधी साहित्यिक पुस्तकें।
- यूट्यूब पर संवाद-लेखन की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- संवाद-लेखन संबंधी आवश्यक बातों तथा इसके उदाहरण को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'संवाद-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों के भीतर संवाद-लेखन की क्षमता का विकास करना।	• छात्रों को बताएँ कि किसी भी दी गई स्थिति पर दो या अधिक पात्रों के बीच बातचीत को संवाद में लिखना 'संवाद-लेखन' कहलाता है। • हम सभी बातचीत के दौरान संवादों का प्रयोग करते हैं। संवाद का विषय कुछ भी हो सकता है। • बातचीत को आकर्षक और प्रभावशाली बनाने में संवादों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। • उन्हें स्पष्ट करें कि संवाद मौखिक अभिव्यक्ति भी हो सकती है और लिखित भी। मौखिक संवाद में वक्ता और श्रोता दोनों आमने-सामने होते हैं इसलिए उसमें दूसरे के कथन को सुनकर संवाद बोले जाते हैं। वहीं लिखित संवाद में लेखक अपनी कल्पना से ही दो या अधिक पात्रों के संवाद लिखता है। • संवाद-लेखन के दौरान कुछ विशेष बातों पर ध्यान देना आवश्यक है, जो हैं– i) संवाद की भाषा सरल, स्पष्ट, पात्रानुकूल व भावानुकूल होनी चाहिए। ii) वाक्य रोचक व संक्षिप्त होने चाहिए। iii) संवाद घटना, परिस्थिति तथा समय के अनुकूल होने चाहिए। iv) संवादों में क्रमबद्धता होनी चाहिए। • संवाद-लेखन का कार्य प्रायः नाटकों, एकांकी, रंगमंच आदि के लिए किया जाता है। कहानियों और उपन्यासों के बीच-बीच में भी छोटे-छोटे संवादों का प्रयोग किया जाता है।

	• सभी व्यक्तियों के बातचीत का ढंग अलग-अलग होता है। उनके विचार और भाषा भी अलग-अलग होती है। इसका ध्यान रखते हुए उन्हीं की भाषा और उन्हीं के तरीके से संवाद-लेखन किया जाना चाहिए।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. बढ़ते हुए महिला अपराध के संदर्भ में दो महिलाओं के मध्य होने वाला संवाद लिखिए।

महिला (पहली) – ....

महिला (दूसरी) – ....

महिला (पहली) – ....

महिला (दूसरी) – ....

महिला (पहली) – ....

महिला (दूसरी) – ....

महिला (पहली) – ....

महिला (दूसरी) – ....

महिला (पहली) – ....

महिला (दूसरी) – ....

2. दो मित्रों के बीच वृक्षारोपण पर संवाद लेखन कीजिए।

सोमेश – ....

नीरव – ....

सोमेश – ....

नीरव – ....

सोमेश – ....

नीरव – ....

सोमेश – ....

नीरव – ....
सोमेश – ....
नीरव – ....

3. क्रिकेट मैच पर दो मित्रों के मध्य होने वाला संवाद लिखिए।

मनोज – ....
राहुल – ....
मनोज – ....
राहुल – ....
मनोज – ....
राहुल – ....
मनोज – ....
राहुल – ....
मनोज – ....
राहुल – ....

4. अध्यापिका और विद्यार्थी के बीच संवाद लिखिए।

अध्यापिका – ....
सुरेंद्र – ....
अध्यापिका – ....
सुरेंद्र – ....
अध्यापिका – ....
सुरेंद्र – ....
अध्यापिका – ....
सुरेंद्र – ....
अध्यापिका – ....
सुरेंद्र – ....

विज्ञापन-रचना　　　　पाठ योजना: 35

आज की अवधारणा

छात्रों को विज्ञापन का अर्थ बताते हुए इसके उद्देश्य से परिचित कराना। इस बात से भी अवगत कराना कि विज्ञापन बनाने के दौरान किन बातों का ध्यान रखा जाए।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र टी.वी. पर तथा अपने आस-पास के वातावरण में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से संबंधित विज्ञापन देखते रहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्रों की विज्ञापन बनाने में रुचि उत्पन्न होगी तथा वे सक्षम होंगे–

- विज्ञापन के बारे में सोचने एवं विचार करने में,
- विज्ञापन बनाते समय आवश्यक बातों को ध्यान में रखने में तथा
- विज्ञापन के दौरान प्रभावपूर्ण भाषा के प्रयोग को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को विज्ञापन के उद्देश्य से परिचित कराना।
- विज्ञापन-रचना के दौरान उसकी विशेषताओं एवं गुणों का बखान करने की जानकारी देना।
- विज्ञापन के लिखित एवं मौखिक रूप की उपयोगिताओं को समझाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर विज्ञापन-रचना के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

कक्षा में छात्रों को कोई विषय देकर उस पर विज्ञापन-रचना करने हेतु अपनी-अपनी पंक्तियाँ तैयार करके बोलने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित विज्ञापन।
- यूट्यूब पर विज्ञापन-रचना की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले विज्ञापन।
- विज्ञापन-रचना संबंधी आवश्यक बातों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'विज्ञापन-रचना' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को विज्ञापन-रचन ाके संबंध में बताना तथा प्रभावपूर्ण विज्ञापन बनाने हेतु प्रेरित करना।	• छात्रों को बताएँ कि 'विज्ञापन' दो शब्दों 'वि (विशेष) + ज्ञापन (जानकारी देना)' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—किसी के बारे में विशेष रूप से जानकारी देने वाला। • विज्ञापन का उद्देश्य अधिक-से-अधिक लोगों तक जानकारी पहुँचाना होता है। • आधुनिक समय में लोग विज्ञापन को देखकर व उससे प्रभावित होकर ही किसी वस्तु को खरीदते हैं। इससे उस वस्तु की बिक्री में वृद्धि होती है और उत्पादनकर्ता को लाभ होता है। • विज्ञापन के द्वारा ही ग्राहक यह जान पाता है कि प्रदर्शित वस्तु में क्या विशेष गुण है। विज्ञापन-रचना के दौरान कुछ बातों को ध्यान में रखना चाहिए है, जो हैं— i) जिस वस्तु का विज्ञापन बनाना हो, उसका चित्र रंगीन, स्पष्ट, बड़ा व आकर्षक हो। ii) विज्ञापित वस्तु को एक नाम दें। नाम ऐसा हो, जो लोगों को आकर्षित करें और उनकी ज़ुबान पर चढ़ जाए। iii) वस्तु की विशेषताओं के बारे में लिखना चाहिए कि वह दूसरे ब्रांड की वस्तुओं से किस प्रकार भिन्न है। iv) प्रस्तुतीकरण में नवीनता होनी चाहिए, ताकि ग्राहक उसी तरह की दूसरी चीज़ों को छोड़कर आपकी विज्ञापित वस्तु को देखें, उसके बारे में सोचें और खरीदें। v) यदि हो सके तो तुकबंदी वाली पंक्तियों का प्रयोग करें, जो सहज ही ध्यान आकर्षित कर लेती हैं।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से स्वच्छता के प्रति सचेत करते हुए विज्ञापन लिखिए।

2. अपनी साइकिल को बेचने हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

3. वॉशिंग पाउडर के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

4. घड़ी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

पत्र-लेखन

पाठ योजनाः 36

आज की अवधारणा

छात्रों को पत्र-लेखन के बारे में जानकारी देते हुए इसके प्रकारों-अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र से परिचित कराना। साथ ही इस बात से भी अवगत कराना कि एक अच्छे पत्र में कौन-सी विशेषताओं का होना आवश्यक है।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि पत्र-लेखन के माध्यम से हम अपने विचारों को अपने रिश्तेदारों तक पहुँचाते हुए उनका हाल-चाल जान सकते हैं। वहीं हम विभिन्न समस्याओं से संबंधित पत्र लिखकर उक्त अधिकारी को अपनी शिकायतें भी लिख सकते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- पत्र के प्रकारों को जानने में,
- एक अच्छे पत्र की विशेषताओं को समझने में तथा,
- विभिन्न प्रकार के पत्रों के बारे में सोचने व विचार करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को पत्र-लेखन की महत्ता तथा उपयोगिता से अवगत कराना।
- अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र के मध्य का अंतर स्पष्ट करना।
- विभिन्न विषयों से संबंधित पत्र लिखने की योग्यता का विकास करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर पत्र-लेखन के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करते हुए उन्हें अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र के मध्य के अंतर को समझने तथा इनसे संबंधित किसी भी विषय पर पत्र लिखने हेतु अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को अपने निर्देशन में पत्र के प्रारूप के अनुरूप अपने सहपाठी अथवा मित्र को पत्र लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में पत्र-लेखन संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्रों के उदाहरणों को दर्शाते वीडियो क्लिप्स।
- औपचारिक व अनौपचारिक पत्र के प्रारूप को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'पत्र-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को पत्र-लेखन के बारे में बताते हुए इसके प्रकारों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि पत्र लिखना एक कला है। पत्र के माध्यम से हम अपने मन के विचारों की अभिव्यक्ति सरलता से कर सकते हैं। • पत्र में लेखक और पाठक के मध्य आत्मीयता और सामीप्य स्थापित होता है। साथ ही हम अपनी समस्याओं के बारे में अनेक अधिकारियों को पत्र द्वारा सूचित कर सकते हैं। • पत्र व्यक्तिगत संबंधों में ही नहीं बल्कि व्यापार और व्यवसाय में भी सहायक सिद्ध होते हैं। • एक अच्छे पत्र में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए– i) पत्र की भाषा, स्पष्ट, सरल एवं सहज होनी चाहिए। ii) पत्र का संबंध सही संबोधन एवं अभिवादन से होना चाहिए। iii) पत्र में लिखने वाले का पूरा पता और दिनांक उपयुक्त स्थान पर होना चाहिए। • उन्हें बताएँ कि अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्रों का प्रारूप भिन्न होता है। अतः इन्हीं प्रारूपों के अनुरूप ही हमें अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र लिखने होते हैं। • अनौपचारिक पत्र के अंतर्गत जहाँ-पारिवारिक, व्यक्तिगत एवं निमंत्रण-पत्र आदि शामिल होते हैं, तो वहीं औपचारिक पत्र के अंतर्गत व्यावसायिक, संपादकीय, कार्यालयी पत्र आदि शामिल होते हैं।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

औपचारिक पत्र

1. **अपने मोहल्ले में नालियों के जाम होने से फैलने वाली बीमारियों से बचाव के लिए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए**

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. **आपकी कक्षा के छात्र 'विश्व पुस्तक मेला' देखने जाना चाहते हैं। प्रधानाचार्य को निवेदन करते हुए प्रार्थना-पत्र लिखिए।**

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अनौपचारिक पत्र

1. अपने छोटे भाई को पशु-पक्षियों के प्रति अच्छा व्यवहार करने की सीख देते हुए पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. मित्र को परीक्षा में सफलता पर बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. अपने छोटे भाई को कुसंगति से बचने के लिए पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अनुच्छेद-लेखन

पाठ योजनाः 37

आज की अवधारणा

छात्रों को अनुच्छेद के बारे में बताते हुए अनुच्छेद लेखन के दौरान जिन बातों को ध्यान में रखा जाता है, उनसे परिचित कराना। पाठ से अनुच्छेद-लेखन के उदाहरणों को स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को इस बात की जानकारी है कि दिए गए विषय से संबंधित सभी बातों को एक ही अनुच्छेद के अंतर्गत लिखा जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों की अनुच्छेद-लेखन के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- अनुच्छेद-लेखन क्या है, इस बात को जानने में,
- अनुच्छेद-लेखन में अपने विचारों को किस प्रकार व्यक्त किया जाए, इस बात को समझने में तथा,
- अनुच्छेद-लेखन के विषय को सोच-समझकर अपने विचार रखने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- अनुच्छेद-लेखन की उपयोगिता तथा महत्व को समझाना।
- छात्रों के भीतर अनुच्छेद-लेखन के माध्यम से अपने भावों एवं विचारों को साहित्यिक शैली में व्यक्त करने की योग्यता का विकास करना।
- निबंध तथा अनुच्छेद के मध्य के अंतर की समझ विकसित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अनुच्छेद-लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करते हुए उन्हें किसी भी विषय पर स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करने हेतु प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कोई चित्र दिखाते हुए उस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए अनुच्छेद-लेखन करने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों से संबंधित अनुच्छेद-लेखन संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर अनुच्छेद-लेखन की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- अनुच्छेद-लेखन संबंधी आवश्यक बातों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अनुच्छेद-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को अनुच्छेद-लेखन के संबंध में बताते हुए विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारी प्राप्त करने हेतु जिज्ञासु बनाना।	• छात्रों को बताएँ कि अनुच्छेद एक सुगठित वाक्य-समूह होता है, जिसमें विषय से बाहर की बात को स्थान नहीं मिलता और विषय का विस्तार भी एक बिंदु तक ही सीमित रहता है। दूसरे शब्दों में, किसी सूक्ति अथवा काव्य-पंक्ति के विषय पर सात से आठ पंक्तियाँ लिखना अनुच्छेद-लेखन कहलाता है। • कभी-कभी दैनिक अनुभव या किसी घटना को भी अनुच्छेद के रूप में लिखा जाता है। • अनुच्छेद निबंध का संक्षिप्त रूप होता है। इसमें हर वाक्य मूल विषय से जुड़ा होता है। • उन्हें बताएँ कि यदि अनुच्छेद के प्रारंभ में विषय से संबंधित सूक्ति, उदाहरण या कविता की कोई पंक्ति लिख दी जाए तो प्रभावशीलता और अधिक बढ़ जाती है। • अनुच्छेद-लेखन के दौरान कुछ बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए, जो हैं- i) ऐसे विषय का चुनाव करना चाहिए जिसके लिए आपके पास पर्याप्त सामग्री हो। ii) कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। iii) विषय के अनावश्यक विस्तार तथा पक्ष-विपक्ष से बचना चाहिए। iv) भाषा सरल व सुबोध होनी चाहिए। v) लेखन करते समय वाक्यों में तारतम्य बनी रहनी चाहिए। • छात्रों को यह भी बताएँ कि इसमें घटना या विषय से संबद्ध वर्णन संतुलित तथा स्वयं में पूर्ण होना चाहिए।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए-

क. प्रदूषण की समस्या

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ख. दैनिक जीवन के विज्ञापन

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ग. वन और हमारा पर्यावरण

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

घ. पुस्तकों का महत्व

....

....

....

ङ. आधुनिक भारत की प्रगति में बाधाएँ

निबंध-लेखन

पाठ योजना: 38

आज की अवधारणा

निबंध शब्द का अर्थ बताते हुए निबंध-लेखन के दौरान ध्यान दी जाने वाली बातों को स्पष्ट करना। साथ ही निबंध के अंगों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को इस बात की जानकारी है कि निबंध के भीतर कई अनुच्छेद शामिल होते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- निबंध-लेखन क्या है, इस बात को जानने में,
- निबंध-लेखन में अपने विचारों को किस प्रकार व्यक्त किया जाए, इस बात को समझने में तथा,
- निबंध के अंगों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- भाषा में निबंध-लेखन की उपयोगिता तथा महत्व को समझाना।
- निबंध-लेखन के अंगों को भली-भाँति समझते हुए किसी भी विषय पर निबंध लिखने हेतु अभिप्रेरित करना।
- छात्रों के भीतर अनुच्छेद-लेखन के माध्यम से अपने भावों एवं विचारों को साहित्यिक शैली में व्यक्त करने की योग्यता का विकास करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर निबंध-लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करते हुए उन्हें किसी भी विषय पर स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करने के लिए अभिप्रेरित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कोई चित्र दिखाएँ तथा उस पर अपने विचार लिखते हुए उन्हें निबंध-लेखन करने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों से संबंधित निबंधात्मक पुस्तकें।

- यूट्यूब पर निबंध-लेखन संबंधी जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- निबंध-लेखन के अंगों को स्पष्ट करता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'निबंध-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को निबंध के बारे में बताते हुए उसके अंगों से अवगत कराना।	• छात्रों को बताएँ कि 'निबंध' का अर्थ है- बँधी हुई रचना। यह अंग्रेज़ी शब्द 'म्ब्ंल' का हिंदी पर्याय है जो कि फ्रेंच भाषा का शब्द है। • निबंध-लेखन हिंदी की महत्वपूर्ण विधा है। निबंध में अपने विचारों को क्रमबद्ध, सीमित शब्दों में और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया जाता है। • उन्हें बताएँ कि निबंध-लेखन के दौरान निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए- i) निबंध के वाक्य संक्षिप्त होने चाहिए। ii) निबंध की भाषा सरल, स्पष्ट तथा विषय से संबंधित होनी चाहिए। iii) निबंध में कहीं-कहीं सूक्तियों, उदाहरणों तथा काव्य-पंक्तियों का प्रयोग होना चाहिए। • इस बात से अवगत कराएँ कि निबंध के मुख्य रूप से तीन अंग हैं-भूमिका, विषय-वस्तु तथा उपसंहार। • भूमिका या प्रस्तावना के बारे में उन्हें बताएँ कि कोई भी निबंध तभी प्रभावशाली और आकर्षक होगा, जब उसका आरंभ अच्छा होगा। इसके लिए निबंध को किसी काव्य-पंक्ति, दोहे अथवा सूक्ति से प्रारंभ किया जाना चाहिए। • निबंध का मध्य भाग उसका प्राण है। इसी में निबंध के विषय को पूर्ण रूप से प्रस्तुत करना चाहिए। • विषय को स्पष्ट करने के लिए प्रासंगिक उदाहरणों को प्रस्तुत करना चाहिए तथा दिए गए आँकड़े, तिथि एवं सत्य घटनाओं को स्थान प्राप्त होना चाहिए।

	• छात्रों को बताएँ कि निबंध का उपसंहार (अंत या निष्कर्ष) भी प्रभावी होना चाहिए क्योंकि अंत पाठक पर स्थायी प्रभाव छोड़ता है। इसके अंत को भी किसी काव्य-पंक्ति, सूक्ति अथवा दोहे से प्रभावशाली बनाया जा सकता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए-

क. नारी शिक्षा का महत्व

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

ख. मॉल संस्कृति-नई संस्कृति

....
....
....
....
....
....
....
....

....
....
....
....
....
....

ग. नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

घ. विज्ञापन की अनोखी दुनिया

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

सार-लेखन पाठ योजनाः 39

आज की अवधारणा

छात्रों को सार-लेखन के बारे में बताते हुए सार-लेखन के दौरान ध्यान रखने योग्य बातों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों ने इससे पूर्व पढ़े गए पाठ में निबंध-लेखन के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा वे जानते हैं कि निबंध-लेखन के दौरान भूमिका, विषय-वस्तु तथा उपसंहार को ध्यान में रखना चाहिए।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- सार-लेखन से क्या अभिप्राय है?
- सार-लेखन के दौरान किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों के भीतर किसी भी वाक्य, लेख, पत्र, अनुच्छेद तथा निबंध आदि का अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
- सार-लेखन के दौरान आवश्यक बातों को ध्यान में रखने हेतु प्रेरित करना।
- भाषा में सार-लेखन की उपयोगिता तथा महत्व से अवगत कराना।
- कथ्य का मूल भाव संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में सार-लेखन के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को अपनी पसंद के किसी त्योहार पर अनुच्छेद लिखने को कहें। तत्पश्चात् उसी अनुच्छेद का सार एक-तिहाई शब्दों में लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर सार-लेखन संबंधी जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- सार-लेखन के दौरान ध्यान देने संबंधी आवश्यक बिंदुओं को दर्शाता चार्ट पेपर।

- सार-लेखन के उदाहरणों को दर्शाते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'सार-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को सार-लेखन के संबंध में बताना। उनमें संक्षिप्तीकरण के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि 'सार' अर्थात् 'संक्षिप्तीकरण।' किसी गद्यांश (अनुच्छेद, लेख, घटना आदि) के मुख्य भावों या विचारों को छोड़े बिना संक्षेप में लिखना ही 'सार-लेखन' कहलाता है। • सार-लेखन के दौरान निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए- i) गद्यांश के भाव को अच्छी तरह समझने के लिए दो-तीन बार अवश्य पढ़ना चाहिए। ii) गद्यांश के मुख्य विचारों को रेखांकित कर लेना चाहिए। iii) सार अत्यंत संक्षिप्त, किंतु स्पष्ट होना चाहिए। iv) गद्यांश के मूल भाव का अर्थ ग्रहण करके उसे अपने शब्दों में लिखना चाहिए। v) गद्यांश का केंद्रीय भाव एक-दो शब्दों में चुनकर ही शीर्षक का चुनाव करना चाहिए। • कम शब्दों में अपनी बात कहने का कौशल सार-लेखन में सहायक होता है और सार-लेखन के अभ्यास से भाषागत कौशलों में वृद्धि होती है। • छात्रों को इस बात से भी परिचित कराएँ कि प्रत्येक रचना में चाहे वह गद्य हो या पद्य एक मुख्य या प्रधान भाव निहित होता है जिसे केंद्रीय भाव कहते हैं। इसी केंद्रीय भाव पर पूरी रचना आधारित होती है। यह केंद्रीय भाव ही शीर्षक का आधार होता है। इसी पर सार-लेखन भी आधारित होता है। • सार-लेखन या संक्षेपण के लिए सतत् अभ्यास की ज़रूरत होती है। अभ्यास के द्वारा ही इसके लेखन में महारत हासिल की जा सकती है। अतः छात्रों को पाठ में दिए उदाहरण स्पष्ट करते हुए उन्हें अभ्यास-कार्य करने को कहें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

सार को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. यदि संसार में कोई पदार्थ है जो मनुष्य के हिस्से में बहुत ही थोड़ा आया है और जिसका सबसे अधिक अपव्यय होता है वह है-समय। अन्य सभी कार्य तो हम सोच-समझकर करते हैं पर समय को नष्ट करने में पीछे नहीं हटते। कबीरदास जी ने कहा है-

   काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।

   पल में परलै होएगी, बहुरि करेगा कब।।

   उनका यह कथन कि कार्य को कल पर नहीं छोड़ना चाहिए, इसी बात का संकेत करता है कि समय का सदुपयोग करना चाहिए। ऐसे बहुत कम व्यक्ति होते हैं जो अपना समय आवश्यक व उपयोगी कामों में लगाते हैं। यदि हम स्वयं भी समय के सदुपयोग का हिसाब लगाएँ तो स्वयं पर लज्जित होने के अलावा हमारे पास कुछ न बचेगा।

   क. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

   ....

   ख. उपर्युक्त गद्यांश का उचित सार लिखिए।

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

2. देश-विदेश में पैर पसारता आतंकवाद आए दिन दिल दहला देने वाली घटनाओं से चौंका देता है। अमेरिका, इंग्लैंड जैसी शक्तियाँ भी इससे बच नहीं पाई हैं। आतंकवाद आज देश की स्वतंत्रता, सुरक्षा और अखंडता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। पंजाब की चिंगारियाँ अभी बुझी भी नहीं कि कश्मीर में आग के गोले बरसने लगे। असम, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु सभी ओर फैलता आतंकवाद एक घिनौना कृत्य है। आज आतंकवाद अन्याय, निरर्थक हिंसा और अपराध का पर्याय बन गया है। पूरा विश्व ही किसी-न-किसी रूप में इससे पीड़ित और चिंतित है परंतु आश्चर्य तो यह है कि आतंकवाद के विरोध में बढ़कर बोलने वाले देश ही उसे बढ़ावा देते हैं। आतंक हममें से कुछ लोगों ने मचाया है तो उसका समाधान भी हमारे पास है। इस कार्य के लिए न तो सेना चाहिए, न ही कोई दल-बल, बल्कि गौतम, गांधी, नानक, लिंकन, नेल्सन जैसे लोगों के निर्देश का पालन करना चाहिए। युवकों की मानसिकता को बदलना होगा ताकि वे मुख्यधारा से जुड़े रहें।

क. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

....

ख. उपर्युक्त गद्यांश का एक-तिहाई सार लिखिए।

....

....

....

3. सदाचार का अर्थ है-अच्छा आचरण। अच्छा आचरण वह है जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का हित हो। सत्य, अहिंसा, प्रेम, उदारता, सदाशयता आदि सदाचार के प्रमुख तत्व हैं। सदाचार का संबंध मनुष्य के मन की भावनाओं से है। जो मनुष्य मन से सत्यनिष्ठ और अच्छे विचारों वाला नहीं है, उसे सदाचारी नहीं माना जा सकता। बड़ों के प्रति आदर-प्रदर्शन करना सभी समाजों में मान्य है। वाणी में मधुरता, अतिथि सत्कार की भावना के आवश्यक अंग हैं। जो मनुष्य सदाचार के नियमों का यथासंभव पालन करता है, वही समाज में प्रतिष्ठा पाता है। सदाचारी व्यक्ति स्वयं भी सुख का अनुभव करता है तथा औरों का भी भला करता है। अतः जीवन में सदाचार का अनुसरण करना अति आवश्यक है।

क. इस गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

....

ख. उपर्युक्त गद्यांश का सार लिखिए।

....

....

....

4. आज के विज्ञान-युग में प्रदूषण की समस्या एक बड़ी चुनौती बनकर खड़ी है। उद्योगों के विस्तार के साथ-साथ प्रदूषण और अधिक बढ़ा है। धरती का वायुमंडल इतना विषैला हो गया है कि किसी भीड़ भरे चौराहे पर साँस लेने में भी दिक्कत महसूस होने लगती है। प्रकृति में जब तक संतुलन बना हुआ था, तब तक जल और वायु दोनों ही शुद्ध थे। उपयोगितावाद के हाथों प्राकृतिक साधनों का अंधाधुंध दोहन हुआ है। परिणामस्वरूप वातावरण में निरंतर प्रदूषण बढ़ा है। आज स्थिति यह है कि न केवल हवा बल्कि जल-स्रोत भी दूषित हो गए हैं। इतना ही नहीं ध्वनि-प्रदूषण के भी दुष्परिणाम सामने हैं। यदि हम अब भी नहीं सँभले तो विनाश का दानव हमें अपना ग्रास बना ही लेगा।

क. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

....

ख. उपर्युक्त गद्यांश का सार लिखिए।

....

....